श्रीः ।

# अथ विजयमुक्तावली ।

२३९
आयु ८.८.६०

जिसमें

दोहा चौपाई आदि छन्दोंमें सम्पूर्ण महाभारतका
संक्षेप अतिउत्तमतासे वर्णित है ।

जिस्को

श्रीकविकुलाग्रगण्य श्रीछत्रकविजीने विज्ञपुरुषोंके
मनोरंजनार्थ अतीवपरिश्रमसे निर्मितकिया ।

---

वही
ऐतिहासिकोंके अवलोकनार्थ-
**खेमराज श्रीकृष्णदासने**
मुम्बई.
निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानेमें
छापके प्रसिद्ध किया ।

संं० १९५३, सन् १८९६ ई०

# अथ विजयमुक्तावलीकी-

## अनुक्रमणिका।

# अनुक्रमणिका।



इति ॥

श्रीः।

अथ

# विजयमुक्तावली।

---

दोहा—विघ्नहरण तुमहौ सदा, गणपति होउ सहाइ॥ विनती करजोरे करौं, दीजे ग्रन्थ वनाइ॥ १॥ ज्यहि कीनो परपंच सव, अपनी इच्छा पाइ॥ ताको हौं वन्दन करौं, हाथ जोरि शिरनाइ॥ २॥ करुणाकर पोषत सदा, सकल सृष्टिके प्रान॥ ऐसे ईश्वरको हिये, रहै रैनि दिन ध्यान॥ ३॥ मेरे मनमें तुम वसौ, ऐसे क्यों कहिजाइ॥ ताते यह मन आपसों, लीजे क्यों न लगाइ॥ ४॥ जागुरु गिरिधर देवकी, सुन्दर दया दरेर॥ गुंग सकल पिंगल पढ़ैं, पंगु चढ़ैं गिरि मेर॥ ५॥ व्रजरक्षण भक्षण अनल, रक्षण गोधन ग्वाल॥ भुजवर करवर सुभुज पर, गिरिवर धरन गोपाल॥ ६॥ हरिदीपक मन सदन धरि, कपट कपाट उघारि॥ नशै सकल अघ कालिमा, छत्र सु देखि विचारि॥ ७॥ (दंडकछन्द) झूमि झूमि आये कोपि वासव पठाये नभ धाये दिशिदिशिनते वासव तरज पर। मेघकी मरोर महा पवन झकोर जोर नीरद निपट घोर घोषसो गरज पर॥ ऐसे लखि कृष्णने उठायो गिरि गोवर्द्धन व्रजकी सहाइ करी करकी करज पर। राखे सुरपालके कराल क्रोधते गुपाल छत्र ह्वै दयाल गोपी ग्वालकी लरज पर॥ ८॥ (सवैया) आनन एक कहै नरको चतुरानन चारिहु वेद वतावैं। जे ऋषि वृद्ध प्रसिद्धहैं सिद्ध सदा मनवांछित सिद्ध जो पावैं॥ नारद शारद जोवतहैं सनकादि शुकादि सवै गुण गावैं। वंदत ये

सब शेष सुरेश दिनेश धनेश गणेशहु ध्यावैं ॥ ९ ॥ (दोहा) जग जननी जगवंदनी, जग पावनि सुखकारि ॥ गिरा थिरा मति दीजिये, वरणौंग्रन्थ विचारि ॥ १० ॥ मथुरामंडलमें वसै, देश सदावर ग्राम ॥ ऊखल तहां प्रसिद्ध महि, क्षेत्र वटेश्वर नाम ॥ ११ ॥ ता मग जनके पग परत, अघको लेश रहैन ॥ विकट जटेसंकट तड़ित, डरत सदा शिव नैन ॥ १२ ॥ सूक्ष्मस्थूल समूल अघ, जरे जात दुख शूल ॥ फूल होत उरमें तहीं, निरखि कलिंदी कूल ॥ १३ ॥ (सवैया) चंग उपंग मृदंग कहूं सुकहूं ध्वनि शंखनकी सुनिये। कहूं ऋषि वृद्ध प्रसिद्ध कहूं कहुँ सोहत साधु महामुनिये ॥ वेदनिवेदत भेदनिसों कहुँ नृत्यत गावतहैं गुनिये । शूली वटेश्वरके क्षण वंदत देतहैं मुक्ति सदा दुनिये ॥ १४ ॥ (दोहा) सुयश सुबसता निकटही, पुर अटेर इहि नाम ॥ यज्ञ यजन होमादि व्रत, रचत धाम प्रतिधाम ॥ १५ ॥ नगर मनहुँ अमरावती, बासी विबुध समान ॥ आखंडलसो लसत तहँ, भूपति सिंहकल्यान ॥ १६ ॥ कीरति दान कृपाणकी, को वरणै विस्तार ॥ जय युत सुयश प्रताप से, छायरही दिशि चार ॥ १७ ॥ (दण्डकछन्द) बदर बदकलान वंगसो तिलंग छाई छायरही वंदरमें वारिधिके घाटलौं । माडूकर कामरू फिरंगरोही रोहतास छाईहै कमाऊं विधि वंधव कुहाटलौं ॥ गौड़वानो मारवाड़ मालवा उड़ीसा छाई छाईहै सुदेश देश देशहू विराटलौं । छाई धरा केहरी कल्यानसिंह कीरतिसो काबिल कलिंग काश्मीर करनाटलौं ॥ १८ ॥ (दोहा) श्रीवास्तव कायस्थहै, छत्रसिंह यह नाम ॥ वसत भदावर देशमें, गृह अटेर सुखधाम ॥१९ ॥ कौरव पांडवकी कथा, तिन सब सुन्यो पुरान ॥ ताते भाषा ग्रन्थके

कीनो छत्र बखान ॥ २० ॥ संवत् सत्रहसै बरप, सत वाढ़ पंचा-
स ॥ शुक्लपक्ष एकादशी, रच्यों ग्रन्थ नभमास ॥ २१ ॥ नाम
विजयमुक्तावली, हितकारि सुनै जो कोइ ॥ अष्टादशौ पुरा
णको, ताहि महाफल होइ ॥ २२ ॥ लसत हस्तिनापुर अवनि,
अमरावती समान ॥ सुरपतिसो शंतनु तहाँ, चहूं चक्रमें आ-
न ॥ २३ ॥ सायर ऋषिके शापते, शंतनु भयो नरेश ॥ भुजवर
करवर स्वर्गवर, जीतिलियो बहुदेश ॥ २४ ॥ तापर तरुणी सु-
रसरी, पतिव्रता सुखकारि ॥ प्रजा सकल आनंदसों, निशि-
बासर नर नारि ॥ २५ ॥ वचन सुरसरी यों लयो, शंतनुपै सुख पा-
इ ॥ पुत्र होतमो पूरमें, दीजो भूप वहाइ ॥ २६ ॥ जब यह विधि
करिहो नहीं, तबहि तजों यह गेह ॥ जौंलौं वचनन दृढ़ रहौ,
तौलौं तजौं न नेह ॥ २७ ॥ अष्टपुत्र नृपके भये, दीनो गंगवहाइ ॥
नवम भये गांगेय तब, भूतल जनमे आइ ॥ २८ ॥ ( दोधकछंद )
भूपति यों मनमाहिं विचारी । कौन लहै नृपता अधिकारी ॥
पुत्र भये सब गंग बहाये । मंत्री सब नृप शोधि बुलाये ॥ बात
सबै भुवभूप बखानी । मंत्र कहा करिये सुखदानी ॥ जो बर
जों गृह गंग न रैहैं । पुत्रहि राखत पूर समैहैं॥ २९॥ ( मंत्र्युवाच )
राखिय पुत्र रहै नृपताई । गंग रहै नृपके गृह जाई ॥ मंत्र सु-
नो यह भूपति भायो। सो चलिकै तियपै तब आयो॥ ३० ॥ ( श
न्तनुरुवाच ) दे सुतगंग अबै इक मोहीं । मांगतहौं हितसों
यह तोहीं ॥ लै त्रिय पुत्र तबै करदीनो । चंद्रसों आननरूपन
वीनो ॥ ३१ ॥ ( दोहा ) पतिसों कहि पूरव कथा, रही समाय
प्रवाह ॥ महादुःख नृपको भयो, चकित चित्त नरनाह ॥ ३२ ॥
( नगस्वरूपिणी छंद ) ॥ भयो नरेशको महा। सो दुःखहौं कहौं
कहा ॥ महीप देखिये इसों । निशा बिना शशी जिसों ॥ ३३ ॥

(मंत्युउवाच) न भूप शोक कीजिये। सो पुत्र देखि जीजिये॥ अनेक भांति पारिये। सो ईश तासु धारिये॥ ३४॥ (दोहा) बीते बासर जब घने, तब गांगेय कुमार॥ अस्त्र शस्त्र विद्या पढ़ी, सीखे मंत्र अपार॥ ३५॥ भूपति शंतनु एक दिन, गयो अखेटके काज॥ सघन विपिन सरिता निकट, लै प्रियलोग समाज ३६ केवट तनया शशि वदनि, योजन गंधा नाम॥ निरखि रूप मोहित भयो, विज्जुलतासी बाम॥३७॥ अति आसक्त भयो नृपति, केवट लियो बुलाइ॥ देहु मोहिं अपनी सुता, मन वच क्रम सुख पाइ॥३८॥ (केवटउवाच) तुम पृथ्वीपति भूप हौं, नीच जाति मल्लाह॥ आपहि कहौ विचारिकै, किहिविधि होइ बिवाह॥ ३९॥तौ बिवाह तुमको करौं, जो यह मांगे देहु॥ नृपता याको सुतलहै, करौ आप करि नेहु॥ ४०॥(चौ०) यह सुनि राजा मन बिलखानो। गृह तनको तब कियो पयानो॥ अब सोई हौं कहौं विचार। योजन गंधाको अवतार॥४१॥ पाराशर मुनि बन पगुधर्‍यो। तरुणी वचन प्रकट यों कर्‍यो॥किती बरष बन जैहै बीती। कहु संतानि होइ किहि रीती॥४२॥(पाराशरउवाच) (चौ०)॥ ऋतुवंती ह्वै जबही न्हाई। शुकही जै मो पास पठाई॥ ध्यान उमँगि कंद्रप ढरकाऊं। शुककर दै तुव पास पठाऊं॥ ४३॥ तुम जलमोलि कीजियो पान। इहि संयोग होइ अवधान॥ यह कहिकै मुनि विपिन सिधाये। तपहित महाविपिनमें आये॥ ४४॥ (दोहा)॥ ऋतुवंती मज्जन कियो, शुक पठयो पति पास॥ पहुँच्यो पाराशर निकट, तब हीं छाँड़ि अवास॥ ४५॥ (चौ०)॥ देखत ध्यान ऋषीश्वर धर्‍यो। मनमथि मदन तबै जल ढर्‍यो॥ धर्‍यो पत्रमें शुक कर दयो। ऋषिनी हितसों लीने गयो॥ ४६॥ आयो सरिता नि-

कट सुकीर। गिरचो मदन जल अँचवत नीर ॥ एक मीन सो कीनो पान। ताको प्रकट भयो अवधान ॥ ४७ ॥ शेष रह्यो सो तवहीं लयो । ऋषिनी पास कीर लैगयो ॥ जा विधिसों कहि गये मुनीश्वर । सो विधि कीनी त्रिय तिहि अवसर॥४८॥ (दोहा) बीते पूरण मास तब, गर्भ मुच्यो त्यहिकाल ॥ भयो पुत्र कवि छत्र कहि, उर आनंदित बाल ॥ ४९ ॥ (त्रोटकछंद) उत मीनाहिं पूरण गर्भ भयो । चलिं केवट तासु शिकार गयो ॥ लहि मीन सुगेह गयो जवहीं । निकसी तनया तेहि गर्भ तहीं ॥५०॥ चपला जनु सोहत देह धरे । रति मानहुँ अद्भुत रूप करे ॥ दिन कोटिक ताकहँ वीतिगये । कुलधर्म सबै हितके सिखये ॥ ५१ ॥ (दोहा) नाम सुता मत्स्योदरी, करति आप कुल धर्म्म ॥ पथिक उतारति आपगा, करि मलाहके कर्म्म ॥ ५२ ॥ कीनो द्वादश वर्ष तप, पाराशर मुनि आइ ॥ निरखि रूप मत्स्योदरी, गिरचो पुहुमि अकुलाइ ॥ ५३ ॥ निरखि निरखि आसक्तह्वै, कही बात मुनिराय ॥ मोहिं तोहिं मृगलोचनी, सुरति होइ सुखपाय ॥ ५४ ॥ (मत्स्योदरीउवाच) सुन्दरीछंद ॥ बात अबूझितरचो कहि आवहि ॥ क्यों कहि आप कलंक लगावहि ॥ ५५ ॥ (ऋषिरुवाच) दै रति कै लहि शाप अबै त्रिय। नाहिं रह्यो कछु धीरज मो हिय ॥ त्रास भयो सुनि ता उरमें अति । जानि न जाय कछू विधिकी गति ॥ आतुरह्वै ऋषिराज दई रति । ताहि प्रसन्न भयो सुमहामति ॥ ५६ ॥ (दोहा) तुम तनकी दुर्गन्धता, नशिजैहै सुनि बाल ॥ होइ सुगन्ध शरीरको, योजनलौं सब काल ॥ ५७ ॥ लखै न कोऊ गर्भ तुम, जाहु अनंदित धाम ॥ होइहै पुत्र प्रसिद्ध महि, तीन भुवन ज्यहि नाम ५८ ॥ (चौ०) यह कहिकै ऋषि गृहको गयो । प्रकट

गर्भ ता त्रियको भयो ॥ लखै न कोऊ ताहि अवास। लीनो जन्म महा ऋपि व्यास॥५९॥ वन उठि चल्यो जननि ऋपि- राई। अति हित वचन कह्यो सुनु माई ॥ जहँ सुधिकरै तहां चलि आऊं। तेरो कठिन कलेश मिटाऊं॥६०॥ लख्यो न काहू सो व्यहार । ज्यहि विधि लीनो ऋपि अवतार ॥ योजन गन्धा इहिविधि भई। परमरूप विधना निरमई॥ ६१ ॥ दोहा॥ ताको शंतनु देखिकैं, गृह आये नरनाथ॥ कुम्हिला- नो आनन महा, धीरज रह्यो न हाथ ॥६२॥ (गांगेयउवाच) कौन हेतु नृप मलिनहौ, कहौ पिता सो काज ॥ पाऊं आज्ञा राव कहौ सो सारौं काज ॥ ६३ ॥ (राजोवाच) जवते सुत गंगाग बीतीं वर्ष सात ॥ छिन छिन बीततु वर्ष सम, युग भरि याम वि हात ६४ ॥ (चौ०) तिय विन धर्म्म कर्म्म नाहिं होई। नाहिं न लहै बड़ाई कोई ॥ धन सम्पति लागै नाहिं नीकी। ताबि सकल वस्तुहैं फीकी॥ ६५॥ (दोहा) योजन गंधाकी नृपति सब विधि कही बखानि॥ देत नहीं अपनी सुता, करै न केव कानि॥ ६६ ॥ चलि गांगेय गये तहाँ, ता केवटकें पास॥ ह सुता भूपालको, कीनो वचन प्रकास॥ ६७ ॥ ( केवटउवाच होइ राज या पुत्रको, तौ हौ करौं विवाह ॥ मनसा वाचा क ना, वचन देहिं नरनाह॥ ६८ ॥ (चौ०) तब गांगेय वच यों कहे। तुव तनया सुत नृपता लहै॥ करौ विवाह न त्रि संग्रहौं। सत्य वचन हौं तोसों कहौं॥ ६९॥ मेटहि वचन स् नरकहि जाई। करौं सेवहौं जानैं माई ॥ साधु जानि तव य पितु मानी। आये ब्याहन नृप वरदानी॥ ७०॥ करि विवा लै त्रियहि सिधाये। तवहीं भीपम निकट बोलाये॥ तैं अ ति सुख दीनोहै मोही । हौं प्रसन्न दीनो वर तोहीं॥ ७१

(सवैया) मीच बोलाये बिना नहीं आयहै चाहे बिना मारेहै नहिं माऱ्यो । तेरे न निष्फल जाहिंगे बाण टरैगो नहीं रणका-हूको टाऱ्यो ॥ तोसों तुही सरि और नहीं उर अंतरको सब शोच निवाऱ्यो । धन्य वरी जिहि जन्म लियो भुव धन्य तु पुत्र पितापन पाऱ्यो ॥ ७२ ॥ (दोहा) सुनि शंतनुके वचन ये, भीषमजी सुखपाय ॥ मातु पिताकी भक्ति अति, करिलीनी मनलाय ॥ ७३ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्र
विरचितायां व्यासऽवतारवर्णनोनाम
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

(त्रोटकछंद) नृपशंतनुके सुत दोय भये । शुभ नाम सुचित्र विचित्र ठये ॥ गुण ज्ञान कृपान सबै सिखये । दिन सीखत कर्म्म सुधर्म्म नये ॥ १ ॥ बहु भूपतिके मन मोद भयो॥ क्षितिमें यश भूपति भूप लयो ॥ इहि भांति किते दिन बीतिगये । सब वासर आनँदमें बितये ॥ २ ॥ (दोहा) आयु भुगुति नरनाह तब 'वास लयो हरिलोक ॥ पुत्र कलत्र कुटुंब को, उर बाढ्यो बहु शोक॥३॥सुरसरि सुत समझाय सब, क्रिया कर्म सब कीन्ह ॥ जेठे सुत तब चित्रको, राज्यभार शिर दीन्ह ॥ ४ ॥ बहु ऋषिराजन बोलिकै, कऱ्यो राजअभिषेक ॥ सब परिवार प्रजानको, आनँद बढ्यो अनेक ॥ ५ ॥ )सोरठा) काशिराजके गेह, हुतीं सुता दुइ इन्दुमुखि ॥ इक अंबा अंबेह, मृगनयनी चंपक वरणि ॥ ६ ॥ (दोहा) अंबा दीन्ही चित्रको, करि विवाहको चार ॥ अरु अंबेह विचित्र गृह, भई सकल सुखसार ॥ ७ ॥ (सोरठा) बाढ्यो गर्व अपार, अपनी नृप संपति निरखि ॥ सकल सहज भंडार, वरणि कहांलौ कवि कहै ॥ ८॥

॥ चौ० ॥ निशि दिन राजनीति विसराई । रचे कुकर्मनिके सब भाई ॥ कुलको सकल धर्म नशिगयो । बहु संदेह मात उरभयो ॥ ९ ॥ जान्यो जवहिं राजको नाश । योननगंधा सुमिरै व्यास ॥ आइगये तवहीं ऋषिराई । धाइ जननिके वन्दे पाई ॥ १० ॥ ( योजनगंधाउवाच ) यद्यपि मोसुत पायो राज । करै न राजनीतिके काज ॥ ऐसो कछु कीजै उपदेश । राजनीति मत चलै नरेश ॥११॥ ( व्यासउवाच ) दोहा ॥ सुनु माता तोसों कहौं, राजनीति समुझाय ॥ सो शिष दीजै सुतनको, सुयश रहै घर छाय ॥ १२ ॥ दिनप्रति व्यास कहैं कथा, राजनीति सब धर्म ॥ चित्र नृपति यह बात सुनि, मनमें वस्यो कुकर्म ॥१३॥ को यह द्विज माता निकट, बैठत निशिदिन आइ ॥ ताको हतन विचारिकै, गुप्त भयो तहँ जाइ ॥ १४ ॥ ( गीतिकाछंद ) आयकै ऋषिव्यास माता निकट बैठि कथा कहै । सुनत पाराशर सुता सुत वचन दीरघ दुख दहै ॥ माय कहि कहि राजनीतिहि सकल विधिसों उच्चरै । पुत्र काहि बूझै जननि इहि भांति श्रवण कथा करै ॥ १५ ॥ अर्द्धनिशि बीती जहाँ ऋषिव्यास पग गृहको धर्‍यो । निरखि यह विधि चित्र नृप तब वचन तिनसों उच्चर्‍यो॥ हे महाऋषिराय तुम सब भांति बुद्धि प्रवीनहो । लोककी परलोककी सब वेदविधिसों लीनहो ॥१६ ॥ भयो मनसा पाप जा कहँ सो कहो क्यों उद्धरै । देहु बुद्धिनिधान शिक्षा काज कैसैं सरै ॥ व्यास साध अगाध मति तव वचन तिनसों भाखियो । कहौं तोसों विधि सबै मनमाहिं हितकरि राखियो ॥ १७ ॥ दोहा ॥ चलदल द्रुमको खंडिकै, तामें अग्नि प्रजारि ॥ धूम घूटि प्राणन तजै, सब अघ डारै वारि ॥ १८ ॥ सीखलई सोपै सोई, सोई कियो उपाय॥धूमघूटि तिहि भांतिही, गये देवपुर राय ॥१९॥

( त्रोटकछंद ) यहि भांति नरेश विलोकि तबै । बहुदीन-भये नर नारि सबै ॥ तब मात महा उर दुःख भयो । उड़ि मानहुँ भीषम प्राण गयो ॥ २० ॥ तब भूपति भूमि विचित्र कर्‌यो । विधिसों शिरऊपर छत्र धर्‌यो ॥ वरणों नृपके सब कर्म्म कहा । सुअखेटक सोहित आहि महा ॥ २१ ॥ यक द्योस गयो अतिही वनमें । भय नाहिं कछू नृपके मनमें ॥ उठि सिंह तहां नरनाह हयो । प्रियलोगनिके अति दुःख भयो ॥ २२ ॥ ( दोहा ) सब साथिन पुरमें कही, वनमें बीती बात ॥ शोकयुक्त माता भई, अतिं भीषम पछितात ॥ २३ ॥ तबहीं माता चित्रकी, सुत हित बहु दुख पाय ॥ हितकै अरु अति मोहकै, भीषम लये बुलाय ॥ २४ ॥ ( रानीउवाच ) ॥ ( चौ० ) नृपबिन पुरवासिनके शंका । ज्यों दशशिर बिन सूनी लंका ॥ अब स्वइ काज करौ जगदीश । राजभार सुत तेरे शीश २५ प्रजापालिये सुत ज्यों मात । राखौ राज जो बूड़ेउ जात ॥ नाम नृपति शंतनुको रहै । भीषमसों यों माता कहै २६ ( भीष्मउवाच ) माता सत्य हियेमें राखौ । सत्यहि छांडि असत्य न भाखौ ॥ नृपता करौं न तरुणी करौं । तुव सेवा निशिदिन उर धरौं ॥ २७ ॥ ( रानीउवाच ) ॥ दोहा ॥ भयोराज संदेह उर, कीजै कहा उपाय ॥ प्रकटी भीषमसों कथा, लज्जा युत अकुलाय ॥ २८ ॥ पाराशर संयोगते, भये व्यास अवतार ॥ वरणि सुनायो भीषमहिं, विधिसों सब व्यवहार ॥ २९ ॥ जन्मत काननको गयो, व्यास महाऋषिराय ॥ ताही क्षण मोसन कह्यो वचन परमसुख पाय ॥ ३० ॥ जहां कछू संकट परै, कष्ट होइ कछु आय ॥ सुमिरतही तहँ प्रकटहै, डारों सकल नशाय ॥ ३१॥ ( सुन्दरीछंद ) भीषम यों सुनि सुःख भयो मन । बैन कहेउ हि-

तवन्त ततक्षन ॥ मातु वुलावहु ता ऋपिराजहि। दुःख दहै सव
कारज साजहि ॥ ३२ ॥ भीपमको अनुराग रहेउ चित। व्यास
तहां सुमिरे करिकै हित ॥ शोभित आप कियो ऋपिसों वल। ज-
टा कसे कर दण्ड कमण्डल ॥ ३३ ॥ वंदतुहैं पग मातु महामति।
भीपमके उर सुःख भयो अति ॥ वात विचारि कही सगरी गुनि।
राज चलै क्यहि भांति महामुनि ॥ ३४ ॥ (श्रीव्यासउवाच)
(चौ०) एक उपाय करो जो माई। तौ संतान प्रगट होआई॥ चि-
त्र विचित्र नृपतिकी नारी। होइँ नग्न सव वस्तर डारी ॥ ३५ ॥
मो आगे आवें तजि लाज। देहुँ अशीश होइ सव काज ॥ हौं त-
पसी नाहिं चित्त विकार। ताते जिनि कछु करो विचार ॥ ३६ ॥
रानी गई महलमें धाय। पुत्रवधुनसों विनयो जाय ॥ उन सुनि
वात अचंभव कियो। कैसोहै माता तव हियो ॥ ३७ ॥ (दोहा)
इहिविधि आगे जेठके, काढ़ै कुल की वाल ॥ ऐसी कौन निलज्ज
त्रिय, करै जु कर्म कराल ॥ ३८ ॥ (चौ०) रानी काहि समुझाई
वाला। भई नग्न वह ताही काला ॥ चहुँधा केश देहपर ढारी।
नैन मूँदिकै अवानारी ॥ ३९ ॥ आई सो सामुहे ऋषीश।
हूवे प्रसन्न ऋपि दई अशीश ॥ यहि विधिके ऋपि वोले वैन। होइ
अंधसुत लहै न नैन॥ ४० ॥ फिरि रानी अंवे पै जाई। लै आई
ताको समुझाई ॥ तिनहूं बसन दिये सव डारी। अंग मृत्तिका लाई
नारि ॥ ४१ ॥( व्यासउवाच )॥ (दोहा) पांडुपुत्र या गर्भते,
हूवैहै वहु सुखकार॥मृतिका लाई अंगइनि, भेद कह्यो निरधार४२
वांछित फल मातहि दयो, गेह गयो ऋपिराइ ॥ चित्र विचि-
त्र त्रियानके, गर्भ भये सुखदाइ ४३ ॥ (सुंदरीछंद) पूरण
मास भयो तिनके जव। मातनिके उर सुक्ख वढ़्यो तव ॥ अंध
भये सुत चित्रकि नारिहि। पांडु विचित्र वधू सुखकारिहि ॥४४॥

तापरहू निशि दुंदुभि बाजत । ध्वनि सुनिकै मघवा ज-
नु लाजत ॥ मंगलचार सखी सब गावहिं । भांतिन भांति अ-
नन्द बढ़ावहिं ॥ ४५ ॥ भीपम कर्म्म विचार किये सब । दीन
गुणी कहँ दान दिये तब ॥ बीतिगये यहि भांति कछू दिन । बा-
ढ़त आनँदहै छिनहू छिन ॥ ४६ ॥ भाट तहां विरदावलि गाव-
त । वारन अश्व समूहन पावत ॥ पण्डित आय तहां गुण-
सागर । नृत्यतहैं बहुधा नटनागर ॥ प्रमुदित नगर नारि
नर भारी । सुखभुज तनानि सकल सुखकारी ॥ ४७ ॥ (दोहा)
को वरणै आनन्दको, सुक्ख समूह विलास ॥ जवहीं फिरि सु-
मिरे जननि, आयगये ऋषि व्यास ॥ ४८ ॥ (योजनगन्धाउवाच)
तुम प्रसादते पुत्रद्वै, प्रकट भये यहि गेह ॥ आशिष देहु उ-
दार है, मो मांगे सुत देह ॥ ४९ ॥ (श्रीव्यासउवाच) वि
ना वसन यहि भांतिही, आवै मो तट बाल ॥ आशिष देहुँ उदा-
रहै, ताको तेही काल ॥ ५० ॥ आनी दासी नग्न करि, योजनग-
न्धामाइ ॥ करति कटाक्ष न लाज उर, मन्द मन्द मुसकाइ ॥
॥ ५१ ॥ (चौपाई) काशिराजकी सुता नहोई । यह माता दा-
सीहि कोई ॥ याके गर्भ होय सुत एक । विष्णुभक्त अरु ज्ञान अ-
नेक ॥ ५२ ॥ दै आशिप तवहीं ऋषि गयो । प्रकट गर्भ दासी
के भयो ॥ पुत्र स्वरूप तबै अवतर्‍यो । नाम विदुर ऋषि यों उ
चर्‍यो ॥ ५३ ॥ तीनो शिशु खेलैं इकसंग । लखि सुख उपजत मा-
तनि अंग ॥ लरैं भिरैं खेलैं यहि रीती । केते वर्ष दिवस गे बीती ॥
॥ ५४ ॥ (सो०) भीपम सकल समाज, बोले बुधजन ज्योतिपी॥ द-
यो अन्धको राज, तिलक शीश शिर छत्र धरि ॥ ५५ ॥ (दोहा) रा-
जनीति मारगु थप्यो, भीपम बुद्धिनिधान ॥ सुवस वास चारों व-
रण, आप धर्म्मयुत ज्ञान ॥ ५६ ॥ विजय करनको तव सज्यो, भी-

षम दल चतुरंग ॥ जीते अरि पुर जायकै, लखि सुख उपज्यो
अंग ॥ ५७ ॥ (चौपाई) एक नृपतिपै लीनो दण्ड । पा-
टननगर जीति बहु खण्ड ॥ एक नृपति अपने कर थापै । ब-
हुत नरेश महाभय कांपै ॥ ५८ ॥ (दोहा) भीषम करिकै दि-
ग्विजय, आये अपने गेह ॥ पांडु अंध धृतराष्ट्रसों, दिन दि-
न बढ्यो सनेह ॥ ५९ ॥ (चौपाई) अंधरायकी चलै दोहाई ।
सब विधि करै पांडु नृपताई ॥ यहि विधि सुख बीते बहु काला ।
रहत यथाक्रम तहँ भूपाला ॥ ६० ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्र
विरचितायांधृतराष्ट्रपांडुविदुरजन्मवर्णन
नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

---

(दोहा) सुबस भूमि कनवजपुरी, चारि वर्णकी भीर ॥
गंधरवराय महीप तहँ, परमशील गम्भीर ॥ १ ॥ (सोरठा)
सुरपति गंधरवराज, अमरपुरी कनवजनगर ॥ पुरजन बिबुध
समाज, दूजो सरि दीजै कहा ॥ २ ॥ (दोहा) ताके दुहि-
ता शशिमुखी, गंधारी यह नाम ॥ शची किधौंहै इंदिरा,
कै मनसिजकी बाम ॥ ३ ॥ अन्धरायको थापिकै, दीनी लग-
न पठाय ॥ कारि विवाहको चारु सब, मंगलचार कराय ॥४॥
पुनि भीषम आनन्दयुत, आये साजि बरात ॥ अंधराय दूलह
बने, सुख समूह सरसात ॥ ५ ॥ बिन लोचनको पति सुन्यो, गंधा-
री दुख पाय ॥ सखी आपनीसों कही, यह सब विधि समुझा
य ॥ ६ ॥ को मेटै विधिको लिख्यो; पायो पति बिननैन ॥ सोई प्र-
भुहैं प्राणपति, सत्य कहौं सुनु बैन ॥ ७ ॥ (चौपाई) तबहीं
यों गन्धारी कहै । परम पतिव्रत मो उर रहै ॥ कैसी तरुणी वै

जगमाहीं । पतिके दुःख आप दुख नाहीं ॥ ८ ॥ गुरुदेवता आप पति जानैं । ताकी आज्ञा निशिदिन मानैं ॥ पग न देहिं पति शासन भंग । रचैं पतिव्रतके जो रंग ॥ ९ ॥ शुभ गति तिनकी करता करै । तव गन्धारी यों अनुसरै॥अन्धराय पतिके दृग हैन। लै पट्टी तिन बांधे नैन ॥ १० ॥ (दोहा) जो विधि दोऊ कुलनकी, व्याह भयो तिहि रीति ॥ कन्यादै दासी दई, भूषण वसन समीति ॥ ११ ॥ (नाराचछन्द) मतंग औ तुरंग शूर साजि साजि साजियो । अनेक भांति दायजो अशेष वस्तुको दियो ॥ श्याम श्वेत नील पीत आसने विछावने । दये सुवर्ण मालमुक्त राजते घनेघने ॥ १२ ॥ विवाहकै नरेश आप गेहको सिधारियो । दरिद्र हीन दीनके सबै नशाइ डारियो॥गीतनादि ठौर ठौर सुक्खसों घने घने । उपंग चंग दुंदुभीनि भेरि वृन्दको गने ॥ १३ ॥ (दोहा) कही नृपति धृतराष्ट्र यह, भीषमसों समुझाइ ॥ करो पांडुको व्याह अब, उत्तम ठौर सुधाइ ॥ १४ ॥ (भीष्मउवाच) नगर निरखि नावलि वनी, माधि नायक कुतवार ॥ कुंतलराज वखानिये, तहां भूमि भरतार ॥ १५ ॥ शूरसेन नृपकी सुता, हितकै आनी गेह ॥ जन्मकालके कर्म सब, कीने सहित सनेह ॥ १६ ॥ नाम धरचो कुन्ती तहां, सकल बुधीश बुलाय । दिन दिन दुहिता इन्दुमुखि, अति द्युतिसों सरसाय ॥ १७ ॥ द्वादश वीते वर्ष तव, करि कुन्ती चित ज्ञान ॥ सेयो ऋषि दुर्वास तव, मन क्रम वचन सुजान ॥ १८ ॥ (तोटकछन्द) ऋषिराज प्रसन्न भये जवहीं । अति निश्छल ध्यान धरचो तवहीं ॥ सिखयो आकर्षण मंत्र तवै । हितकै तिहि सीखि लये सुसवै ॥ १९ ॥ (दोहा) सूरजको इक धर्मको, तीजो पवन वखान॥ चौथे सिखयो इंद्रको, सव गुण ज्ञाननिधान ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ पंचम तहँ अश्विनीकुमारा ।

दीनों ऋषिसो परमउदारा ॥ जाको मंत्र जपौ सुखपाई। सोई देव प्रकट ह्वै आई ॥ २१ ॥ (तोटकछंद) उन सूरजमंत्र जप्यो ज-वहीं। प्रकटे सविता वर आइ तहीं ॥ सकुची डरपी अति भीति पगै। नरमो जग मोंहि कलंक लगै ॥ २२ ॥ (सूर्य्यउवाच) वि-नयो जव तैं वहु जाप करयो। अति भक्ति करी पग भूमि धरयो॥ तव दृष्टि सँयोग अधान रह्यो। त्रियसों तवहीं यह वैन कह्यो ॥ २३ ॥ सुत होय वली तुव गर्भ महा। वहुधा वर्णौं गुण तासु कहां ॥ प्रकटे तन वर्म अभेद धरै। धर वारिधिलौं अति कीर्त्ति करै ॥ २४ ॥ (चौपाई) लखै न कोऊ तुव अवधातु। यों कहि वैन सिधाये भातु ॥ आई कुंती अपने गेह। धाय बुलाई परम सनेह ॥ २५ ॥ रविको रमिवो सव विधि कह्यो। तव उन मरम सकल विधि लह्यो ॥ जव दशमास गये तहँ वीती। कही धा-यसों तव यह रीती ॥ २६ ॥ आजु मुचैगो मन अवधातु। ह्वै है पुत्र कहि गये भातु ॥ लाउ मँजूपा तुरत गढ़ाय। तामें सु-त धरि देहुँ बहाय ॥ २७ ॥ (दोहा) आन्यो धाय मँजूप तव करि मनमाहिं विचार ॥ अर्द्धनिशा वीती जवहिं, लयो पुत्र अवतार ॥ २८ ॥ पहिरे कवच अभेद तनु, कुण्डल झलकत का-न ॥ सो कुमार भनि चन्द्रसों, षोड़श कलानिधान ॥ २९ ॥ धरि-मँजूपमें धाय तव, दीने सहित वहाय ॥ दृष्टि पर्‍यो श्रुतिधारकी हितकरि लियो उठाय ॥ ३० ॥ नाराचछन्द ॥ लसै महास्वरूप पुत्र सूरसो उदय कियो। गयो सुभौन आपने हुलाससों महा-हियो ॥ दयो त्रियाहि जातकर्म आदिकर्म ते करे। अनन्द भौ महावनो अशेष दुःख ते टरे ॥ ३१ ॥ धर्‍यो विचारि नाम कर्ण पुत्र यों सिखावही। नित्य नित्य अंग २ में सुज्योति आवही ॥ भयो प्रवीण अस्त्र शस्त्र सीखनो हिये धरे। सहस्रवाहु जीतिये

गयो विचारि यों करे ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ आराधे तब कमलपद, परशुरामके जाय ॥ द्विज सुत ह्वै विद्या पढ़ी, मन वच क्रम चितलाय ॥३३॥ यहि विधि वहु बिद्या पढ़ी, सिखदे सो ऋषिराज ॥ अस्त्र शस्त्र सीखे तहां, करण तजे सुखराज ॥ ३४ ॥ परशुराम ऋषिराज तब, आलससों अलसाइ ॥ कर्ण जंघ पर शीश धरि, सोय रहे सुखपाइ ॥ ३५ ॥ (चोपाई) कीटरूप नारायण आये। भृगुनन्दन तहँ सोवत पाये॥करणजंघ तर पहुँचे जाई। काटत रहे रुधिर धर छाई ॥ ३६ ॥ त्वचाकाटि वहु आमिष फोऱ्यो। कर्ण सुभट अँग नेकु न मोऱ्यो ॥ सोवत ते तब भृगुपतिजागे। देखि रुधिर तब पूछनलागे ॥ ३७ ॥ (परशुरामउवाच) सुत यह रुधिर कहाँ ते आयो। तब रविनंदन भेद वतायो जान्यो कर्ण विप्र नहिं होई। यह क्षत्री बालक है कोई ॥ ३८ ॥ (दोहा) यद्यपि क्षत्री वंशसों, है विरोध अति मोहिं। कपटरूप विद्या पढ़ी, अंत फुरो नहिं तोहिं॥३९॥ओढ़ि शाप आये सदन, रविनंदन अकुलाय ॥ उत कुंती गृहको गई, तनुके चिह्न मिटाय॥ ॥ ४० ॥ तवही कुंती रायपै, नेगी दये पठाय ॥ भीषम इतनी कथा कहि, सबनि सुनी सुख पाय ॥ ४१ ॥ (सोरठा) कुंतल नृप पै जाय, कही बात, समुझाय सब॥तब भूपति सुख पाय, पठये नेगी लगन दै ॥ ४२ ॥ सुनत सुखद यह बात, शुभ घटिका लीन्ही लगन ॥ भीषम सजी बरात, हय गयंद परिवहु घने ॥ ४३ ॥ (भुजंगप्रयातछंद) चले मत्तमातंग ऐसे विराजैं। मनो श्याम भारे महामेघ गाजैं ॥ चले तेजसों तेज ताते तुरंगा। मनो लेत भाजे कुरंगी कुरंगा ॥ ४४ ॥ चले वाजि साजे रथी शूर सेना। चले वीर वंका कहूँ शंक हैना ॥ चले दुंदुभी आदिदै सर्व वाजे चले नृत्यकारी मृदंगी विराजे ॥ ४५ ॥ (दोहा) नियराने

कुंतलनगर, अद्भुत गई बरात ॥ निरखि सकल विधि न-
गरके, आनँद उर न समात ॥ ४६ ॥ दुहूं कुलीनकी रीति जो,
तिहिविधि कियो विवाह ॥ दै कन्या बहु धन दयो, सम दे सब
नरनाह ॥ ४७ ॥ करि विवाह नृप पांडुको, भूपम पहुँचे धाम।
भये शकुन पैठत नगर, होय सकल मन काम ॥ ४८ ॥
( दंडकछंद ) शकुनको सो सार देख्यो दाहिनो कुरंग दौर भारद
मयूर चारु दर्शन देखायोहै। दाहिनोई जंबुक उलूक श्वानदाहि-
नोई नील दनव्रात शुभ शकुन जनायो है ॥ दाहिनोई
शब्द खर शूकर भयो दाहिनोई उज्ज्वल वसन लैकै रजक घर आ
योहै। अन्न पकवान दूब मृत्तिका सुगंध पान फूलनकी मालके
विलोकि सुख पायोहै॥४९॥( चौपाई ) कुन्ती गृह भीतर पगुधारी
देखन मुख आई गन्धारी॥सब गुण शुभ लक्षण लखि नैना।मनमें
बिलखी कहै न वैना ॥ ५० ॥ बूझी सब गुणकी विधि सबै। सकल
शकुनिया वर्णत तबै ॥ पैठत नगर शकुन शुभ भये। नितानित
आनँद देखें नये॥५१॥( दोहा ) धर्मधुरन्धर होय सुत, कुंती गर्भ
प्रवीन॥एक छत्र महि भोगवे, करि समूह अरि हीन।५२।(त्रिभंगीछंद)
सज्जन मनरंजै दुर्जन गंजै भंजै जग दारिद्रघने। सत्य कहै मुख
सत्य लहै सुख दुःख दहै कविछत्र भने॥ धर्मनि धारै असुरन
मारै जारै रोग किते जगके। भारी भय मानै निर्भय ठानै जानै
गुण यशके मगके ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ झुकि गन्धारी शकुनिया
दीनी तुरत निकारि ॥ लोभग्रासित लोभी कहै, बात न एक विचा-
रि ॥ ५४ ॥ बढ्यो पांडुनृप तरुणिसों, दिन दिन प्रेम अपार ॥
क्रीड़ा निशिवासर रची, सुयश सकल संसार ॥५५॥ दूजो कर्‌यो
विवाह तब, आनी तरुणी धाम ॥ नाम माद्रीलसत सो, विज्जुल-
तासी वाम ॥ ५६ ॥ गयो विपिनको पांडुनृप, आखेटकके काज॥

तहां हते तपयुक्त द्विज, ऋषिनी अरु ऋषिराज ॥ ५७ ॥ तवहीं मन मन्मथ मथ्यो, कामातुर ऋषिराय ॥ रति मांगी त्रियपै तहां, अङ्गअङ्ग अकुलाय ॥ ५८ ॥ (ऋषिनीउवाच) पति राति निशिमें उचित है, वासर युक्ति न आहि॥किती विनय तरुणी करी, धीरज होइ न ताहि ॥ ५९ ॥ (ऋषिरुवाच । चौपाई) पशु पक्षी दिनमें रति करैं। हम तुम रूप मृगनिको धरैं ॥ ऋषिनी मृगी आप मृग भयो । या विधि त्रियसों रतिरस ठयो ॥ ६० ताक्षण पांडु आय तहँ गयो । विषम वाणसों ऋषिमृग हयो ॥ लागत बाण भयो संताप। प्राण तजत तहँ दीनो शाप ॥ ६१ ॥ (दोहा) जेहि विधि छोड़ी देहमैं, लागत विषम सुवाण ॥ यहि विधि त्रियसों राति करत, जैहैं तेरे प्राण ॥ ६२ ॥ ओढ़ि शाप ऋषिराजकों, गृह आयो दुखपाय ॥ महामलिन निशिके समय, पौढ्यो शय्या जाय ॥६३॥ तब कुंती नृपपै गई, करि षोड़श शृंगार ॥ मिस करि नृप सोवत लख्यो, अर्द्धनिशा सुखकार ॥६४॥ करत सेव पतिकी त्रिया, और पलोटति पांय॥अंग अंग दुखसों दह्यो,उत्तर देहिं न राय॥६५॥ बड़ी बेर जाग्यो नृपति, कुंती अति सुख पाय ॥ रति मांगी त्रिय लाज तजि, कामातुर अकुलाय ॥ ६६ ॥ विष को इपसो उर लग्यो, सुनत त्रियाकी बात ॥ वचननिही नाशी निशा, जौलौं भयो प्रभात ॥ ६७ ॥ (तोटकछंद) उठि वाहर पांडु महीप गयो । न सुहाइ कछू बहु दुःख भयो ॥ गज वाजि सबै सँग साजि तहां । चलिकै पहुँचे वन घोर जहां ॥ ६८ ॥ (सवैया) देखि तहां वनतालके जाल तमाल विशालनि कौन गनै । चंदन चम्पक अंब कदंब सदा फल श्रीफल बेल घनै ॥ केवरो केतकी औ करना कुलि कुन्द नेवारिन को वरनै । वेला चमेली जुही बहु कुंजनि पुंजनि पुंजनि मोंहि मनै ॥६९॥ (दोहा) सुबस वसायो इंदु पथ, काननमें त्यहि ठौर ॥

रह्यो विरमि नृप पांडु तहँ, भूपतिको शिरमौर ॥ ७० ॥

इति श्रीमहाभारतेराजापांडुवनवासवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥३॥

---

(दोहा) तव कुन्ती मन दुखित ह्वै,चली पांडुनृप पास ॥ गृह रक्षाको छत्र कहि,राखे दासी दास॥१॥पहुँची भूपतिके निकट,नगर इन्द्रपथ मांह ॥ रहत सुचैने लोग सव, पांडु नृपतिकी छांह ॥२॥ (चौपाई) जानी तरुणी आवति जवहीं । शोक भयो भूपति उर तवहीं ॥ निशि सून्यो नृप सेज सँवारी । इंदुवदनि त्रिय तहँ पगु धारी ॥३॥पतिको मन त्रिय लहै न सोई।वहु संदेह तासु उर होई ॥ तजि लज्जा यों वोली वैन । सुनहु प्राणपति वहु सुखदैन॥४॥ (कुन्त्युवाच) काहे रचत न हमसों मोह । यह लखि मो उर वाढ़त छोह॥तुमसों कहौं वचन तजिलाज।क्यों न रचत रति सुतके काज। सुखद वचन रानी यों सुनै।दुख करि राजा मनमें गुनै॥५॥(दोहा)वज्र तुल्य उरमें लगी, तरुणीकी यह वात॥वरणी काननकी कथा, विकल देह अकुलात ॥६॥ (पांडुउवाच । सोरठा) मृगनयननिके रूप, ऋषिनी ऋपि रति रचतमें ॥ हयो कह्यो यों भूप, द्विजके उर शर मध्यमें॥७॥ (दोहा) दयो शाप ऋषि यों कह्यो,ज्यों छांड़े में प्रान ॥ त्यों तरुणी संयोगते, मरण आपनो जान ॥ ८ ॥ यों सुनि त्रिय लरखरि गिरी, तनुकी नहीं सँभार ॥ सुधि आई बोली तवै, यहि विधि वारम्वार ॥ ९ ॥ (दंडकछन्द) ॥ किधौं हेम हरयो अपमान कर्‌यो विप्रनको किधौं धन धर्‌यो जाको ताही मैं न दीनोहै । किधौं मैं विछोये कहूं तरुणीको प्राणपति किधौं निन्दानिगमके गुरूको दोप लीनोहै ॥ होममैं बुझायो तृण चरत विडारि धेनु झूंठी साखि बोलिके वचन महा दीनोहै । कुन्तीके विलाप कहै दीनो ऋपि शाप जाको अंग अंग ताप ऐसो कौन पाप कीनोहै ॥ १० ॥ (राजोवाच । दोहा) होनहार सोइ ह्वैरहै, नहीं सुमेटी जाय ॥ सावधा-

नके वचन कहि, राखी त्रिय समुझाय ॥ ११ ॥ यहि विधि बीते दिन घने, चिन्ता करी भुवार ॥ किहिंविधि उपजै वंश गृह, होइ सकल सुखसार ॥ १२ ॥ ( कुन्त्युवाच ) देव अकर्षण मंत्र मोहिं, दीने ऋषि दुर्वास ॥ तुम आयसु लै जो भजौं, सो आवै मो पास ॥ १३ ॥ धर्म्म जपन पति तव कह्यो, तरुणीसों सुख पाइ ॥ आज्ञालै सुमिरन कियो, सो पहुँच्यो ढिग आइ ॥ १४ ॥ आयो दृष्टि संयोग तब, सूने महल मँझार ॥ धर्म्म अशीश दई वनी, इहि विधि बारम्बार ॥ १५ ॥ ( धर्म्मउवाच । चौपाई ) तेरे गर्भ होय सुत ऐसो । षोड़श कला चन्द्रहै जैसो ॥ धर्म्म धुरन्धर धर्म्महिं जानै । दत्त मत्तके सब मग ठानै ॥ १६ ॥ भूमि भोग वै यक छत्त राज । सब विधि सारै जगके काज ॥ यह कहि धर्म्म गयो सुरलोक । गर्भ धर्‌यो त्रिय नाशै शोक ॥ १७ ॥ दशयें मास पुत्र अवतर्‌यो । मनो अतनु तनु भूमें धर्‌यो ॥ जैजै शब्द अकाशहि भयो । धर्म्म जन्म महिमण्डल धर्‌यो ॥ १८ ॥ ( दोहा ) निशिदिन नारी नर सबै, गावहिं मंगलचार ॥ होत वधाई छत्र कहि, नृपति पाण्डु दरवार ॥१९॥ तव बूझे नृप ज्योतिषी, कहिये लगन विचार ॥ कौन मुहूरत सुत भयो, सो वर्णो विस्तार ॥ २० ॥ ( ज्योतिषीउवाच ) शुभ दिन शुभ घटिका भयो, भाग्यवन्त बहु होय ॥ एक छत्र महि भोगवै, अरि कहुँ बचै नकोय ॥ २१ ॥ ( दण्डकछन्द ) सज्जन हुलासकार दुर्जनको नाशकार मित्रन विलासकार पृथ्वीको शृंगारहै । मित्रको विश्वासकार पाटनि विलासकार भिक्षुक अवासकार भूमि भरतारहै ॥ जग जाको आशकार शत्रुको बिनाशकार दीननको यशकार रतन भँडारहै । पुण्यको प्रकाशकार पापनको नाशकार नृपताको भाशकार धर्म अवतारहै ॥ २२ ॥ ( दोहा ) उपज्यो पूरण भाग्यते, तुम गृह सुत

बलखण्ड ॥ उन्नत सकल अधीनके, देह अदण्ड निदण्ड ॥ २३ ॥ यहि सुख दिन बीते किते, नृपति पाण्डु यक काल ॥ कही बोलि रानी तबै, देव अकर्षण बाल ॥ २४ ॥ जाप्रसाद सुत दूसरो, प्रकट होय मम गेह ॥ सो आयसु अब उर धरौ, भूपति कह्यो सनेह॥ ॥ २५ ॥ जप्यो मंत्र बोल्यो पवन, अंतःपुर यक धाम ॥ तहां भयो संयोग तब, गर्भ धरचो हठि वाम ॥ २६ ॥ ( सुन्दरीछन्द ) पूरण मास भयो प्रकट्यो सुत । कामस्वरूप सुशोभित संयुत ॥ अन्ध तिया यह बात सबै सुनि । व्यास भजे तिहि बार महामुनि२७ आयगये ऋषिराज तहां तब।जो प्रिय बैन कहे तिनसों सब॥सो वर दै ऋषिराज महामति । सोइ करौ प्रकटै सुत या गति ॥ २८ ॥ ( व्यासउवाच ) ( दोहा ) शिशन धुनि सुनि बात यह, देखु पराये ऐन ॥ आपु कियो सों पाइये, कहे व्यास यह बैन ॥ २९ ॥ दीन्ही हर्षि अशीश तब, व्यास महा ऋषिराय ॥ गन्धारीको गर्भ तब, प्रकट भयो तहँ आय ॥ ३० ॥ जहां शैलके शिखर पर, कुटी ऋषिनको धाम ॥ कुन्ती लहि भीमहि गई, कीने अमित प्रणाम ॥३१॥ सन्मुख गाज्यो सिंह तहँ, भीमसेन तेहि काल॥ हुलसि गोदते तब गिरचो, पाहनपै उत्ताल ॥ ३२ ॥ अरु हूंक्यों ज्यों जलद धुनि, सुनि हरि गयो पराय ॥ सुनि गन्धारी मूर्च्छि तब, गिरी धरणि अकुलाय ॥ ३३ ॥ थोड़े दिनको गर्भह्वै, सूचि-गयो त्यहिंकाल ॥ पऱ्यो पिंड सो धरणिपर, अंग अंग बेहाल ॥ ॥ ३४ ॥ भयो कुलाहल सदनमे, भजे व्यास मुनिराय ॥ हितकारी ता वंशके, तबहीं पहुँचे आय ॥ ३५ ॥ ( चौपाई ) बरणि सबै विधि दासी कही। सो सब सुनि मुनि हिरदे लही । करि शत अंश पिंडके धरे । प्राण सबनिमे तब संचरे ॥ ३६ ॥ सो घट

घृत भरि लये मँगाय। प्रति घट अंश पिंड सुख पाय ॥ राखे एक एक गुणग्राम। धरे सु अन्तःपुर यक धाम ॥ ३७ ॥ व्यास सिधाये तब ऋषिराव। करि गंधारीके चितचावं ॥ पूरण मास गये जब बीती। खोले घट आनन्द समीती ॥ ३८ ॥ प्रथम जन्म दुर्योधन लयो। दूजे घट दुश्शासन भयो ॥ तीजे दूरथ बहु सुकुमार। रूपवन्त ज्यों सोवत मार ॥ ३९ ॥ चौथे घट उपज्यो दुर्हुवैन। मानो तनुधरि आयो मैन ॥ इहि विधि करि शत भये कुःमार। शीलवन्त राचे करतार ॥ ४० ॥ (दोहा) आनँदभो धृतराष्ट्र गृह, जहँ तहँ मंगलचार ॥ कंचन भूषण हेम नग, पावत मंगनहार ॥ ४१ ॥ सब पुरमें आनँद भयो, मनभायो सबलेत ॥ हरषि हरषिके सकल विधि, सबै अशीशन देत ॥ ४२ ॥ (धृतराष्ट्रउवाच) कहौ विदुर आनंदमति, जन्म लग्नको भाव ॥ तुमते और प्रवीणको, हितके बोल्यो राव ॥ ४३ ॥ (विदुरउवाच) मैं विचारि देखी लगन, कही न मोपै जाय ॥ मेरो बिलगु न मानिये सब विधि देहुँ बताय ॥ ४४ ॥ जेठो सुत ऐसो भयो, भलो न करिहै काज ॥ कुलहि कलंक लगाइहै, अरु खोवै सब राज ॥ ४५ ॥ (नाराचछंद) भलो बुरो गनै नहीं समूह गोत संहरै। लहै न सीख एकहू सबै कुकर्म्म सो करै ॥ न राखुपुत्र भूप नीरमाहिं सो बहाइये। सदा अलीनता करै सुगेह में न चाहिये ॥ ४६ ॥ भये कितेक पुत्र और राजकाज ते करै। विचार और है न भूप वैन मो मनै धरै (गांधारीउवाच) नबोलु मूढ झूठ मो भलो नतोहि भावई। बोलाय तोहिं लीजिये इहां सु क्यों न जावई ॥ ४७ ॥ (दोहा) भीषम विदुर उठे तहीं, यों कहिकै अकुलाय ॥ जेठो सुत कुल संहरै, कुलहि कलंक लगाय ॥ ४८ ॥ (चौपाई) दिन

दिन बाढ़त वै सौ भाई। यह सब पांडुनृपति सुधि पाई॥ फूले अँग अँग दीनों दान। सब याचकको राख्यो मान॥ ४९॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकबिछत्र सिंहविरचितायां दुर्योधनअवतारवर्णनो नामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

---

(भुजंगीछंद) दई पांडु आज्ञा तहां बोलि भामै। जपो इंद्रको मंत्र आवै सुकामै॥ कऱ्यो शक्रको ध्यान सो गेह आयो। भले द्दष्टिके संगमो सुःख छायो॥ १॥ भये मास पूरे भयो पुत्र नीको। लखे शंक नाशे नशेशोक जीको॥ महा पांडु नरपति आनन्द हीको। बधायो कियो दान दीन्हों दुनीको॥ २॥ (राजोवाच) कहो ज्योतिषी पत्रकी लग्न कैसी। सुनावो सबै मो घरी होय जैसी (ज्योतिषीउवाच) सुनौ भूप ऐसी घरीकी निकाई। चहूं चक्रफेरै धरामे दुहाई॥ ३॥ (छप्पय) बाणनि छाय अकाश बाट सुरपुरको ठानै। देवन करि आतंक भूमि ऐरावत आनै॥ शर समूहसों सेत सिन्धको मारग मंडहि। लंकाहि पुर वर जीति लंकपति धरु करि दंडहि॥ छत्र वखत वर नखतवर अंकतसों जीतै समर। तीन भुवन कीरति करहि शुभलक्षण सुन पंडुघर॥ ४॥ (दोहा) कोहरद्रुम तन सुत भयो, अर्ज्जुन पायो नाम॥ मनभायो कारज करै, जीतै बहु संग्राम॥ ५॥ (चौपाई) अर्जुन जन्म भयो जब सुन्यो। तब गांधारी माथो धुन्यो॥ कुन्ती पुत्र बली सब जाये। पांडुराय गृह बजे बधाये॥ ६॥ फिर भूपति मनमें यह आई। इंदु बदन त्रिय निकट बोलाई॥ आयसु मानि हमारो लेव। जपो मंत्र फिरि आवै देव॥ ७॥ (कुंत्युवाच) मंत्र न जापौं पति गुण ग्राम। पुत्र बली प्रकटे तुम

धाम ॥ पंच पुरुषसों जारति माने । तासों गणिका कहैं सयाने ॥ ८॥ तुम आज्ञाते यहि विधि करौं । देव बुलाये उर मति धरौं ॥ जो यह पतिको कह्यो न कीजे । घोर नरक तौ आप परी जै ॥ ९॥ ( पांडुरुवाच ) ( दोहा ) देहु माद्रीको यही, मंत्र विचक्षण बाम ॥ तव प्रसाद सुत पावई, होय सकल मनकाम ॥ १० ॥ तब अश्विनीकुमारको, मंत्र दियो तिन वाहि ॥ सुमिरत आयो देव तहँ, कोटि मदन छवि जाहि ॥ ११ ॥ भयो सदन संयोग तहँ, गर्भ धरयो तिहि बाल ॥ करि मन पूरण कामना, देव गये तेहि काल ॥ १२ ॥ उपजे ताके गर्भते, रूपवन्त सुत दोइ ॥ मंगलचार भये सदन, आनन्द्यो सबकोइ ॥ १३ ॥ ( चौपाई ) सुर किन्नर कौतुक चलि आये । व्योम विमान सकल छविछाये ॥ कोटि काम छवि वरणि न जाई । निशि दिन आनँद होइ बधाई ॥ १४ ॥ जेठे सुतको सहदेव नाम । लहुरे नकुल लसै छवि काम ॥ कहै ज्योतिषी सुनु भुवराइ । पुत्रनके गुण कहौं सुनाइ ॥ १५ ॥ जेठो बली सकल जग जानै । जाको बल सब दुनी बखानै ॥ पंडित ह्वैहै आगम कहै । मान सकल अरिगणको दहै ॥ १६ ॥ खांड़े बली न दुसरोहोइ । महिमंडल जानै सबकोइ॥ भये सयाने पांचौ भाइ। बहुतक दिन जब गये सिराइ ॥ १७ ॥ ( दोहा ) देख्यो स्वप्न अरिष्ट तब, एक दिवस नरनाथ ॥ श्याम वर्ण टेढ़े रदन, तिहि त्रिय पकरे हाथ ॥ १८ ॥ चलि चलि कुंती यो कहै, बारंबार सुनारि ॥ कारो नर ठाढ़ो लख्यो, केश भूमिलौं डारि ॥ १९ ॥ छाया लखी शरीरकी, बिन शिर देखी देह ॥ जागतही नरनाह उर, भयो महा संदेह ॥ २० ॥ जप तप दान किये घने, पंडित विप्र बोलाय ॥ सात्विक दान दये तहां, सबहीको सुख पाय ॥ २१ ॥ तीन द्योस अन्तर भये, कीनो नृप बहु दान ॥ पुहुप

२८०१

वती माद्री भई, तब कीन्हे असनान ॥ २२ ॥ पतिकी शय्याको चली, करि षोडश शृंगार ॥ नवलचीर आभरण बहु, कंकन तरव निहार ॥ २३ ॥ सवैया ॥ खंजनकी गति गंजन नैन करी दृग अंजन रेख निकाई । भूषणके मुक्तानिके हार शिंगार सजी सब सुंदरताई ॥ पीन उरोजमुखी सब देह मनोजके ओज सरोज सों छाई । चातुर कामकी आतुरसी अति आतुर ह्वै पति पास सिधाई ॥ २४ ॥ ( दोहा ) इंदु वदन त्रियपति निरखि, कामातुर अकुलाय ॥ दंपति रतिमानी हरषि, ऋषिके वचन नशाय ॥ २५ ॥ तवहीं सुख संयोगमें, भूपति छांड़े प्रान ॥ अंधकार दुखको जगत, भूप आथयो भान ॥ २६ ॥ शोक कुटुंबिन केभयो, नर नारिन उर दुःख ॥ रह्यो न चारों वर्णमें, काहूके उर सुःख ॥ २७ ॥ ( चौपाई ) ऋषिन आय कुन्ती समझाई । करता गतिसों कहा बसाई ॥ सहदेव नकुल माद्री लये । मोहछांड़ि कुन्तीको दये ॥ २८ ( माद्रीउवाच ) ज्यों अपने तीनौ सुत जानौ । त्यों मो पुत्रनसों हित ठानौ ॥ यह कहि उठी शीघ्रही कामिनि । भूपति संगभई सहगामिनि ॥ २९ ॥ जब यह सुधि भीषमको गई । सहित विदुर बहु चिंता भई ॥ कीनो पंडुनृपतिको शोगं । खान पान बहु भूल्यो भोग॥ ३०॥ ( दोहा ) चलि आये ते इंदुपथ, समुझाये नर नारि ॥ लै पांचौ पुत्रन चले, कुन्तीयुत सुखकारि ॥ ३१ नगर हस्तिनापुर गये, सबही लै सुखपाइ॥ गांधारी उर सुख भयो, देखत बहुपछिताइ ॥ ३२॥ ( गांधारीउवाच ) दुर्योधनकी सब करौ, सेवा तन मन लाइ॥ आधी नृपता लीजिये, धर्मपुत्र सुख पाइ॥ ३३॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछ
त्रसिंहविरचितायांअर्जुनसहदेवनकुलअव-
तारवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

---

(दोहा) दुर्योधनको आदि दै, शत बंधव बलबीर ॥ इतहि पं-
च सुत पंडु नृप, ते खेलैं इकतीर ॥ १॥ राखत उरमें दुष्टता, कौ-
रव भांति अपार ॥ ताको बारु न बांकई, जो सहाय करतार॥२॥
मत्त सहसदश भीम बल, दीनो त्रिभुवननाथ ॥ चाहत बांध्यो
ताहि वल, जुरि कौरव इक साथ ॥ ३॥ (सुन्दरीछंद) मंत्र कियो
यहि भांति सबै जन। भीमहिं बांधो दै दृढ़ बंधन ॥ याहि दयो
विधि आय महावर। मारत ताहि अनाथ युधिष्ठिर ॥ ४ ॥ वे
नाहिं वन्धु कछू करि जानहिं। जो कहिहौ सोइ आयसु मानहिं॥
ते सरिता तट खेलतहैं सुत। कौरव पांडव आनँद संयुत ॥५॥
कौन हरावहि भीमहिको बर।साजहु बार कछू अपनो छर ॥ सो-
वत बांधै दे दृढ़ बंधन। गंग बहावहु याहि ततक्षन ॥ ६ ॥
(दोहा) भीम सुवायो सदनमें, शत बन्धव सुख पाइ ॥ दृढ़ बं-
धनसों बांधिकरि, चाहत लयो उठाइ ॥ ७ रह्यो मष्ट करि पवन-
सुत, देखत तिनके भाइ ॥ कैसे सोये मूढ़मति, मोको सकै उठा
इ ॥ ८ ॥ पचिहारे बन्धव सबै, सके न ताहि उठाइ ॥ दुर्योधन
अद्भुत गन्यो, अवलोक्यो सो आइ ॥ ९ ॥ (दुर्योधनउवाच)
प्रथम कह्यो तुम प्राण बिन, फिर यह बांधो आइ ॥ अब कंटक
मेरो मिट्यो, दीजै गंग बहाइ ॥ १० ॥ बल करि लयो प्रयंक युत,
दुश्शासन धरि शीश ॥ चले बहावन सुरसरी, संग बन्धु दश
बीश ॥ ११ ॥ डारयो गंग प्रवाहमें, देख्यो कोसक जात ॥ दुर्यो-
धनसों आयकै, कही सकल विधि बात ॥ १२ ॥ (चौपाई) सब
कौरव मन आनँद भयो। अब निज शाल हमारो गयो ॥ अब वे
चारों बंधु अनाथ। दीजै चारि ग्राम नरनाथ ॥ १३ ॥ जो कहिहौ
सो सेवा करिहौं। अब नहिं गर्व कछू चित धरिहौं ॥ बंधन तोरि
भीम तब धायो। कौरव जहां तहां चलि आयो ॥ १४ ॥ (सुन्द

रीछंद ) देखतही कुम्हिलाय गयो सब । केतिक भागि चले गृह
को तब ॥ बोलतहैं सब कौरव या गति । खेल कियो हम बन्धु म-
हामति ॥ १५ खेल कियो तुम सो हम जान्यो । हांसिन आप वि-
सासहि ठान्यो ॥ भूप युधिष्ठिर आयसु मानहुँ । नातरु आजु स-
बै तुम जानहुँ ॥ १६ ॥ ( दुर्योधनउवाच ) गंग वहाय दयो जव तू
इनमोंहि भई उरमें रिस यों सुन ।मैं पठयों दइ वैन तहां तव । तू
चलि आयगयो कितहै अव॥१७॥ ( गीतिकाछन्द ) करी झूंठी सौं
ह इन कछु नाहिं मोहिं जनाइयो । खोलि बन्धन फांसि चलिकै
भले मोढिंग आइयो ( भीमसेनउवाच ) करौं भूपति कानि तेरी,
धर्म्मसुत शिष मैं लई। नातरु बचौ कत मोहिं सेरत, जाय
रिस क्यों आगई ॥ १८ ॥ कहि वैन ये चलि सदन आयो, आय
मातासों कही । अन्धसुत मिलि दुःख दीनो, सो परै कैसे सही ॥
जानिकै वे क्षुधित मोसब, वचन कर्कश उच्चरैं । जब करत सुख
धर्मसुतकी, आन वे सब पज्जरैं ॥ १९ ॥ बांधिके गंगा वहायो,
दया फिर जियमें भई । छोरि वंधन सकल दीने, बाट गृहकी मैं
लई ( कुंतीउवाच ) मानि दुर्योधन महीपति, कानि तिनकी की-
जिये । जो कहै नरनाथ सोई, मानि आयसु लीजिये ॥ २० ॥
क्षुधित जान्यो भीम जब, आहार लै आगे धऱ्यो । भार केते अ-
न्न व्यंजन, तृप्तहै भोजन कऱ्यो ॥ उदर पूरणकै उठ्यो बहु वस्तु
वसनानि साजिकै । उठि गयो कौरव सभा तब, द्विरद सों गल
गाजिकै ॥ २१ ॥ देखिकै कुरुराज आदर, हेतसों बहु विधि क-
ऱ्यो ॥ छरस भोजन कऱ्यो तुम हित, सोरसोईमें धऱ्यो । प्रीति
तुमसों मोहिये, अरु सकल अनुजन के हिये। निशि दिवस देखत
तोहिं आनंद, छिनक बिछुरे ना जिये ॥ २२ ॥ ( विदुरउवाच )
( दोहा ) सब कौरवकी दृष्टि क्षमि, विदुर कही यह आन ॥ तू

कित आयो भीम ह्यां, विष ज्योंनारहि खान ॥ २३ ॥ (सवैया) आवत ह्यां वहुतै दुचितौ लखि तोंहि पसीजि चल्यो अंगह्वै। मानत नांहि सबै मिलि जागत दुःख दियो वहु नाकछुह्वै ॥ भोजन कीनो महाविष संयुत आवहि तू कत वावरोहै। धर्मके नन्दन जैंसे बचावत काल बचावतहू दिन है ॥ २४ ॥ (भीमउवाच) (दोहा) सिंह छवन कहि क्यों जिये, जो कछु पक्षी खाय ॥ मेरे कृष्णको ध्यान उर, काल कहां नियराय ॥ २५ ॥ कहीनृपति सों मोहि तुम, जो चाहो अघवाइ ॥ सकुच छांडि भोजन करौं, विदुर गेह जो जाइ ॥ २६ ॥ दुश्शासन उठि तुरतही, विदुर पठायो धाम ॥ जेंवन वैठ्यो भीम तव, सजे सकल मन काम ॥ २७ ॥ (दण्डकछन्द) रसहू अनरसहूमें हांसी अरु खेलहूमें गृह अरु बाहरहू नेक मन सच्चयो। दुष्ट दुर्योधन हलाहलकै आधे आधु ताके हिये दुष्टतानि भोजनहै रच्चयो ॥ ल्याइ ल्याइ आमिष अनेक पकवान तहां स्वारसि सँवारिकै समूह आगे सच्चयो। कीनी न गलानि सो बखानि कवि छत्र कहैं जानि बूझि पवनपूत सोई विष पच्चयो ॥ २८ ॥ (दोहा) जितनो ल्यावत स्वार कछु, झारन लगै न वार ॥ बचो रसोईमें न कुछ, जेंये कैयो थार ॥ २९ ॥ (दोधकछंद) भीम चल्यो तवहीं गृह आयो। कंचन पालकि धाम बिछायो ॥ सोय रह्यो मनआनँद कीनो ॥ शोध तहां शत बंधव लीनो ॥ ३० ॥ रैनि गई तव कौरव धाये। कुंतलको तनया ढिग आये ॥ सोवत भीम कहां सुख पायो। खेलनको अब क्यों न जगायो ॥ ३१ ॥ जागि उठ्यो चलि सो तहँ आयो। दुष्टनके मन संभ्रम छायो ॥ वेगि नरेशहि जाय जुहार्‍यो ॥ कौरवके मन संभ्रम पार्‍यो ॥ ३२ ॥ (दुश्शासनउवाच) (दोहा) कहा करैं कैसी करैं, कीजै कौन उपाय ॥ सोई सब विधि कीजिये, याको ले-

हिं हराय ॥ ३३ ॥ ( चौपाई ) वटतर चलिकै खेल खिलावें। सव
मिलि छल करि ताहि हरावें ॥ जव जव भीम दण्ड लै आवे ।
वट चढि रहो छुवन नहिं पावै ॥ ३४ ॥ तव सव वटद्रुम तर च-
लिगये। वोलि भीम दुश्शासन लये ॥ खेलैं भैया खेल अखंड ॥
जो हारे सो ल्यावे दंड ॥ ३५ ॥ ( भीमसेन उवाच ) दूखतहै पग
वीर हमारो। देखैं कौतुक वैठि तुम्हारो ॥ हरुवे खेल खेलिहैं ऐसो।
खेलत भैया वन्धव जैसे ॥ ३६ ॥ ( दंडकछंद ) खेलैं वीर
ऐसो खेल आपुसको जैसो जोपे खेलिहो अनैसो तौ
न खेल खेल्यो परिहै । आनिहै जु रोष ताहि देहैं हम रापे
फिरि खैहै अफसोस न हमारो कछु करिहै ॥ पगहैं पिरात
ताते चल्योहू न मोपै जात सांची कहौं वात पै न याहूते उस-
रिहै। हारे हारे दावँ दंड दीजै तू चलाय तौतौ खेलैं हम आय
पाय पीर तनु डरिहै ३७ ( दुश्शासनउवाच ) ( दोहा ) जो हारैं तो
दाउँ हम, द्योस पांचमें देहिं ॥ जो जीतैं तो आपनो, पकरि हालि-
ही लेहिं ॥ ३८ ॥ दंड चलायो भीम जव, पऱ्यो गंगके पार ॥
दुश्शासन तव पैरिकै, लायो तेही वार ॥ ३९ ॥ आवत जान्यो
निकट सो, धायो भीम खुराय ॥ चाढ़ि न सक्यो वट वृक्ष
पर, लयो दुशासन आय ॥ ४० ॥ ( चौपाई ) सौ भाई वे फूले
गातन। सवै उच्चरत ऐसी वातन ॥ दीजे अवहीं दाउँ हमारो।
नातरु कहु हमसों तू हारो ॥ ४१ ॥ ( भीमसेनउवाच) सुनो कहौं
तुमसों सतभाउ। द्योस पांचमें लीजे दाउ॥पग मेरोहै महापिरात।
ताते मोपै चल्यो न जात ॥ ४२ ॥ ( दुश्शासनउवाच ) वकसों
अंत कहैं सतिभाउ। तव हम छांड़ें अपनो दाउ ॥ ठाढ़े भीमसेन
यों भाखै। दाउँ विरानो कैसे राखै ॥ ४३ ॥ दयो दुशासन दंड
चलाय। पऱ्यो सो क़ोश एकपै जाय॥ ढूंढ़ि भीम लाये यों तहां

कौरव बंधु हते सब जहां ॥ ४४॥ दुश्शासन फिरि उतरचो धाय चाहत दंडहि देहुँ चलाय ॥ पकरचो भीम बीचही आय। सक्यो न द्वारि दंड पहुँचाय ॥ ४५ ॥ तब दुश्शासन वटको धायो।अधपर पवन पूत छ्वै पायो ॥ उतारि दाउँ दुश्शासन दीज। अब कछु लोभ न आपन कीजै ॥ ४६ ॥ (दोहा) सब मिलि वटपर चढ़ि रहे, सुनै नहीं कोउ बात ॥ भीम गह्यो द्रुम मूल तब, हर्षवंतहैं गात ॥ ४७ ॥ गहियो गाढ़ी डारको, रहियो सबै सम्हारि ॥ पवन चलायो कृष्ण तब, सकल गिराये झारि ॥ ४८ ॥ (दंडकछंद) एक परे औंधे मुख एक गिरे ऊर्ध्वमुख धुकि धुकि पैर धराधर धरकतहैं। एक लोट पोट ह्वैकै चोट खाइ खाइ उठे एक अधपर शाखा गहे लरकतहै ॥ एक हरबर उठि भागतहैं डारि डारि कँपि-कँपि थरथर फर फर कतहै। अंधसुत बंधु सुत डारि डारि डार-निते घायलह्वै घूमि घूमि भूमि परे बरकतहै ॥ ४९ ॥ (दोहा) जे बराइ गृह को भजे, गहे भीमते जाय ॥ सब पौरुष साहस गयो, उबरे हाहाखाय ॥ ५० ॥ दई महीपतिको सबै, बीती कथा सुना-इ ॥ रोषवंत भूपति भयो, सुनिकै बहु दुखपाइ ॥ ५१ ॥ (दुर्योधनउवाच । दोहा) सन्मुख बैर न कीजिये, रहो सकल अरगाइ ॥ तौ लाजौं सुनि जो उन्हैं, ठौर न देहुँ छुटाइ ॥ ५२ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कवि
छत्रसिंहविरचितायां भीमसेनकौरवसंवाद
वर्णनोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

---

(सोरठा) खेलत एकहि साथ, कौरव पांडव अनुज सब ॥ मारत कंदुक हाथ, जैसे शशा बहीरको ॥ १ ॥ (दोहा) उछरी कंदुक तोहि समय, परी कूपमें जाय ॥ काढ़नको सब बंधु मिलि, साजत किते उपाय ॥ २ ॥ (गीतिकाछंद) कूपतट ऋषि द्रोण आये निर-

खि या विधिसो कहे। नहींहै समरत्थ कोऊ काढ़ि कंदुकको लहै वंश क्षत्री को लजावत जतन नाहिं करि आवही। काढि तुमको देहुँ यह तृण सींक जो कोउ लावही॥ ३॥ आनि आपी सींक ताकरि धनुष ताको तिहि करचो। बाण ताहीको रच्यो तिहिका-लं धनु ऊपर धरचो॥लग्यो कंदुकमाहिं सो शर सींक दूसरकर लयो। कारि कर्म अद्भुत वेगिदे इषुमाहिंहीं इषु सो दयो॥ ४॥ (दोहा) यहि विधि वेधो सींकसों, सींक कूप मंझार॥अन्त सींक गहि काढ़ियो, गेंद छत्र तिहि वार॥ ५॥ (चौपाई) देखत सकल अचम्भे रहे। समाचार भीषम सों कहे॥ लयो पितामह विदुर बुलाई। द्रोण विप्रढिग पहुँचे आई॥ ६॥ लै द्विज आये अपने गेह। करि सनमान रच्यो बहु नेह॥सब शिशु तापहँ विद्या पढे।नितचित चाउ चौगुनो बढ़ै॥ ७॥ अस्त्र शस्त्र विद्या सब जानी। विदुर पितामहके मनमानी॥ तिनमें अर्जुन भो अधिकारी। गुरुप्रसाद पायो गुण भारी॥ ८॥ (दोहा) देख्यो चाहत शिशुनको, तब गुरु द्रोण प्रभाउ॥ करचो अखारो सदनमें, बोले राजा राउ॥ ९॥ (त्रोटक छंद) रविपुत्र तहां तब कर्ण गयो। कुरुनन्दन साथ मिलाप भयो॥ अति आदरभाउ विशेष करचो। हितसों नरनायक हाथ धरचो॥ १० गजदन्तनके बहु मंच बने। बहु चित्रविचित्र अवास घने॥ तहँ वैठि पितामह आदि सबै। निरखैं शिशु कौतुक लोग सबै॥ ११॥ गुणकी रचना प्रगटी जवहीं। लखि अद्भुत वर्णत लोग तहीं॥ भट और न अर्जुनकी सरिहैं। गहिकै धनुको समता करिहैं॥ १२॥ दुर्योधन वात सुनी जवहीं। प्रगट्यो उर कोप महा तवहीं॥ धनुलै तव अर्जुन पास गयो। अवलोकि सु रोषहि छाइगयो॥ १३॥ (कर्णउवाच। तोमरछंद) अस समर मोसों मांड़ि। सत्र देहु वातन छांड़ि॥साजि वाण तू डर डारि। अब पांडु

पुत्र सम्हारि ॥१४॥ (अर्जुनउवाच) साजि तोकह वान। यह नाहिं मेरो स्थान॥निज होय भूपति कोय।पुनि समर तासों होय ॥१५॥ (दोहा) कैसे कहौं बराबरी, मोसों तोसों आय ॥ तू सुतहै निज सूतको, नहीं अवनिपतिराय ॥ १६ ॥ सुनि दुर्योधन कोप करि, थप्यो कर्ण भुवराय ॥ टीको नृप ताको करयो, शुभ घटिका सुख पाय ॥ १७॥ (सवैया) अर्जुन के सुनिवैन सरोप तहां कुरुराज महारिस भीनो। देश दियो सब कोश दियो बहु वाजि दै साजिकै वाहन दीनो ॥ भूषणदै गजभूषण भूपति भूप कियो करिछत्रनवीनो। राज दियो सुख साज दियो सब काजके कर्ण महीपतिकीनो ॥ १८॥ (दोहा) जुरे कर्ण नरनाह तब, अर्जुनसों करिक्रुद्ध ॥ दुवो धनुर्द्धर धीर अति, करत अमित गतियुद्ध ॥ १९॥ देखै जननी पुत्र विधि, करत बृष्टिशर जाल ॥ कही महा अकुलाय सुत, दोऊ राखि गुपाल ॥ २० पांचवार धर मूरछो कर्ण सुभट बलिबंड ॥ वार सात अर्जुन धुको, विक्रम कियो अखंड ॥ २१ ॥ दोऊ बरजे द्रोणगुरु, दोऊ शिशु इक सार॥राखि अखारो समदियो, लोग सकल तिहिवार ॥ २२ ॥ दुर्योधन लै कर्णको, गये आपने धाम ॥ आजपैज राखी महा, सुनि रविसुत गुणग्राम ॥ २३ ॥ (द्रोणाचार्य्यउवाच । चौपाई) धनि धनि सुरपति सुत सुखदाई। सबते तुम पौरुष अधिकाई ॥ यह कहि अपने कंठ लगायो। ह्वैहै तो तैं जो मन भायो ॥ २४ ॥ जाडर कर्ण करयो नरनाह। तोहिं निरखि दुर्योधनदाह ॥ गुरु दक्षिणा सकल मिलि देहु ॥ द्रुपद जीति मेटौ संदेहु ॥ २५ ॥ (अर्जुनउवाच) जो आज्ञा स्वहिं देहौ आप।सोई करिहौं तुम परताप ॥ प्रथमहिं दुर्योधनसे कहो। यह गुरु दक्षिण उनपै लहो ॥ २६ ॥ जोवे यह करिसकैं न आजु तब सारोंगो हौं सब काजु ॥ यह सब कही द्रोण तहँ जाय। कौरव-

सर्जी चमू सुख पाय ॥ २७ ॥ कियो द्रुपदसों सन्मुख युद्ध। तब पंचाल कियो बहुक्रुद्ध ॥ वाणनि जुरयो समरभुव आय। अम्बरलीनो ततक्षणवाय ॥ २८ ॥ ( दंडकछन्द ) द्रुपदसों जुरे अनुज सोदर सकल संग लीनोरण रंग महा शूरनके गननें। वाणनि अकाश छाय दोऊ समुदाय युद्ध क्रुद्ध बाढ़यो शुद्ध दुहूंवीरनके मनमें ॥ केते शरजाल को प्रयोग कियो पांचाल कौरव विहाल काहूधीर नहीं तनमें। सेना अकुलानी देखि राख्यो छत्र कुल पानी पांडुपुत्र पांचौ तहां आय गाजे रनमें ॥ २९ ॥ ( दोहा ) अर्जुन करि संग्रामबहु, जीतो सो नरनाथ ॥ आन्यो बांधि सुगुरु निकट, चकित भये सब साथ ॥ ३० ॥ ( चौपाई ) डारयो गुरुके चरणनसोई । देखत अद्भुत गति सब कोई ॥ बालमित्रताकी सुधिकरी। विप्रद्रोण करुणाहियधरी ॥ ३१ ॥ अतिहित भूपति कैठलगायो। तुमते भयो सकल मनभायो ॥ धनिअर्जुन गुरु द्रोण पुकारे। तोबिन मोकारज को सारे ॥ ३२ ॥ (युधिष्ठिरउवाच) सुनि अर्जुन सोदर गुणग्राम। आजु करो नीको संग्राम ॥ भयो हमारो सब मन भायो। दुर्योधनको गर्व्वनवायो ॥ ३३ ॥ द्रुपदराय बिलख्यो गृह गयो। महाशोच उर अन्तरभयो ॥ द्रोणहि हितकै परिहसुमारैं। ऐसे कोटि विचार विचारैं ॥ ३४ ॥ पुत्र शिखंडीताके धाम। तातेसरै नहीं मनकाम ॥ यज्ञारम्भ बोलि द्विजकीनो। भूपति अति करुणा रस भीनो ॥ ३५ ॥ ( दोहा ) यज्ञकुंडते तब कढी, कन्यारूप निधान ॥ कैराति शची पुलोमजा, है मेनका समान॥३६॥नाम द्रौपदी तब भयो, निरखत दुहितानैन॥धृष्टद्युम्न पुनि कुंडते, कढ्यो पुत्र जनु मैन ॥ ३७ ॥ ( द्रुपदउवाच ) याकन्या या पुत्रते ह्वैहै सब मनकाम॥ पूरण करिकै यज्ञको, हो भूपतिधाम ॥ ३८ ॥ तबहीं यज्ञ सिरायकै, सब समदे ऋषिजाल

वर्ण वर्ण सुवरण सहित । सुरभेदे तिहिकाल ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्र
सिंह विरचितायां अर्जुनविजयवर्णनो
नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

( दुर्योधनउवाच । त्रिभंगीछन्द ) कह मति कीजे क्या जग जीजै वे सब छीजे उर धरिये । कछु मंत्र विचारैं वे ज्यों हारैं भीमहिं मारैं सो करिये ॥ कछु व्यंजन कीजैं वहु विप दीजे बोलि सुलीजे भोजनको । सुनि धावन धाये तुरतहि लाये वहु भाये भूपति मन को ॥ १ ॥ अतिआदर कीनो वहु सुख भीनो भूप प्रवीनो ताहि तवै । सम्मुख भये भारे अंधदुलारे आय जुहारे बंधु सबै ॥ निशिदिन तुम भावत मन करि आवत सरसावत आनंद घने । सवही सुख पायो नेह वढ़ायो मनभायो वह को वरने ॥ २ ॥ (भीमसेनउवाच । दोहा) ॥ सेवक जानत मोहिं तुम, कृपा करत सब कोय ॥ ताते दिनप्रातिको यहां, आवनको मन होय ३॥ ( चौपाई ) सहस हाथ पनवारो आयो । पवनपूत जेंवन वैठायो ॥ दश वीसक जन परसत धाई । सोई लेय क्षणकमें खाई ॥ ४ ॥ ( दंडकछन्द ) दुष्टताको पूर अति तामसको मूर महाक्रूर दुर्योधन रहतु तासों क्रोधमें । कालकूट फोरि फोरि जोरि जोरि केते विष वोरि घोरि डारै वहु भोजन अशेपमें ॥ व्यंजन अपार घृतसार कैयो भार आनि कीनो हलाहल आधे आधु सुविशेपमें । लावतही झारिजात स्वार जेतो डारिजात भीमसेन झारिजात पातरि निमेपमें ॥ ५ ॥ ( सवैया ) तद्यपि आन न चित्त कछू नहिं यद्यपि भाव महा छलको ॥ जानानि जानतु भोजन खात नहीं डर ताहि हलाहलको ॥ भोजन व्यंजन वृन्द कितेकानि जेयें घने न लग्यो पलको । दृष्टि इतै उत सों न करै न करै सुतो पान

कहूं जलको ॥ ६ ॥ (दोहा) भोजन करि बीरा लयो, चल्यो आपने गेह ॥ छायगयो तिहि काल विष, अंग अंग सब देह ॥ ७ ॥ (चौपाई) पवनपुत्र जब बाहर आयो। जान्यो भीम महाविष खायो ॥ आई लहरि गिरचो विकरार। तब यह शोचत बारंबार ॥ ८ ॥ तीनोंमों लघु सादर आइ। तिनकी इनसों कहा बसाइ ॥ भूपति मनमें नेक न क्रोध। कौरवसों को करै विरोध ॥ ९ ॥ यों सुमिरत तब छांड़ेप्रान। प्रफुलित कौरव भये निदान ॥ बोल्यो वैद्य नाटिका देखो। मुयो हलाहक सूचित लेखो ॥ १० ॥ (वैद्यउवाच) है अजहूं याके उर श्वाश। तातेहै जीवनकी आश ॥ आयसु दीजै करौं उपाय। यों सुनि क्रोधभयो भुवराय ॥ ११ ॥ (दोहा) तबै वैद्य जान्यो कपट, गेह गयो अकुलाय ॥ जाहु कर्ण लै भीमको, आवो गंग बहाय ॥ १२ ॥ आयसु लै रविपुत्र सों, दीनों गंग बहाय ॥ देव विमानन आरहे, रहे व्योममें छाय ॥ १३ ॥ (सुरउवाच) जीवैगो सुत वायुको, श्रीहरि सदा सहाय ॥ सुरसरि जल में सो बह्यो, परचो पतालहि जाय ॥ १४ ॥ वासुकिदुहिता इन्दुमुखि, अहिलमती त्याहि नाम॥ देखि भीम मूरति मदन, प्रफुलित भई सुबाम ॥ १५ ॥ शिशुतासे पूजी गवरिं, मन वच क्रम चितलाय ॥ यकदिन सो विधना करी, रही महा अलसाय ॥ १६ ॥ बासीपानीसों गवरि, पूजी यक दिन आप ॥ तब देवी मन क्रोधकरि, दीनो ताको शाप ॥ १७॥ मृतक मिलै तोको पुरुष, जाहु सुरसरी तीर ॥ अहिलमती सो प्राणपति, देख्यो मृतक शरीर ॥ १८ ॥ लै राख्यो सो सदनमें, सखिसों कही बुलाय॥अब सोई कीजै यतन, याको लेहु जिवाय१९ (चौपाई) तत्क्षणहीं तिहि बुद्धि उपाई। जारन पटकी गेंद बनाई ॥ सुधाकुण्ड सो तत्क्षण डारी। धाये पन्नग रक्षक भारा २०॥

रहे सुधाकुण्डनिं पै छाई । नाहिं रंचक कोऊ लै जाई ॥ अहिलमती यहि विधि कहि धाई ॥ गेंद मोहिं दीजै किन आई ॥ २१ ॥ कानि रायबासुकिकी करौं । जीव छांड़ि तुम ऊपर मरौं ॥ गेंद निचोरि ताहि लै दई । लै सो पवनपूत ढिग गई ॥२२॥ रंचक तामहिं अमृत पायो । भीमसेनके मुख में नायो जीय उठ्यो जनु सोवत जाग्यो । निरखि त्रिया यों बूझन लाग्यो ॥ २३ ॥ ( भीमसेनउवाच ) । दोधकछंद ) को त्रिय तू जिहिं चित्त चुरायो । सोवत तैं कित मोहिं जगायो ॥ व्याल लिये संग को कहि बाला । चन्द्रमुखी गुण रूप रसाला ॥ २४ ॥ को कहु तू अब मो ढिग आई । को यह देश कहो समुझाई ॥ २५ ॥ ( त्रियउवाच ) आय पताल सुनो सुखसाज । बासुकि मो पितु या थल राज ॥ २६ ॥ ( दोहा ) बासुकि दुहिता आहुँमैं, अहिलमती मो नाम ॥ गवरि कृपा पाये पुरुष, मो गृह करि विश्राम ॥ २७ ॥ अब अपनी सब विधि कहो, कोहौ आप निदान ॥ कौन वंश का नामहै, किहि कारण ह्यां आन ॥ २८ ॥ ( भीमसेनउवाच ) सोमवंश हम सुखद त्रिय, क्षत्रीजाति सुजान ॥ भूपति जम्बूद्वीपके, महिमण्डलमें आन ॥ २९ ॥ तव सँग दीखैं व्याल बहु, कहो कौन यह भाउ॥जितै तितै ये देखियत, सो सब वरणि सुनाउ३०॥ ( अहिलमत्युवाच ) ये पियूषके कुण्ड नव, जगकी जीवनमूरि ॥ रखवारे तहँ सर्प बहु, रहे चहूं दिशि पूरि ॥ ३१ ॥ (भीमसेनउवाच। दोधकछंद ) मैं अब कुण्ड सकल लखि पाय । सोखौं सबै करौं मनभाय ॥ अहिलमती तब विनवै ताहि । यह कछु बात न नीकी आहि ॥ ३२ ॥ जैहैं व्याल किते लिपटाइ । रंचक सुधा सको नहिं खाइ ॥ करि विवाह जो मोसों लेहु । जानि हितू मानैं सब नेहु ॥ ३३ ॥ दंडकछंद भारे भारे व्याल महाकारे कारे विक-

राल कालहूके काल जहां तहां छाइजाइँगे । आननकी ओर जे श्रवत विषज्वाल जोर घोर घोर चहूं ओर कहांधौ समाइँगे ॥ सप्तमुखी एक अष्टमुखी ते अनेक एक एकमुखी आशी विष आइ लपटाइँगे । जोरे दोऊ हाथ कहौं मानो प्राणनाथ प्यारे देखि ऐसे साथ कैसे धीरज धराइँगे ॥ ३४ ॥ ( नाराचछन्द ) फुरै न मंत्रमूरि एक एक व्याल जो डसें । करौ विचार कौन आप अंग आय जो ग्रसें ॥ कछू सुनै न नारि वात भीमसेन यों कहे । सरोष मोहिं देखिकै कहो सुको इहांरहे ॥ ३५ ॥ ( भुजंगप्रयातछन्द ) लखे कुण्ड नैनानि सोखौं अवैहौं । सवै नागके यूथको त्रास देहौं ॥ चल्यो धायके नारि यों चित्त शोचै । करै दुःखसों नीर नैनानि मोचै ॥ ३६ ॥ ( अहिलमत्युवाच ) कहा कर्म कीनो मुयामें जियायो । दुहूं भांति सों कालह्वै खान आयो ॥ करै जो कहूं यह पराजै पिता की । विनाशै किधौं युद्धमें देह याकी ॥ ३७ ॥ दुहूं भांति मोको महादुःख ह्वैहै । अभयदान मोको कृपासिंधु दैहै ॥ महाक्रोध ह्वै पवनको पूत धायो । हते नागसो कुंडमें पैठि आयो ॥ ३८ ॥ महाक्रोध कीनो सवै व्याल धाये । चहूं ओर घेरे सवै कुंड छाये ॥ उठ्यो कोपिकै भीम धायो तहां ते । भगे नागसो नैन देख्यो जहांते ॥ ३९ ॥ ( दंडकछंद ) एक मारै तोरिकै मरोरि मारैं एकै नाग एकै मारै मींडके कहांलौं करहौं करनी । एकै धाये धायकै धुकाय दये धावतही धर धर धरकत एकै परे धरनी॥ एकनिके कारे फन फर फर फरकत थर थर कंप भगे एकै लैलै घरनी । भागि भागि एकै गये वासुकि नरेश आगे जायकै अकह कह वात सवै वरनी ॥ ४० ॥ ( नागउवाच ) ( चौपाई ) आयो असुर एक अति भारी । क्योंहुँ न मानत आन तुम्हारी॥कुंड एक करिलीनो पान।मार्‍यो सव नागनको मान४१

शोपन कुंड सकल कहँ कहै। पठयों काहूसों सुधि लहै॥ वासुकि कहै असुर नहिं होइ। नृपति युधिष्टिर वंधव सोइ॥ ॥ ४२ ॥ भीमसेनहै ताको नाम। यहि थल जीत्यो तिहि संग्राम॥ वा विन इतो वलीको और। सोम वंश सुभटन शिरमौर॥ ॥ ४३ ॥ (दोहा) युधिष्ठिर नरनाहकी, देहु दोहाई धाइ॥ भीमसेन कुंडन निकट, सकै न नियरो जाइ ॥ ४४ ॥ (चौपाई) पाय रजायसु धामन धायो। तुरतहि पवनपुत्र ढिग आयो ॥ आनि युधिष्टिर नृपकी दीनी। कानि भीम कुंडनकी कीनी ॥४५॥ (भीमसेन उवाच) जो न दुहाई देते आई। कुंडल सकल लेत मैं खाई॥ कौने तुम्हें वतायो भेद। यह मनमें वहु उपज्यो खेद॥ ॥ ४६ ॥ पाई सुधि वासुकि उठिधाये। भीमसेन तव कंठ लगाये॥ वहु सुख संयुत लै गृह गये। अष्टकुली मन आनँद भये॥ ॥ ४७ ॥ (दोहा) शुभघटिका शुभलग्न गनि, शुभवासर शुभवार ॥ अहिलमती भीमहि दई, करि विवाह सव चार ॥ ४८ ॥ पाइ दाइजो व्याहिकै, विधुवदनी वरनारि ॥ हियहुलास कीनो महा, वदन मयंक निहारि ॥ ४९ ॥ वहु प्रताप पूरण कला भीमसेन ज्यों भान॥ फूलति लखि अम्वुजमुखी, सव गुण रूप निधान ॥ ५० ॥ (सोरठा) धर्मपुत्र भुवराय, सहदेवसों यह कही॥ यह सँदेह मोहिं आय, भीमहिं भयो विलंव वहु ॥ ५१ ॥ (सहदेव उवाच) गयो वीर पाताल, भूपर नहीं सुभूमिपति ॥ कौरव कर्म कराल, करि भोजनमें विप दयो ॥ ५२ ॥ (दोहा) दीनो गंग वहाइसो, पऱ्यो पतालहि जाय ॥ वासुकितनया तिन वरी, रहत तहां सुखपाय ॥ ५३ ॥ पठयो धावन भूप तव, पहुँच्यो भवन पताल ॥ वोले हो तिनसों कही, युधिष्टिर भूपाल ॥ ५४ ॥ पवनपुत्र मांगी विदा, वासुकि पै सुखपाय ॥ नाय-

शीश तिनको चल्यो, अहिलमती सँग लाय ॥ ५५ ॥ (चौपाई) सब नागन मारग दरशायो । निकसि भीम भुव ऊपर आयो ॥ धर्म्मपुत्रके आनँद भयो । कुंतीको सब दुख मिटिगयो ॥ ५६ ॥ सकल अनुज मिलि आनँद ठयो । महादुखित कुरुनंदन भयो ॥ दयो दुष्ट सुरसरी बहाई । कहौ कहांते प्रकट्यो आई ॥ ५७ ॥ सकल जगत अपयश ह्वैगयो । अब यह शाल हमारो भयो ॥ अब कछु ऐसो करौ विचार । भीमसेनको सकिये मार ॥ ५८ ॥ (युधिष्ठिरउवाच । दोहा) अंधसुतनको मानहति, कियो सुयश संसार ॥ गांधारीको गर्व अब, गयो बार इहिबार ॥ ५९ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्र
विरचितायां भीमसेनाविवाहवर्णनोनाम
अष्टमोऽध्यायः॥ ८ ॥

---

(दोहा) आश्विन कृष्णा अष्टमी, नर नारिनकी भीर ॥ पूजन गज नारिन सजे, भूषण वसन शरीर ॥ १ ॥ महामलिन कुंती भई, अर्जुन निरखे नैन ॥ कहा विसूरति माय तुम, सो कहि मोसों बैन ॥२॥ (कुंत्युवाच) मेरे पांचौं पुत्र तुम, वै शत बंधु विचारि॥ सौलौंदाले आवहीं, सकल मृत्तिका डारि ॥ ३ ॥ करि गज पूजें आजु सो, गन्धारी सुख पाय ॥ तिनसों हमसों कौन विधि, करी बराबर जाय ॥ ४ ॥ (अर्जुनउवाच) पंच पुत्र तेरे बली, क्यों मलीन विच चित्त ॥ ऐरावत आनों द्विरद, तेरे पूजन हित्त ॥ ५ ॥ (सवैया) काहेको माय विसूरति या विधि बाण अनेकनि अम्बर छाऊं।बाट करौं शरजाल पठै नभ भूमि अकाशहि भेंट कराऊं।मान हतौं दुर्योधनको बल कौरवको सब गर्व्व नवाऊं ।आनो भुजा बलसों ऐरावत अर्जुन तौ तुव पुत्र कहाऊं ॥ ६ ॥ (दोहा) करि प्रणाम गुरु द्रोणको, लीनो धनुष उठाय॥हित ऐरावत सुरपुरी, दीनो बाण

पठाय ॥ ७ ॥ अर्जुन इषु देवन लख्यो, कह्यो इन्द्र सुनि लेहु ॥ तुम सुत मांगत अब द्विरद, करहु कृपा सो देहु ॥ ८॥ जो न देहु ऐरावतै, तौ वह बल करिलेइ ॥ अमरपुरी भट भंजिकै, दुख देवनिको देइ ॥ ९ ॥ देन कह्यो वारण सुनी, देवनकी मनुहारि ॥ क्योंकरिजै है स्वर्गते, सो सब कहौ विचारि ॥१०॥ (चौ०) सब देवन मिलि वाण पठायो। भूतल अर्जुनके ढिग आयो ॥ ऐरावतको मारग कीजै। यहि विधि वारण आपन लीजै ॥ ११ ॥ (अर्जुनउवाच) वाण अनेकन अंबर छाऊं। ऐरावतको बाट बनाऊं ॥ इन्द्रसभामें वाण पठायो। देवन इंद्रहि जाइ जनायो ॥ १२ ॥ (दोहा) आज्ञा सुरपति तब दई, साखि दये सुरपाल ॥ पूजा करि पठवै इहां, वारण याही काल ॥ १३ ॥ आयो पत्री भूमिको, अर्जुन लखि ये भाइ ॥ निकसि नगरते सुभट तब, लीनो धनुष चढ़ाइ ॥ १४॥ करि प्रणाम गुरु द्रोणको, कृष्णहिं शीशनवाय ॥ शरपंशर पूरचो तबै, लयो व्योम सब छाय ॥ १५॥ (सवैया) व्योमको पठायो वाण प्रथम सहस्र एक दूसरे सहस्र दश स्वर्गको पठाये हैं। तीसरे अयुत पांच चौथे लक्ष एक शर एक कोटि पांचये अकाशमाहिं छाये हैं ॥ षष्ठमें करोर दश अर्ब एक सातयें सुकहांलौं बखानो शरजाल जेते धाये हैं। पूरचो सुरलोकते धरालों शरपंजर विलोकि अन्धपुत्र शतबन्धु ते चवाये हैं ॥ १६ ॥ (चौपाई) देखत कौतुक सब जगजाल । कौरव कुल लखि भये बिहाल ॥ कौतुक विदुर पितामह भूले । नृपति युधिष्ठिर तन मन फूले ॥ १७ ॥ अर्जुन महापराक्रम कीनो । मित्रन सुख दुष्टन दुख दीनो ॥ सकल व्योम शरपंजर छायो ॥ उतमें कहा मेघ जनु आयो ॥ १८ ॥ (दोहा) योजन द्वादश लक्षलौं, शरपंजर नभछाइ ॥ देखतही सब सुरन मिलि, कही शक्रसों जाइ ॥ १९ ॥ आ-

ज्ञा लै सुरराजकी, चल्यो मत्त मातंग ॥ गर्व धर्‍यो शरजालको, करौं कोपिकैं भंग ॥ २० ॥ ( भुजंगीछन्द ) धर्‍यो व्योमते गर्वके शक्र हाथी । किधौं मेघके योधके शैल हाथी ॥ कहै वाणके पंजरे तोरिडारों । धरामें धसौं जायके रोर पारों ॥ २१ ॥ जहां जोर करिकै करी वाण तोरे । तहां इन्द्रको पुत्र लै वीस जोरे ॥ चल्यो मत्त मातंग सो भूमि आयो । लख्यो मातु कुन्ती महासुःख पायो ॥ २२ ॥ ( भीष्मउवाच ) न ऐसो सुन्यो मैं न नैनादि देख्यों । सुतो मैं अचम्भो महाचित्त लेख्यों ॥ महावीर आकाशको पंथ कीनो । भयो पंथता नाम श्रीराम दीनो ॥ २३ ॥ ( अर्जुनउवाच ) करोजू अबै मातु पूजा करीकी । न कीजै कछू वेर एकौ घरीकी॥ तबै मात आनन्द जी मांझ आन्यो । कही को सुतो धन्यकै व्योस मान्यो ॥ २४ ॥ गये सर्व संशय सो संदेह जीके । भुजादण्ड पूजे तबै पार्थ हीके ॥ महाधन्यहौं पार्थ सो पुत्र जायो । दये वायने और कीनो वधायो ॥ २५ ॥ ( दोहा ) आनँदयुत पूजा करी, सब विधि वात वनाइ ॥ गान्धारी लखि लखि तबै, मनही मन पछिताइ ॥ २६ ॥ करि पूजा मातंगकी, फिरि पठयो सुरलोक ॥ दुर्योधनको आदि दै, भयो सबनिको शोक ॥ २७ ॥ ( युधिष्ठिरउवाच ) धनि अर्जुन तैं राखियो, लोक लोकमें नाम ॥ अब न करैंगे गर्व वे, रहे सशोके धाम ॥ २८ ॥ दुर्योधनको आदिदै, भये गर्व करि हीन ॥ नेक सुहाय न धाम धन, क्षण क्षण ह्वैगये छीन ॥ २९ ॥ ( गान्धारीउवाच ) कहा भयो सुत सौजने, सरै न तिनसों काम ॥ जाये अर्जुन भीम उन, धनि धनि कुन्ती वाम ॥ ३० ॥ देखि पराक्रम दुहुँनके, लख्यो नहीं कुशलात लेहैं तुमते राज्य वे, यह सूझतिहै वात ॥ ३१ ॥ लाज भई दुर्योधनैं दुश्शासनके चित्त ॥ थाकें अमित प्रकार करि, कुन्तीपुत्र निहित्त, ॥ ३२ ॥ ( सवैया ) राज सुहाय न काज सुहाय न लाज सुहाय

नहीं मन माहीं । ग्राम सुहाय न धाम सुहाय न बाम सुहाय हिये सुधि नाहीं ॥ देश सुहाय न कोश सुहाय सु कौरवके मन रोष वृथाहीं । खान सुहाय न पान सुहाय सुहाय न पांडुके पुत्रन छाहीं ॥ ३३ ॥ ( दुर्योधनउवाच। दोहा ) अर्जुन भीम भये बली, कीजै कछू उपाय ॥ सब मिलि ऐसो कीजिये, शाल हमारो जाय।३४।

इति श्रीमहाभारतपुराणे बिजयमुक्तावल्यांकविछत्र सिंहविरचितायांमहीलोक्यांऐरावत आगमनो नामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥



( दोहा ) गन्धारी भ्राता शकुनि, बोलि लियो अकुलाय ॥ भीषम अरु बोले विदुर, मंत्रकाज सुख पाय ॥ १ ॥ ( दुर्योधनउवाच ) जैसे छीजें पांडुसुत, सो मति कहौ विचारि ॥ बीचहि बोले शकुनि तब, देहु गेहमें जारि॥२॥वरुणनगरलै कोटरचि, तामें दीजै बास ॥ चहुँदिशि अगिनि प्रजारिये, होय सबनको नास ॥ ३ ॥ ( चौपाई ) भीषम मंत्र कहन नहिं पायो । शकुनि कह्यो सो नृप मन भायो ॥ समझो सोई कोट करावहु । वेगहि चलो वार जानि लावहु ॥ ४ ॥ ( सवैया ) तेल भरे वट आनि धरे घृतके भरिकै घट केते सँवारे । तूलदै मूलमें रार अपार सुलाख मिले किये गन्धक गारे ॥ अन्तर सूत निरन्तर काठ बनायकै पावक धाम सुधारे । चित्रित चित्र सँवारि देवालन देखिय सदन सबै उजियारे ॥ ५ ॥ ( दोहा ) वर्षदिवस बीते शकुनि, कह्यो नृपतिसों आय ॥ सपरच्यो मंदिर पांडुसुत, दीजै तहां पठाय ॥ ६ ॥ ( गीतिका छन्द ) बोलि लीने विदुर भीषम लै सभा बैठारियो । नृपयुधिष्ठिर आदिदै सब पांडुपुत्र हँकारियो ॥ बात भीषम पै कहाई मानि आयसु लीजिये । तुम हेतु मन्दिर वरण राच्यो वास तामें

कीजिये ॥ ७ ॥ धर्मसुतके हर्ष उपज्यो तुरत सब रथ पर चढ़े ।
राज आज्ञा मानिकै युत मातु पुर बाहर कढ़े ॥ विदुर साथ चले
पठावन सकल शिक्षा ते कहैं । बैठिकै परसदनमें निश्चिंत भूपति
ना रहैं ॥ ८ ( चौ० ) अति सचेत रहियो गृहमाहीं । आप उठा-
यो तुम वह नाहीं ॥ जाय वासना गृहकी लीजौ । आप सूझ
तौ सब कुछ कीजौ ॥ ९ ॥ पैठन पेट जु कोई आवै । सो नहिं
भेद कछू लखिपावै ॥ बुधि दै विदुर गये फिर ग्राम । पहुँचे
नृप चलि ताही धाम ॥ १० ॥ गेह प्रवेश कियो भूपाल । सन्मु-
ख छींक भई तिहिकाल ॥ सहदेव कहै सुनिय महराज । रहहु
इहां नहिं नीको काज ॥ ११ ॥ ( नकुलउवाच ) क्यों न हस्ति-
नापुर पगुधारो । जियमें काह विचार विचारो ॥ कही भूप वहि
पुर नहिं जैहैं । दुख सुख वीर इहां हम रैहैं ॥ १२ ॥ यह दुख वि-
दुर पितामह पायो । सौ भ्रातनिं उर आनँद छायो ॥ विदुर क-
ह्यो सबते सो देख्यो । पावक पंज धाम सो लेख्यो ॥ १३ ॥ सा-
वधान निशि वासर रहै । मर्म न काहूसों कछु कहै ॥ दुर्योधन
प्रतिहार बुलायो । भेद सकल दै ताहि पठायो ॥ १४ ॥ ( राजो
वाच ) हमसों अनरस करि तुम जाहु । जहां युधिष्ठिर हैं नर-
नाहु ॥ भूलै अग्नि सो बारो धाम । करिहौं सब तुव पूरण काम
॥ १५ ॥ ( सुन्दरीछन्द ) आयसु पाय गयो वह ता थल । जाय
प्रणाम कियो पलही पल ॥ और कहे दुर्योधनकें दुख । पेट वि-
श्वास कहै हितकी मुख ॥ १६ ॥ ( दोहा ) वचन सम्हारे विदुरके
कपटी उर पहिंचानि ॥ सब विधि सकल सचेतह्वै, करयो पँवरि म
ग आनि ॥ १७ ॥ ( मालतीछन्द ) भीम सिधायो । सुरंग खनायो॥
वनकहँ कीनो । पंथ नवीनो ॥ १८ ॥ ( चौपाई ) हमहिं मरे ज्यों
कौरव जानो । ऐसे सब मिलिकै मति ठानो ॥ भिक्षुक पंच दिवस

यक आये। जननी वृद्ध संग ते लाये॥ १९॥ देखि भीम यों क
हैं विचारी। वनमें जाहिं इन्हें ह्यां जारी॥ बहुविधि भोजन तिन-
हिं कराये। उत्तम ठाम तहां पौढ़ाये॥ २०॥ (दोहा) जबहीं
बीती अर्द्धनिशि, सोवत सबही जानि॥ कही भीम नरनाहसों, च-
लौ विपिन सुखदानि॥ २१॥ सुरँग बाट सब मिलि कढ़े, लै जन-
नी तेहिकाल॥ लै पावक तब पौरिपर, भीमहुँ गयो उताल॥२२
ऊंक दई प्रतिहार शिर, दीनी पौरि जराय। महल महल परि जा-
रिकै, गयो भूपपै धाय॥२३॥ (दोधकछन्द) बाट लई वनको उठि
धाये। मन्दिर दुर्गम कोट कराये॥ मूंदि गयो मग कोउ न जानै।
जात चले थकिकें हहराने॥ २४॥ भीम महीपति कंध चढ़ाये।
पार्थ तबै उरसों लिपटाये॥ बंधव दोय लये अंकवारी। शीश धरी
जननी सुखकारी॥२५॥ लै दशकोश गयो वनमाहीं। भय जिनके
मनमें कछु नाहीं॥ धाम जर्‌यो सुनिकै कुरुराई। बैठिसभा बहुतै
पछिताई॥सुख बाढ्यो अतिहीं उरमाहीं॥देखत लोगनके पछिताहीं॥
शाल मिट्यो उरको यह जान्यो। शुद्ध भयो तब दैकरि पान्यो
॥ २७॥ (दोहा) नयोजन्म जान्यो तबै, शतबंधव उर फूल॥बं-
ड़ी कृपा कर्ता करी, नशे हमारे शूल ॥ २८॥ उत पांडव वन-
को गये, उतरे वटकी छांह॥ सब सोये पहरे जगे, भीमसेन वनमां
ह॥ २९ नरदेहीकी बास लहि, आई त्रिय गल गाजि॥ नाम हि-
डंबीराक्षसी, घोर महा वपु साजि॥ ३०॥ तनु दीरघ दीरघ उ-
दर, दीरघ दंत कराल॥ दीरघ मुख दीरघ श्रवण, दीरघ बाहु
सुबाल॥ ३१॥ आई गर्ज्जत नारि वह, भीम न मानी शंक॥
तरुवरलै संमुख गयो, करी न भय कछु अंक ॥ ३२ ॥ देखत
साहस भीमको, भई परमवपु बाल ॥ राकाशशि षोडश कला,
रूपलख्यो त्यहि काल ॥ ३३॥ (हिडंबीउवाच। दोधकछन्द)

मो मन रोचक आपु न मानो। आपु त्रिया करिकै उर जानो॥ मैं तुम देखि वली वर कीनो। नित्त चलौं तव आयसु लीनो॥ ॥ ३४॥ आय हिडंव तहां तव गाज्यो। भीम इतै द्रुम लैकर साज्यो॥ कोकहि नारि कहां यह आयो। भेद कछू नहिं मैं अव पायो॥ ३५॥ (हिडंवीउवाच। (दोहा)॥ मेरो वीर हिडंव यह कीजै युद्ध निशंक॥ कछु विस्मय जिय जानि करो, लज्जा धरो न अंक॥ ३६॥ नहिं गाजत धीरज रह्यो तेरो बुद्धिनिधान॥यह न कछू तेरो करै, हितवर याहि निदान॥ ३७॥ (भीमसेनउवाच (चौ०) तेरो कहा भरोसो मोहिं। वीर हतत रिस लागै तोहिं॥ जव याकी तू होइ सहाय। तव कहु मेरी कहा वसाय॥ ३८॥ (हिडंवीउवाच। दोहा) जानति तोको प्राणपति,नहिं राखति चित और॥ तो सम यामें वल नहीं, हति हिडव यहि ठौर॥ ३९॥ मल्लयुद्ध भयो असुर अरु भीमसों, आति गति मुष्टि प्रहार॥ निकट न पायो भीम करि धर परे, है दोऊ विकरार॥ ४०॥ निशिचरसों मंडत समर, अवलोक्यो जव, जागे वंधव चारि॥ (तोटकछन्द) अवलोकत भीमहिं लाज भई। सुखकारि॥ ४१॥ तव दानवके भुज कंठ दई॥ वरुकै वह दानव वीर हयो। सव वंधवको वहु सुक्ख भयो॥ ४२॥ (गीतिकाछन्द) धर्मसुतको मांगि आयसु सीख कुंती पै लही। तव हिडंवी भीम व्याही .विधि करी जैसी चही॥ रहत वीते दिन किते ताविपिनमें सुख साजही। कंद मूलनि खात खानि खानि जीविका यों राखही॥ ॥४३॥ (दोहा) रहत किते दिन जव भयो, ता काननके धाम॥ पुत्र हिडंवीके भयो धर्‌यो, घरूका नाम॥ ४४॥ वीति किते दिन तव गये तज्यो, विपिन वह ठाम॥ छांड़ि घरूका ता थली

पहुँचे इकचक ग्राम ॥ ४५ ॥ रूप कपरियाको सजे, रहे एक द्विज धाम ॥ उद्यम करि भोजन करैं, सब बंधवव गुणग्राम ॥ ४६॥

इति श्रीमहाभारतपुराणविजयमुक्तावल्यांकवि
छत्रसिंह विरचितायांघरूकाजन्म
वर्णनोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

---

(त्रिभंगीछंद) इकचक नगरी सब गुण अगरी कीरति बगरी सकल दिशा।पुर नर सब गाजत इहि विधि राजत साजत सीकनद्योस निशा ॥ सब कंपत थर थर वक दानव डर घर घर शोच सकोच महा। नित प्रति नर मारैं किते सँहारैं वरणौं निशिचर कर्म कहा॥ ॥ १ ॥ (दोहा) ॥ नाश जानि पुर नर सबै, तब यह कियो विचार ॥ दिनप्रति दीजे एक नर, चैनलहै संसार ॥ २ ॥ निशिचर सों कीनो विनय, सबही मिलि तहँ जाय ॥ प्रतिदिनको तुव भक्ष हित, नर यक पहुँचो आय ॥ ३ ॥ मानि विनय प्रतिद्योसको, भक्ष एक नर लेहि ॥ जाको जबही औसरा, सो भक्षण तेहि देहि ॥४॥ द्विज तरुणीके धाम जहँ, वसत युधिष्ठिरराइ ॥ ताके सुतको औसरो, पहुँच्यो इक दिन आइ ॥ ५ ॥ (सोरठा) द्विजतरुणी अकुलाइ । बार बार धर मूरछै॥फिरि फिरि यह पछिताय, क्यों न कालिह यह पुर तज्यों ॥ ६ ॥ (दोहा) मोह महा देखत भयो । कुंतीके उर आइ॥तत्क्षण वाको दुख कह्यो,भीमहि पास बुलाइ ॥ ७ ॥ (भीमसेन उवाच चौपाई) याके सुतके पलटे जैहौं।फिरि मिलिहौं जो जीवत रैहो ॥ भोजन दानवहित जो भयो । भरिकै महिष भीम सँग लयो ॥ ८ ॥ दानव ठांउ तहां चलि आयो । बैठ भीम तहँ भोजन खायो ॥ धायो असुर क्रोध करि भारी । वज्रपात सम दो हथि मारी ॥ ९ ॥ (दोहा) मुष्टि प्रहार कियो असुर, आपु शक्ति अनुसार ॥ भीम न आन्यो चित्तमें, भोजन भखे अहार॥१०॥

( दोधकछंद ) मारतही सब भोजन खायो । शंक नहीं अपने उर लायो ॥ वीर दुहूं मिलिके रण कीनो । कोउ नहीं तिनमें बल हीनो ॥ ११ ॥ युद्ध भयो अतिही गति ऐसो । राघव रावणको रण जैसो ॥ ग्रीव दयो पगु दुष्ट सँहाऱ्यो । ऐंच तबै पुर बाहर डाऱ्यो ॥ १२ ॥ ( दोहा ) ठाढ़ो कीनो पँवरि पर, मृतक असुर सो लाइ ॥ प्रात होत पुर नर सकल, निरखि भगे अकुलाइ॥ ॥ १३ ॥ सबहीको शंका भई, सकैं न नियरे जाय ॥ है दानव निर्जीव यह, कही भीम तहँ आय ॥ १४ ॥ भीमसेन ढिग जाय कै, संभ्रम दियो भगाय ॥ यह गति जानी व्यास मुनि, तबहीं पहुँचे जाय ॥ १५ ॥ ( श्रीव्यासउवाच ) पवनपुत्र माऱ्यो असुर, सब जग भयो चबाउ ॥ अब सिख मानो वेगिही, नगर कंपिला जाउ ॥ १६ ॥ मानि सीख ऋषि व्यासकी, तिहि पुर पहुँचे जाइ । होत शकुन सहदेवसों, कही नृपति सुख पाइ ॥ १७ ॥ ( चौपाई ) कैसे शकुन भये अब भाई । सो अब मोसों कहि समुझाई ॥ सुनहु गोसाँई शकुन प्रभाव । होइ लाभ चित चौगुन चाव ॥१८॥ आमिष लीने देख्यों श्वान । गयो दाहिनो उत्तम जान ॥ लीनो अर्जुन धाय छुटाइ । लाभ बहुत पहिचानो राइ ॥ १९ ॥ रहे सुकुंभकार गृह जाय । पंच वीर सँग कुंती माय ॥ यहि विधि बीति काल बहु गयो । भूपति सपद स्वयंवर ठयो ॥ २० ॥ ( दोधकछन्द ) सोहत पंचनकी अवली अति पेखत तासुको मोहतिहै मति । उज्ज्वलहै गजदंत महाछवि जोन्ह मनो द्युति वर्णतहैं कवि ॥ ॥ २१ ॥ आय जुरे भुवके सब भूपति है जगमें जिनकी बहु कीरति ॥ कौरव सैन्य तहां सब सोहति दीरघ सागरसों मनमोहति ॥ ॥ २२ ॥ ( दोहा ) यज्ञ द्रुपदनृपके भयो, आये सब ऋषिराइ ॥ रच्यो द्रोण गुरु यंत्र नभ, राहावेध बनाइ ॥ २३ ॥ राख्यो परम

कठोर धनु, मीन यंत्रके पास ॥ ह्वैहे सो समरत्थ जग, वेधै यंत्र अकास ॥ २४ ॥ (चौपाई) तप्त तेलसो भरो कराह। राखो नीचे तब नरनाह ॥ तरे दृष्टि करि देखे झाई । मीन यंत्र जो वेधै आई ॥ २५ ॥ ताउर कन्या ताही काल। कही भूप यह डारे माल ॥ बारन चढ़ी फिरै सो बाल । लीन्हे हाथ पुहुपकी माल ॥ ॥ २६ ॥ (दंडकछंद) वेणी ज्यों फणीन्द्र और इंदुसों मुखारबिंद चंपक विलास हास मोहतहै मनको । खंचन चपलगति भंजन हैं ऐन नैन अंजन सहित मनरंजन है वनको ॥ अधर चिबुक चारु बाहुहै सुढार कुच कनक कलश रंग कंचनसो तनको । कदलीके खंभसे युगल जंघ छत्र कवि कोमल कमल जिमि बानिक चरनको ॥ २७ ॥ (चौपाई) देखि कुवँरि सब उमहे राई। करि करि गर्व छुयो धनु आई ॥ तानिसकैं नहिं सके उठाई। गये सबनके मुँह कुम्हिलाई ॥ २८ ॥ कौरव सौ बंधव पचिहारे । सबहीके मुख ह्वै गये कारे ॥ धृष्टद्युम्न तब शकुनिहिं देखि। करत धर्षणा कुवँर विशेखि ॥ २९ ॥ (धृष्टद्युम्नउवाच) (सवैया) शूर नहीं शूरन में क्रूर महाक्रूरनमें दुष्टतासों पूरणहै पूर पुरवाईको । मूढ़ महामूढनमें गुणी मंत्र गूढ़नमें पगन आरूढ़नमें संग्रह चवाईको ॥ ऐसो अविवेकीहै कुकेव टेव टेकी जिहि तासों एक येका जौन खोजहै भलाईको। नाहिं वली बलिनमें छली महाछलिन में सुदेखिये न मुख ऐसे कुटिल कसाईको॥३०॥ (दोहा) वारे लाक्षागेह, पांडुपुत्र यहिं जाइ ॥ होतो जीवत पार्थजो, लेतो धनुप चढ़ाइ ॥ ३१ ॥ यन्त्र वार दश वेधतो, महावीर बलवण्ड ॥ सुनि पुनि कोप्यो कर्ण तब, बाढ़्यो कोप अखण्ड ॥ ३२ ॥ (कर्णउवाच) जो मारौं अब द्रुपदसुत, कौन छुड़ावै तोहिं ॥ मेरो मर्मना तूलहै, कानि भूपकी मोहिं ॥ ३३ ॥ (सो०) चल्यो कर्ण धनुपास, वरजि कृष्ण

तब यों कही ॥ छांड़िदेहु यह आश, बेधो जाय न यंत्र यह।३४॥
(दोहा) जो बेधे इक बाणसों, तौ जगमें यश होत ॥ हारे होय
कलंक बहु, और लाजहो गोत ॥३५॥ रूप कपरियाको कियो, अ-
र्जुन वचन प्रकाश ॥ नहीं सभा समर्थ कोउ, बेधै यंत्र अकाश
॥ ३६ ॥ (द्रुपदउवाच) (चौपाई) कैं भूपति कै तपसी होई। राहा
बेध करै जो कोई ॥ ता उर कन्या तेही काल। डारै अमल कमल
की माल ॥ ३७ ॥ तब चलि अर्जुन आगे गयो। धनुष चढ़ाय हा-
थसों लयो ॥ अति कठोर जान्यो धनु जबहीं। भीमसेन मुख चा-
ह्यो तबहीं ॥ ३८ ॥ (दोहा) भीमसेन बलवंत गति, अर्जुनकी प-
हिंचानि ॥ कोमल करि धनु पार्थ कर, दयो बार दश तानि ३९
लेधनु गयो कराह तन, इकटक ताहि निहारि ॥ झांई पाई मीन
की, रह्यो ध्यान उर धारि ॥ ४० दीठ मूंदि मन एक करि, बे-
ध्यो सो शर एक ॥ फोरि गयो इषु दृगनिको, कौतुक करत अने-
क ॥ ४१ ॥ (चौपाई) चूकि गयो नर एक बखानैं। बेधि गयो
शर एकतैं जानै ॥ बाल लिये करमालहि आई। अर्जुनके तब
ही उर नाई ॥ ४२ ॥ देखत कर्ण महारिस भीनो। दारुण कर्म म-
हा इन कीनो ॥ लै तपसी अब याको जैहै, लाज सबै भुवपालन ऐ-
है ॥ ४३ (दोहा) कर्ण चढ़ायो कोपि धनु, देखत सब भूपाल ॥
निरखि शोच उरमें भयो, विकल भई उर बाल ॥ ४४ ॥ (अर्जु-
नउवाच। सवैया) चंद्रमुखी कत शोच करै जिय गर्व हरौ कुरुनं-
दन कोतो।आजु करौं छिनमें रणमें जय युद्ध जुरै यम आशके जोतो
हौं समरत्थ अकेलोइ वे किमि सोदर सूझहि धायकै सोतो। जोन
बधौं तो लजाऊं पिताकहँ अर्जुन नाम कहा इह क्योंतो ॥ ४५ ॥
(दोहा) कोपे दोऊ वीर रण, रह्यो बाण नभ छाइ ॥ लोपे सूरज
तम भयो, उपमा कही न जाइ ॥ ४६ ॥ देख्यो कर्ण प्रचंड रण

पार्थ कोपि ज्यों काल ॥ रुद्रबाण वेध्यो कवच, विकल भयो बेहाल ॥ ४७ ॥ तबहिं कर्ण छांड्यो समर, जय जयकार तिहिकाल ॥ दुर्योधन इत भीमसों, कीनो युद्ध कराल ॥ ४८ ॥ कर्ण-उवाच ) अरे कपरिया कौन तू,मोसों कहि सतभाइ ॥ तेरे शर ऐसे लगैं, ज्यों अर्जुनके घाइ ॥४९॥ यों कहि कर्ण बराइगो, भिरे-भीम भुवराइ ॥ मल्लयुद्ध करि वीर दोउ, थाकिरहे अकुलाय५०॥ ( चौपाई ) बल करि भूपति भीम उछारयो। मल्लयुद्ध करि भूपर डारयो ॥ जय जय कार पार्थ तब करयो। सम्हरयो भीम कोपि तब लरयो ॥ ५१ ॥ मारयो गुरज गिरयो भुवराउ। ठाढ़ो भीम करै नहिं घाउ ॥ चेति फेरि यों कहै नरेशू। तूको सुभट तपीकें भेशू॥५२॥ ( दोहा ) पवनपुत्र अरु पार्थके, ऐसे हुते प्रहार ॥ वैसोई मैं तू लख्यो, बलदीनो करतार॥५३॥(सोरठा ) सहदेवहु तहँ आय, गहि कर लै भीमहिं गयो ॥ द्रुपदसुता सँग लाय, पहुँचे कुन्ती निकट सब ॥ ५४ ॥ ( युधिष्ठिरउवाच। चौपाई ) सुन सुन मात महा सुखदाई। आजु कछू हम भिक्षा पाई ॥ तुम आज्ञा सब बांधव मानै। सो तजि और न चित्तहिं आनै ॥ ५५ ॥ ( कुंत्युवाच । दोहा) पांचौं बंधुनसों तुम्हें, पुत्र आय बहु नेहु ॥ जो कछु पाई भीख तुम, बांटि सकल मिलि लेहु ॥ ५६ ॥ (अर्जुन उवाच) माताको सुनि सुखद त्रिय, वचन न मेट्यो जाइ ॥ मुख जोयो तब पार्थको, पंचाली अकुलाइ ॥ ५७ ॥ निरखी कुन्ती द्रौपदी, मनहींमन पछिताइ ॥ वचन अनैसो मैं कह्यो, पुत्र न सकै नशाइ ॥ ५८ ॥ आये हलधर कृष्ण तहँ, जानत सगरो भाउ ॥ करि कुन्तीकी वन्दना, मिले युधिष्ठिर राउ ॥ ५९ ॥ तब विचारिकै द्रुपद नृप, धृष्टद्युम्न सुत बोलि ॥ आप कपरियाको भये, भेद लेहु सुत खोलि ॥ ६० ॥ ( सुंदरीछंद ) नीच किधौं कोउ

उत्तमहै नर। कै वनमें कि बसै पुर सुंदर ॥ श्रीयदुनंदन भूपतिहै
जहँ। आय दुऱ्यो सुत भूपतिको तहँ ॥ ६१ ॥ वात व्यतीत कहे
भुव भूपति। कृष्ण सुनी बहुधा हरषी मति ॥ पूछत पार्थहि यों
यदुनायक। तैं सुख आजु दयो सुखदायक ॥ ६२ ॥ (दोहा)
राहा वेध कऱ्यो भली, सुनिहो पार्थ सुजान ॥ गर्व नवायो कर्ण-
को, मारे कौरव मान ॥ ६३ ॥ (अर्जुनउवाच। सवैया) कष्ट
पऱ्यो जवहीं जहँ आयके राखी तहीं सब पैज हमारी। मांझ स्व-
यंवर द्रौपदीके अति कर्णहि गर्व बढ़्यो तहँ भारी ॥ जीतिकै वीर
धनंजय धीर सु आजु लई बलकै वर नारी। कीजे कहौ सरतौ के-
हि भांति जो होते सहाय न आय मुरारी ॥ ६४ ॥ (दोहा) भलो
हढ़ानो कर्ण रण, यहै सराहेउ ताइ ॥ भीम कहै कुरुराज हरि, व-
ड़ो वली यह आइ ॥ ६५ ॥ मैं अघवायो युद्धमें, धानि दुर्योधन
राय ॥ हनतो एक निमेषजो, करते सवै सहाय ॥ ६६ ॥ (चौपाई)
धृष्टद्युम्न सवरी गति जानी। कही पितासों सब सुखदानी ॥ वे क्ष-
त्रीकुल उत्तम आहि। नहीं कपरिया जानो ताहि ॥ ६७ ॥ हरि
हलधर तिनपै चलिआये। देत वड़ाई वहु गुण गाये ॥ यह सुनि
भूपति फूल्यो हियो। विधना सव मन भायो कियो ॥ ६८ ॥
(द्रुपदउवाच। चामरछन्द) साजि साजि वाजि राज मत्तदंत गा-
जिकै। चर्म वर्म अस्त्र शस्त्र चीर द्रव्य साजिकै ॥ जायकै अवास
द्वार वस्तु सो रखाइयो। देखिकै तपीनको सुकर्म मर्म पाइयो ॥
॥ ६९ ॥ (दोहा) आयसु दीनो भूपजो, सोई कीनो जाइ ॥ मण्ड-
प छायो विधि सहित, मुक्तन चौक पुराइ ॥ ७० ॥ (गीतिकाछ-
न्द) आइकै तहँ पंच वन्धव सकल सौज निहारियो। नकुल लखि
वाजी सराहे पार्थ धनु टंकारियो ॥ भीम फूल्यो देखि कुंजर ख-
ड्ग सहदेव कर गह्यो। नृपति सव देखत सराहत हाथ तिन कछु-
ना लह्यो ॥ ७१ ॥ देखि या विधि द्वार भूपति परमसुख हिरदै भ-

यो । है देव गन्धर्व यक्ष कोऊ वेष तपसीको लयो ॥ बोलि लीने पार्थ भीतर द्रुपद नृप सुख पाइकै । तवयों कह्यो हँसि भीम जेठो प्रथम व्याहै आइकै ॥ ७२ ॥ सुनि भयो बहु संदेह भूपति नीच कोऊहै महा । पंचजन त्रिय एक व्याहै मूढता वरणो कहा ॥ बोलि पठये व्यास आये कही तिनसों विधि सबै । एक पतिहै धर्म पुत्री कही ऋषिसो यह सबै ॥ ७३ ॥ ( दोहा ) जेठो व्याहै जा त्रियहि, लहुरे की है माय ॥ लहुरेकी त्रिय जेठके, सुता बराबरि आय ॥ ७४ ॥ ( व्यासउवाच ) सोमवंश ये पांडुसुत, एक ज्योति मन एक ॥ पूरब जन्म सुरेश ये, सुनिये सहित विवेक ॥ ७५ ॥ पंचइन्द्र इन वहि जनम, पायो शिव बरदान ॥ पांडु नृपति गृह अवतरे, क्षत्री रूप निधान॥७६॥रवि कन्याहै द्रौपदी, सेये शिव चितलाइ॥पंचकला कै देहु वर,यह वांछा सुखपाइ७७दिव्यदृष्टिकै नृपतिको दरशायो व्यवहार॥दिखै एकै ज्योति तहँ, पंचइन्द्र अवतार ॥७८॥ ( द्रुपदउवाच । चौपाई ) तुमविन को सम्भ्रमाहिं भगावै । तव क्षितिनायक ऋषि गुण गावै ॥ नृप विवाहकी सब विधिठानी । बोलि युधिष्ठिर सब सुखदानी ॥ ७९ ॥ तिनकी भांवरि करि नरनाह । फिरि चारोंका करचो विवाह ॥ दुहूं कुलनकी विधिही जैसी । भांति भांति सब कीनी तैसी ॥ ८० ॥ पंच पुरुषको कन्या दीनी । विदा दाइजो दैकरि कीनी ॥ हय हाथी पट भूषण घने । दासी दास दिये को गने ॥ ८१ ॥ (दोहा) लैदल परिगह गृह चले, द्रुपद फिरे पहुँचाइ ॥ गये हस्तिनापुर सबै, आप सदन सुखपाइ ॥ ८२ ॥ सुनि दुर्योधनके भयो, अंग अंग अति दाह॥ नेक सुहाय न दिवस निशि, चकित चित्त नरनाह ॥ ८३ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछ
त्रसिंहविरचितायांबकदानववधद्रौपदीविवाह
वर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ॥ ९ ॥

( दुर्योधनउवाच । दोहा ) ग्राम धाम अपनो लयो, पांचौ वंधव आय ॥ कहो वंधु कीजै कहा, इनसों कछु न वसाय ॥१॥ वरुण नगरको आदि दै, कीने किते उपाय ॥ तवहूं मुये न पांडुसुत, फेरि प्रकटभे आय ॥ २ ॥ तपी वेष आये हुते, भूप द्रुपद स्थान ॥ हम काहू जाने नहीं, मारे सबके मान ॥ ३ ॥ भीषम विदुर वुलायकै, वूझे मंत्र सुजान ॥ कौन उपाव करैं कहो, सो माति देहु निदान ॥ ४ ॥ ( भीष्मउवाच ) अपकारी तुव वंधु नृप, उनकी कछू न खोरि ॥ महासयानो पवनसुत, अवगुण सहै करोरि ॥ ५ ॥ वरजो अपने सोदरन, अवगुण करैं न कोइ ॥ अति सनेह तुमसों उनहि, ताही दिन नृप होइ ॥ ६ ॥ ( राजोवाच ) दोष लगावतहौ हमैं, उनको भलो सुहाइ ॥ शकुनि कह्यो यह मंत्र तव, वीच वैठिकै आइ ॥ ७ ॥ कत वूझत भीषम विदुर, यहै मानि मन लेहु ॥ जो कछु उनको देशहै, उन्हैं आपु सो देहु ॥ ८ ॥ गयो नृपति धृतराष्ट्रपै, सुनि भूपति यह वात॥शकुनि कह्यो सोई कह्यो, पितुके आगे जात ॥९ ॥ वोलि युधिष्ठिर तव कही, सुनि विनयो सो मानि ॥ रहो इन्द्रपथ जाइकै, आपु ग्राम उर जानि ॥ १० ॥ ( चौपाई ) मानि रजायसु चले नरेश । सुवस इन्द्रपथ कीनो देश ॥ मणि मय खचित वने सव धाम । मनहुं लसत सुरपतिके ग्राम ॥ ११ ॥ फटिक थंभकी जागति ज्योति । होइ सूर किरणनि ते होति ॥ वापी कूप सु नीर तड़ाग । दिशि दिशि दीसत सुन्दर वाग ॥ १२ ॥ कल्पवृक्षसे द्रुम मन मोहैं । फूलैं फलैं छहूं ऋतु सोहैं ॥ चंचल हय आति धाम विराजैं । तमके सुतसे कुंजर गाजैं ॥ १३ ॥ भाट भले विरदावलि गावत । जो मनवांछित सोई पावत ॥ भूप युधिष्ठिर आज्ञा होइ । चारों वंधु करतहैं सोइ ॥ १४ ॥ करत सवै आनँद मनभाये । एक दिवस नारदमुनि आये ॥ आदर करि वह आसन दीनो । तव ऋषि वचन

प्रकट यों कीनो ॥ १५ ॥ तीनिहु लोक जातहों जहां। अति आ-
तिथ्य करत सब तहां ॥ मेरो वचन न मेटै कोइ।जोई कहौं वहैपैहो-
इ ॥ १६॥ (ऋषिरुवाच) तुमहो सोदर पंच सनेह। तरुणि द्रौपदी
है तुम गेह ॥ मिलि सब बंधव यह मनधरो । मो आगे सब वाचा
करो ॥ १७॥ जौलौं बीतिजाँय षटमास। एक रहै द्रौपदी अवास॥
अवधि मांझ दूजो जो जाइ । बारह वर्ष होइ वन ताइ ॥ १८॥
सबही मिलिकै आज्ञा मानी। स्वर्ग सिधाये ऋषि सुखदानी ॥ प्र-
थम नृपतिकी बारी भई। पांचाली शय्यापर गई ॥ १९ ॥ द्वि
जकी सुरभी चोरन लीन्हीं। आय पुकार विप्र तहँ कीन्हीं॥ सु-
नै न कोऊ लगै गुहारि। सो तब थक्यो पुकारि पुकारि ॥ २० ॥
(द्विजउवाच। छप्पै) क्षत्री कुलहि कहाइ आप जग अपयश लाव
त। सुरभी विप्र गुहारि क्यों न तुम पापी धावत ॥ कायरह्वै कित
रहे मूढ़ तुम धामनि गहि गहि। और नजानै नाम रटै यह अर्जुन
कहि कहि ॥ त्रीयकाज सुरभि द्विजकाज जो नहिं इनको उपकरहि
द्विज दोष लगै ता पुरुषको घोर नरकमें सो परहि ॥ २१ ॥ (अर्जु
नउवाच) (दोहा) रहि रहि विप्र सुजान तू, जागनदे नरनाथ ॥
विनती करि तबहीं चलौं, लै कृपाण तुव साथ ॥ २२ ॥ (सोरठा)
धनु न हमारो हाथ, धरो सदनमें विप्र तहँ । द्रुपदसुता नरनाथ,
पौढ़े ताही धाममें ॥ २३ ॥ (तोटकछंद) द्विज एकहु बात न मा-
नतुहै। मुख बैन कुबैनन आनतुहै ॥ रचिकै सब बात बनावन छों-
ड़हु। लहिपाप महा शिर शापहि ओढ़हु ॥ २४ ॥ डरि शापहि
सों अकुलाइ मनै। चितमें द्विजको अपमान गनै ॥ नृपधाम गयो
धनु बाण जहां। दृग ओझिल बांह दई जु तहां ॥ २५ ॥ तबहीं
वरवीर चल्यो धनुलै। मुकरायदई सुरभी बलुलै ॥ ऋषि नारद
बैन धरे मनमें। हित तीरथ वेगि चलो वनमें ॥ २६ ॥ अवलोकि

सुदेव नदी जबहीं । हित मज्जन पत्थ धरयो तबहीं ॥ लखि नाग-सुता लगि दृष्टि रही । अवलोकि तहीं तब बांह गही ॥ २७ ॥ गहि ताहि पतालहि लै सुगई ॥ वह व्याल सुता अति मोहभई ॥ तुमतो बर ईश्वर मोहिं दये । अति निष्ठुर क्यों तुम नाह भये ॥ २८ ॥ ( अर्जुनउवाच ) ऋषि नारदको हम वैन लह्यो । अव या विधि ती-रथ पत्थ गह्यो ॥ व्रतभंग महातिय अंक भरै । वहु तीरथकी हम जात करै ॥ २९ ॥ यह अपने जीमहँ नेम धरौं । फिर तोकहँ सुन्दरि आइ वरौं ॥ इमि व्यालसुता तव वात कहै । इहिभांति नहीं तुम धर्म रहै ॥ ३० ॥ चलिहौ मम वैन नशाइ जवै । पुनि जाय अकारथ धर्म सवै ॥ पुनि तासँग पत्थ विवाह भयो । तहँ केतिक द्योस विराम लयो ॥ ३१ ॥ त्रिय नाम उलूपिहि गर्भ भयो सुत मन्मथ ज्यों अवतार लयो ॥ उर तीरथकी तव शुद्धि भई । कहि पत्थ तवै गहि वाट लई ॥ ३२ ॥ ( उलूपीनागकन्योवाच ) सुनु प्राणपती इक वात कहौं । केहि भांति निहौं कुशलात लहौं । द्रुम दाड़िमको दरशाइ दयो । जव जानहु जू यह सूखि गयो ॥ ३३ ॥ ( दोहा ) तब सँदेहभो प्राणको, कीजौ नागरि नारि ॥ आयो नि-कासि पतालते, तीरथ हेतु विचारि ॥ ३४ ॥ ( सोरठा ) नेमिषार चलि जाय, परसि बनारसको गयो ॥ वाराणसी अन्हाय, गया तृ-प्त कीन्हे पितर ॥ ३५ ॥ ( दोधकछंद ) सागर संगम गंग गयेजू । द्योस किते वनमें वितयेजू ॥ न्हाइ तवै मथुराहि चलेजू । देखत आश्रम कुंड भलेजू ॥ ३६ ॥ न्हाय न ता जलमें नर कोई । जा य लखैं फिरि आवत सोई ॥ विप्रनको लखि पार्थ कही यों । पै ठत कोउ न मध्य कही क्यों ॥ ३७ ॥ ( विप्रउवाच ) यामें जन्-रहैं अति भारी । सो जगजीवनको दुखकारी ॥ पार्थ नहीं क त्रास कऱ्योजू । लै पग ता जलमांझ धऱ्योजू॥ ३८ ॥ आय गह

पग ताक्षण पाहीं । अर्जुनके उर भय कछु नाहीं॥लै जलते वह बाहर आनी । ह्वैगइ सो त्रिय रूप सयानी॥ ३९॥ अर्जुनसों यह बैन कह्योजू।शाप दियो ऋषि पाप गयोजू॥ता जलते तिय पांच कढ़ीयों।मानसरोवर इन्द्रत्रिया ज्यों॥४०॥ (दोहा) पांच त्रियनको मोक्ष करि, चलि अर्जुन वरवीर।तज्यो द्वार मग तब गयो, माणिकपुर रणधीर४१(सो०) त्रिया बाहुबर बाहु, जीत्यो क्षितिमंडल धनो।राजैं तहँ नर नाह, सकल जगतको कामतरु॥४२॥(दोहा) ताके दुहिता इंदुमुखि, चित्रांगदासु नाम ॥ रूप वहिष्क्रम उर्वशी, विज्जुलतासी वाम ॥ ४३ ॥ (सोरठा) कनक बरण तनु ज्योति, लसत नीलपट ओट ज्यों ॥ जगर मगर द्युति होति, मानो घनमें दामिनी॥ ४४ ॥ नाहिं निमिष इकताकि, विकल सकल जिय कल नहीं ॥ रही पार्थ मणिथाकि, करी बसीठी बंदिजन ॥ ४५ ॥ (गीतिकाछंद) जाय नृपको तब जनायो व्याह अर्जुनको भयो । सन्मान दंती दिये बाजी द्रव्य बहु कंचन दयो ॥ चारि वर्षहि रहे ता थल पुत्र इक अर्जुन लह्यो । जाहुँ तीरथ जातको नरनाहसों तिन यों कह्यो ॥ ४६ ॥ नाय माथो भूपको चलि द्वारका नगरी गयो । पाय सुधि आये कृपानिधि दुःख सबके उर भयो ॥ रुक्मिणी दै आदि सब त्रिय ताहि भेंटन आइयो । चली कौतुक हित सुभद्रा निरखि बहु सुख पाइयो ॥ ४७ ॥ (सोरठा) चंचल नैननि ताकि, झीने पट चहुँदिशि लखिन ॥ रही पार्थ गति थाकि, परि फंदा तरफै सफर ॥ ४८ ॥ (दोहा) नख शिख सकल बनी ठनी, करै सकल शृंगार॥ धीर रही नाहिं पार्थउर, व्याकुल तनु न सम्हार ॥ ४९ ॥(चौपाई) तबहिं सुभद्रा अर्जुन देख्यो । अपनो पति करि उरमें लेख्यो ॥ शिवसेवाको यह सब सार । दीजो मोहिं पार्थ भरतार ॥ ५० ॥ यह सब विधि श्रीहरि पहिचानी । तब यह अपने उरमें

आनी ॥गर्भ सुभद्राको यह भयो। जठर वासु अहिदानव लयो॥ ॥८१॥ दीजै पार्थहि मिटे कलंक। श्रीहरि आनी यह बुधि अंक॥ बोलि पार्थसों यह तब कही। बसि तुम मनहिं सुभद्रा रही ॥८२॥ मैं आज्ञा दीनी हरिलेहु। पाछे ह्वैहै अधिक सनेहु ॥ हरी कुवँरि अर्जुन सुख पाय। भई शुद्ध अंतःपुर जाय॥८३॥ (दोहा) कोप भयो बलभद्रको, अब अर्जुन कित जाय॥ लाऊं गहिकै द्वारका, छांड़ौं भीख भँगाय ॥८४॥ कोपि चल्यो सजि सेन बहु बरजे श्रीहरि आइ ॥ को पारथके सरस है, क्यों रण जीत्यो जाइ ॥ ८५ ॥ हारे होय कलंक कुल, जीतेहू यश नाहिं ॥ ताते कोपहि परिहरो, चलो द्वारका जाहिं ॥ ८६ ॥ (बलभद्रउवाच) तेरी यह करतूति सब, कछू न जानी जाय॥ फेरि न कछु उद्यम कियो, बैठिरहे अरगाय ॥ ८७ ॥ आये अर्जुन इन्द्र पथ, भूपति बहु सुख पाइ ॥ लंई सुभद्रा गेहमें, मंगलचार कराइ ॥ ॥ ८८ ॥ पुत्रवधू कुन्ती लखी, बहुविधि करि आनन्द ॥ शुभ लक्षण गुणआगरी, मुख द्युति राकाचन्द ॥ ८९ ॥ (चौ०) यह विचार श्रीहरिजू कर्‍यो। सबही सों ऐसे अनुसर्‍यो ॥ चलौ इन्द्रपथ जैये भाई। जाय पार्थको करें सगाई॥ ६०॥ लीने गज रथ तुरी तुषार। जात रूप भूषण भंडार॥ हरिं हलधर सब संग लिवाई। पहुँचे वेगि इन्द्रपथ आई॥ ६१ ॥ पार्थहि विहँसि सुभद्रा दई। भांवरि पारि रीति सब ठई ॥ हस्ती हय रथ भूषण दीने। याचक सबै अयाचक कीने ॥ ६२॥ (दोहा) करी विदा बलभद्रकी, नगर द्वारका हेत ॥ आपु कृपाकरि हरि रहे, भूपतिके संकेत॥ ६३ ॥ गर्भ सुभद्राको भयो, पुत्र कला जनु चन्द ॥ नाम धर्‍यो अभिमन्यु तब, कीन्ह परम आनन्द॥ ६४ ॥ द्रुपद सुताके पंचसुत, प्रकट भये सुखकारि ॥ मात एक पितु पांच

ते, पांचहुकी अनुहारि ॥ ६५ ॥ दुर्योधन संशय कियो, रची कहा करतार ॥ हते अकेले पंचवे, अव बाढ़्यो परिवार ॥ ६६ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकबिछत्र
सिंहविरचितायां सुभद्राविवाहवर्णनो
नामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

---

( सोरठा ) खेलत पाँसेसार, अर्जुन कृष्ण अनंदसों ॥ डारत दाँव हँकार, अपनो अपनो भापिकै ॥ १ ॥ ( भुजंगप्रयातछंद ) धरयो विप्रको रूप यों अग्नि आये ॥ दुखी दीन ह्वैकै महा रोग छाये ॥ तहाँ आयकै दीन बाणी वखानी । हरो पीर मेरी महादुःखदानी ॥ २ ॥ कहै आग्नि मोको क्षुधा नेक नाहीं । दया आप कीजै महाजीव माहीं ॥ किते यत्न करि इंद्रको विप्र जारयो महाकोपिकै नीरसों बोरि मारयो ॥ ३ ॥ सबै ओरको मैं भरोसो नशायो । चल्योहौं अबै रावरे पास आयो ॥ चरों काननै इंद्रको वीर जैसो । महारोग नाशै करो काज तैसो ॥ ४ ॥ चले कृष्णजू पार्थको संग लीने । वनै जारिवेको सबै काज कीने ॥ तवै आग्निसों पार्थ वाणी वखानी । धनुर्वाण नाहीं सुनो सुःखदानी ॥ ५ ॥ (दोहा ) अक्षय तूण दीनो अगिनि, आप काज पहिचानि ॥ दियो धनुप गांडीव तव, नंदघोप रथ आनि ॥ ६ ॥ साजि दियो रथ अर्जुनहिं, तवहीं श्रीयदुराय ॥ पूरव दिशि पठयो सुभट, पावक साजे जाय ॥ ७ ॥ आप रहे पश्चिम दिशा, छाइ लई दिशि वान॥ जीव जंतु ता विपिनमें, भाजि न पावें जान ॥ ८ ॥ पूरवते साजी अगिनि, अर्जुन परम प्रचंड ॥ दीन शब्द रोवें सवै, सावज़ पक्षि अखंड ॥९॥ जीव पुकारें दीन रट, सुनि सुरपति सुखदाय ॥ तुव वन जारै अगिनि यह, यह कत तोहिंसुहाय॥१०॥प्रलयकालके मेघ जे, ते बोले सुरराय ॥ कोटि छानवे एक सँग, वरसहु वनपर जाय

॥ ११ ॥ उनै जो आये मेघ नभ, तम चारों दिशि छाय ॥ वरसो
है लखि पार्थ तव, लीनो धनुप चढ़ाय ॥ १२ ॥ (सवैया) धाय-
कै पार्थ चढ़ाय लयो धनु छाय लयो वर अंवर वानन । दौरि द-
वागिनि लागि उठी द्रुम जारत शाख समूल सपानन ॥ कोपि म-
हा मघवा वरस्यो कहुँ एकहु वूंदन भीजत कानन । व्योम विलो-
कत अद्भुत कौतुक किन्नर यक्ष चढ़े सुविमानन ॥ १३॥( दोहा )
द्वादश योजनलौं विपिन, परै वूंद नाहिं एक ॥ कोटि छानवे जल-
द मिलि, उद्यम करैं अनेक ॥ १४ ॥ शशा स्यार सावर सुवर,
सेही सिंह सकोच ॥ सारो शुक सोना सवै, सकल शचानन शोच
॥ १५ ॥ चिरा चील्ह चिमगादरें, चातक चक्र चकोर ॥ जरतन
उवरत जीव सव, वचत न काहू ओर॥ १६ ॥ (दंडकछन्द ) धाय
धाय मेघवर छाय छाय क्षिति पर वरपि वरपि हारि भागे भहराइ
कै। झरपि झरपि झर तड़पि तड़पि तहां जित तित नीर गये
ढारि ढहरायकै॥ तरु तरु लागि आगि वरत न उवरत भागि भा-
गि पक्षी पशु वचे न परायकै । छत्र वलवन्त वीर पार्थको अनन्त
वल अगिनि तृपित कियो कानन जरायकै ॥ १७ ॥ ( दोहा )
सुनि सुनि वनकी यह दशा, तव कोप्यो सुरराय ॥ हन्यो वज्र
वाणावली, टूटिपरी खहराय ॥ १८ ॥ ( चौ० ) अर्जुन वाण लये
फिरि छाई।वूंद न परत कहूं वन आई॥ शर पंजर तोरयो दश वार
जोरे पार्थ वहै,आकार॥ १९॥ यहि विधि वन खांडवहि वरायो । भ
ग्यो मयासुर दानव आयो ॥ राखु शरण यह असुर पुकारै । मोहिं
अगिनि यह जारै मारै ॥ २० ॥ दई दिलासा राख्यो सोय । छांड़ि
त्रास तो हतै न कोय॥असुर कहै सुनु पार्थ सयाने। तेरे कर्म न जायँ
वखाने॥२१॥( मायासुरउवाच । दोहा )जितने त्रिभुवनमें असुर, हौं
तिनको श्रुतिधार ॥ जव चाहौ तव आयहौं, करों काज सव सार२२

बिदाकरी अर्जुन सुभट, असुर चल्यो सो धाम ॥ पुरई पावक कामना, सब विधिकै गुणग्राम ॥ २३ ॥ आये सुरपति पुहुमिमें विग्रह सकल नशाय ॥ सुतहि देखि कछु सुख भयो, कछु मनमें पछिताय ॥ २४ ॥ इन्द्र सिधाये सुरपुरी, चले पार्थ गृह आप ॥ चले इन्द्रपथ कृष्णजू, जिनको अमित प्रताप ॥ २५ ॥ निरखि युधिष्ठिर भूप तब, कही परम सुख पाय ॥ श्रीयदुराय प्रतापते, तैं जीत्यो सुरराय ॥ २६ ॥ गहिहै कोऊ धनुष नाहिं, तोको सुनि बलवण्ड ॥ पूरि सुयश धरपर रह्यो, सप्तद्वीप नवखण्ड ॥ २७ ॥ द्वारावतिको तब गये, बिदा भये यदुनाथ ॥ इतभूपतिके निकटही, शोभित बन्धव साथ ॥ २८ ॥ ( युधिष्ठिरउवाच ( सोरठा ) रचिये धाम बनाय, उत्तम दीखे दूरिते ॥ बहुविधि चित्र कराय, धवल नवल कीनी सभा ॥ २९ ॥ ( अर्जुनउवाच । चौपाई ) जो तुम भूपति आयसु पाऊं । नाम मयासुर वेगि बुलाऊं ( राजोवाच ) वेगिहि बंधव ताहि हँकारो । उत्तम उत्तम धाम सँवारो॥३०॥शुद्धि मयासुरकी उर आनी । आयगयो तबहीं सुखदानी ॥ आवतही तिन भूपति देखे । धर्म्मधुरन्धर चित्र विशेखे ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकवि
छत्रसिंहविरचितायांइन्द्रवनखाण्डीवदहनो
नामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इति आदिपर्वसमाप्त॥

---

## अथ सभापर्व प्रारम्भः ॥

( दोहा ) धर्मधुरन्धर तिहि छिनक, धर्मसुवन भुव भूप ॥ कही मयासुर असुरसों, कीजै सभा अनूप ॥ १ ॥ ( नगस्वरूपणी

छन्द ) नवाय शीश वेगिकै। चल्यो सुवीरचेतकै ॥ समुद्र पास
सो गयो । सुधाम शीश कै लयो ॥ २ ॥ ( दोहा ) हिरणा कुश
को सदन सो, लीनो तिन धरि शीश ॥ लैआयो सो इन्द्रपथ, ल-
खि फूले अवनीश ॥ ३ ॥ ( सवैया ) सुन्दर नीले रँगीले खरे
अरु पीरे हरे रचि धाम बनाये। माणिक लालनके बहु जाल
प्रवालनके खचि थम्भ सुहाये ॥ स्वच्छ शिला जनु दीखतनीर
बने चकवा जनु पैरत धाये । है अमरावति ते अति अद्भुत सु
न्दर सदन सबै छविछाये ॥ ४ ॥ ( दण्डकछन्द ) शोभाहीके सार
तहँ फाटक किंवार बने केते द्वार द्वार जिनै देखे बुधि भरमें।
दियेहै कि दियेहै विचारतही भूलि रहे जानिये सनीर पै नीर ना
हीं सरमें॥धामनिके बीचानि दरीचानि मरीचिकानि राजतहै नील-
मणि छत्र वर घरमें। भूपकी सभाकी आभा कौन सों बखानि कहै
ऐसी द्युति नाहीं कहूं इन्द्रके नगरमें ॥ ५ ॥ ( दोहा ) पट दीनेसे
देखिये, दिये न पट तिहि द्वार ॥ जे सरवरहैं नीरयुत, पृथ्वीके
आकार ॥ ६ ॥ मनभायो दैके सबै, गयो मयासुर गेह ॥ भूप-
ति बैठे तिहिं सभा, बन्धुन सहित सनेह ॥ ७ ॥ ( चौपाई ) ऋ-
षि नारद भूपतिपै आये । निरखि सभा बहु विधि गुणगाये ॥ ऐ-
सी सभा न मैं कहुँ देखी । सब ठामनमें उत्तम लेखी ॥ ८ ॥ ( ऋ-
षिरुवाच । सवैया ) किन्नर यक्ष पुरी अवलोकत धर्मपुरी अवलो
कत फीकी । भोगवती अवलोकि सबै सुविलोकी सुरेशपुरी सुर
हीकी ॥ भूपति भूपनके धन धाम विलोकि फिर्‌यो न भई रुचि
जीकी । और सभा न सभा सम लागति रावरीआहि सभा अति
नीकी ॥ ९ ॥ ( राजोवाच । दोहा ) तीन भुवनकी बात सब, जान
तहौ ऋषिराय॥ शुद्धि कहो नृप पांडुकी,मोको सकल सुनाय॥ १०॥
(ऋषिरुवाच । चौपाई ) सुनि अवनीपति बहु सुखदाई । एक बातै

कही नजाई ॥ निरखत पंडुहि भयो सशोकू। भई कुमृत्यु गयो यमलोकू ॥११॥ यज्ञ करो मिटिहै सब दोप । पांडु महीपति पावै मोष ॥ बिलखै भूपति बहुदुख पाइ । दै उपदेश चले ऋषिराइ ॥ १२ ॥ यज्ञराजसू भूपति कीजे ॥ भूप जीति जगमें यश लीजै ॥ यज्ञ विधान सकल अनुसरै। एक रायते रक्षा करै ॥ ॥ १३ ॥ चंदनगोरे क्षितिपति एक। एकते लावै समिध अनेक ॥ सहस्र धेनु सुवरन युत देहु । पितुको तारि जगत् यश लेहु ॥ ॥ १४ ॥ भूपतिके मन चिन्ता आई। जिनके श्रीहरि सदा सहाई ॥ यह कहि नारद स्वर्ग सिधाये। सुमिरे भूपति श्रीहरि आये ॥ १५ ॥ ऋषि उपदेश महीप सुनायो । यज्ञ करो उन मोहिं बतायो ॥ श्रीहरि कह्यो मतो यह कीजे। जीतहि जरासंध यश लीजै ॥ १६ ॥ तिन नरमेधयज्ञहै नाध्यो । ताहित भूपति को गण बांध्यो ॥ एक घाटि सौ अधिपति रोके। परे बंदिते महँ सब शोके ॥ १७ ॥ मारि ताहिहों बंदि मिलाऊं। शोकवंत सब भूप छुटाऊं ॥ भीमसेन अर्जुन सँग लाये। रूप कपरियाके तिन ठाये ॥ ॥ १८ ॥ नगर राजगिरि चलिते गये। दुर्गम ठाम बिलोकत भये॥ मध्य नगरके लागे जान। बाजन बाजे हने निशान ॥ १९ ॥ यज्ञ थली भूपतिहो जहां।लागै जान सबै मिलि तहां ॥रक्षकहुतोमल्ल तिहिं द्वार। बिन बूझे क्यों चले अगार ॥ २० ॥ ( दोहा ) तिन कर पकरचो भीमको, देहि न क्योंहू जान ॥ तुमसों कछु सरवर नहीं, कहत न बनई आन ॥ २१ ॥ भिरचो मल्ल सो भीमसों, कीनो अद्भुत युद्ध ॥ पवनपुत्रके उर हन्यो, मुद्गर बहु करि क्रुद्ध ॥ २२ ॥ लरखराय भूतल गिरचो, पार्थ पछारचो आइ ॥ चेत भीम करि क्रोध अति, हन्यो गुरज उरधाइ ॥ २३ ॥ फेरि बली वर बाहु बल डारी भुजा उखारि ॥ करचो दुष्टसों प्राणबिनु, फटिकशिलासों मा-

रि ॥२४॥ करयो प्रणाम महीपको, यज्ञथलीमें जाइ ॥ देखतही सन्देह करि, यों बोल्यो भुवराइ ॥ २५ ॥ आय तपीके भेष तुम, देखत बहु बलवंड ॥ मांगो जो मनकामना, सोई देहु अखंड ॥ २६ ॥ (श्रीकृष्णउवाच । दोधकछंद) मांगत युद्ध महीपति दीजे । जीमहँ और विचार न कीजे ॥ तीनिहुँमें जो आयसु पावै । सोई तुमसों जूझन आवै ॥ २७ ॥ भूपति कृष्ण तहीं पहिचाने । बैन तबै यहि भांति बखाने ॥ मो संग बार अठारह हाऱ्यो । मैं फिरि तू तब देश निकाऱ्यो ॥ २८ ॥ अब न युद्ध मंडौं सँग तोहीं । तू रणपीठि दिखावहि मोहीं ॥ कोमल गात धनंजय देख्यो । युद्ध न तामहँ चित्तहि लेख्यो ॥ २९ ॥ भीम बड़ो इक युद्धहि सैहै । फेर जुऱ्यो कत यापै जैहै ॥ भूपति रोष महा उर आन्यो । कोपित भीम चढ्यो सुख मान्यो ॥ ३० ॥ (सोरठा) जुरे युद्ध दोउ वीर, मानहुँ गज माते फिरत ॥ शूर समर रणधीर, मनहुँ शिखर दोउ शैलके ॥३१॥ (दोहा) भिरत न कोऊ हारही, दोऊ समर प्रवीन॥लटपटाइ गिरि गिरि उठत,दोऊ रोषन लीन॥३२॥हनी भीम भूपाल शिर,भई गदा द्वै खंड ॥ जरासंध तब क्रोध करि, गह्यो सुभट बल बंड॥३३॥फेरयो गहिकै चरण बिबि,तीनबार भुवपाल॥ फेरि गदा करमें लई, प्रकट्यो वचन कराल ॥ ३४ ॥ (चौपाई) तू जानै कौरव सौ भाई । मोसों तेरी कहा बसाई ॥ कै अब समर छांड़ि भजि जाउ । वज्रपातको ओढ़ौ घाउ ॥ ३५ ॥ यों सुनि पार्थहि चिन्ता आई । कहा होइ जहँ कृष्ण सहाई ॥ फिर रण कोपे दोऊ वीर । रणमें उद्यत कोप गँभीर॥३६॥जरासंध बहु बल करि धाइ । लत्ता हन्यो पवनसुत आइ॥ सप्तपैंड़पै परयो सुजाइ । रही विकलता मुखपै छाइ ॥३७॥ जयजय करिकै उठ्यो सम्हारि । हरिको मुख निरख्यो सुखकारि॥झुकिकै कृष्ण दई तब सैन।तिनका

फारचो देखत नैन ॥ ३८ ॥ समुझि सैन कोप्यो बलवीर । दूनों ह्वैगयो फूलि शरीर ॥ जरासंध भुव पटकि पछारि । कीनो फांक वीचते फारि ॥ ३९ ॥ ( सोरठा ) सगरे राजा राय, मुकराये तब वंदिते ॥ छूटिचले सुखपाय, ज्यों पक्षी पिंजरानिते ॥ ४० ॥ ( राजोवाच । छंद )जय जय नँदनंदन दुष्टनिकंदन जय जगवंदन गरुड़ासन । भवभयमोचन जन मन रोचन दुःख विमोचन भवनाशन ॥ सज्जन मनरंजन दुष्टनिकंदन परमनिरंजन जगकर्त्ता । कष्टनिवारचो दुष्टसंहारचो मारचो लोकनिके हर्त्ता ॥ ४१ ॥ ( दोहा ) हरिगुण गावत भूप सब, गये आपने धाम ॥ जरासंध सुत बोलिकैं, दुरासंध वहि नाम ॥ ४२ ॥ नगर राजगिरिको तिलक, कीनो ताके शीश । अर्जुन भीमहि संगलै, चले तिहूंपुर ईश ॥४३॥( दुरासंधउवाच । छप्पय ) कैटभमधु मुरहरन धरन नख अग्र शैलवर। हिरणाकुश हिरण्याक्ष हरण प्रभु रदन धरणिधर ॥ शंखासुर संहरण हरण हरि अंध कवंधहि । खर दूषण वपु भंजि गंजि भंजन दशकंधहि ॥ गजराज काज प्रहलाद ध्रुव दयासिंधु अशरण शरण । नमो नमो कविछत्र कहि, नारायण जगउद्धरण ॥ ४४ ॥ ( दोहा ) चलि हरि आये इन्द्रपथ, ताको दैकैं राज ॥ भूप युधिष्ठिर सुखभयो, भये सकल मनकाज ॥ ४५ ( श्रीकृष्णउवाच ) पठवो बंधव आपने, जीतहिं चहुँदिशि देश ॥ गये कृष्ण तब द्वारका, यह कहिकै उपदेश ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्र विरचितायांजरासंधयुद्ध वर्णनो नामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

---

(दोहा ) करी कृपा चारों अनुज, भूपति लये बुलाय ॥ कह्यो करो सब दिग्विजय, दिशि दिशि जीतहु जाय ॥१॥ भीमसेन पूरब

गये, उत्तर पार्थ सुजान ॥ सहदेव दक्षिण गये, पश्चिम नकुल प-
यान ॥ २ ॥ दिशि दिशि जीते जाय सब, आने बांधि महीप ॥
कीरतिसों छाई धरा, थल थल जंबूद्वीप ॥ ३ ॥ ( चौपाई ) सब
बंधव नृप अंक मिलाये । समदे नकुल द्वारका धाये ॥ करी विन-
य कृष्णहि लै आये । नगर इन्द्रपथ भये बधाये ॥ ४ ॥ आये दु-
र्योधन गुणग्राम । अतुल रूप ताको संग्राम ॥ कीन्हे सकल यज्ञके
साज । बोले तहां सकल ऋषिराज ॥ ५ ॥ ( छप्पय ) आये गौत-
म व्यास अत्रि पाराशर आये । विश्वामित्र वशिष्ठ गर्ग शृंगीऋषि
धाये ॥ वाल्मीकि दुर्वास जासु मति पार न लहिये । बहुरि सुभ-
द्रक द्रोण और नारदमुनि कहिये ॥ कविछत्र अठासीसहस ऋषि,
सकल जुरे भूपति भवन । यज्ञस्थल लागे सबै, वेदध्वनि द्विज उ-
च्चरन ॥ ६ ॥ ( सोरठा ) भूपतिके चित चाव,रक्षक कीन्हे सब नृ-
पति ॥ दुर्योधन भुवराव, भंडारी शोभित तहां ॥ ७ ॥ ( दोहा )
जहां चाहिये एक तहँ, द्वै दुर्योधन दानि ॥ रीतो होय भँडार ज्यों,
सो राजै मत जानि ॥ ८ ॥ जितो लुटावै भूप धन, दूनो दूनो होइ
देखि भर्‍यो भंडार तब, भूलि रह्यो सब कोइ ॥ ९ ॥ ( चौ० )
कीन्हों गर्व युधिष्ठिरराय । कौन आजु मेरी सरि आय॥धरिहौं जा-
को भर्‍यो भँडार।यहै सकल वस्तुनमें सार ॥१०॥ कीन्हो गर्व कृ-
ष्ण जब जान्यो । यह विचार अपने उर आन्यो ॥ कर्णराय भंडारी
कीनो । वेगि द्रव्य ह्वैगयो जो हीनो॥११॥ ( सोरठा ) चिंता करि न-
रनाह, विश्वंभरसों यों कही ॥ सुनिये त्रिभुवन नाह, रीतो भयो
भँडार सब ॥ १२ ॥ ( कृष्णउवाच । दोहा ) तैं कत कीनो
गर्वमन, कमल हस्त कुरुराय॥घटै घटावै द्रव्य नाहिं, जो वह देइ
लुटाय ॥१२ ॥ दंत कर्णके काँपि उठे, शंके गिरिवर मेरु ॥ है
कुरुराजहि कर्णको, इतनोई नृप फेरु ॥ १४ ॥ आज्ञा अर्जुन

को दई, लंकाको तुम जाउ ॥ जीति लंकपतिको सुभट, बहु सुवरण लैआउ ॥ १५ ॥ (सवैया) धायकै जाय चढ़ाय लयो धनु सागर वाणन छाय लियोई । कौरवमें बहु बाहु पराक्रम मारग लंकको वीर कियोई ॥ पायकै गर्व निशाचरनाथको घोर अदण्ड नदण्ड दियोई । को सरि दीजिये देव अदेवसो पार्थ समान न और बिगोई ॥ १६ ॥ (दोहा) आन्यो कंचन वीर बहु, फिरि यह कियो विचार ॥ कौरव कर फिरि सौंपि यो, धर्मपुत्र भण्डार ॥ १७ ॥ (सुन्दरीछंद) पूजन यज्ञ कऱ्यो भुवराय । भीम कह्यो उठिकै सुखदाय । आयसु देहु सबै अब नीके । कौनके भाल करें अब टीको ॥ १८ ॥ (दोहा) यह बनिआई सबनको, कही सुखद सुखपाय ॥ प्रथम तिलक हरि शिर करो, ये प्रभु त्रिभुवनराय ॥ १९ ॥ बैठ्यो तहँ शिशुपाल नृप, झुकि बोल्यो यों बैन ॥ कहो कहांको भूप यह, कहत तिलकाशिरदैन ॥ २० ॥ (चौपाई) गैया राखत जन्म सिरानो । ताको नाम कहा मुख आनो ॥ कौरव आदि महीपति जहां । हरिको देत मान कत तहां ॥ २१ ॥ जरासन्ध छलिकै जिन माऱ्यो । मैंहूं अब यह मंत्र विचाऱ्यो ॥ मारौं याहि वैरसो लेहुँ । रहन गेह हौं याहि न देहु ॥ २२ ॥ द्रव्य इतेमें चाह्यो और । अलका गये पार्त्थ शिरमौर ॥ जीत्यो धन प्रति तिन बरजाइ । मिल्यो पार्थको माथोनाइ ॥ २३ ॥ कंचन मणि गण माणिक जाल । दीनी चन्द्रवदन बहु बाल ॥ तब सुखसदन वीर चलिआयो । नृपति युधिष्ठिर हरि सुख पायो ॥ २४ ॥ जबतें टीको हरिशिर सुन्यो । करि करि क्रोध शीश तिन धुन्यो ॥ बार बार अनउत्तर कहै । श्रीपति सन्मुख बैठ्यो सहै ॥ २५ ॥ (सवैया) एक कही दश बीस कही कहि सौहूते जाविधि आगरि

नाखी । देव अदेव सबै नरदेव जिते क्षितिदेव भये सब साखी ॥ जेतिक चूक क्षमीहुती कृष्ण जहीं मर्य्यादहुते बाढ़ि भाखी ॥ चक्रहन्यो शिशुपालके शीश सभामहँ रंचक कानि न राखी ॥ २६ ॥ ( दोहा ) सबके उर शंका भई, सब कंपे भुवराय ॥ जय जय जय भाषत भये, जय जय त्रिभुवनराय ॥ २७ ॥ प्रथम तिलक हरि शिरकऱ्यो, फिरि भूपनके शीश ॥ विधिसों सब पहिरायकै, कीने विदा क्षितीश ॥ २८॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकाविछ
त्रसिंहविराचितायां शिशुपालवधवर्णनो
नामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

---

( सोरठा ) दुर्योधन भुवराय, न्योति बुलाये इन्द्रपथ ॥ कर्ण सहित सुखपाय, आदर कीनो धर्मसुत ॥ १ ॥ सुन्दर मंदिर चाहि भूलिरहे कौरव सकल ॥ जनु अमरावति आहि, आखंडलसो धर्मसुत ॥ २ ॥ ( दोहा ) जब भीतरको नृप चले, सरवरसों चितचाहि ॥ जानत अमित अगाध जल पै तहँ नीर न आहि ॥३॥ वसन उठाये आप नृप, धऱ्यो फटिकके ताल ॥ गयो गर्व सो सदन लखि, विकल भयो बेहाल ॥ ४ ॥ आगे सरवर बावरी, नीर न परै लखाय ॥ जाने भूमि धोखो पऱ्यो जल अगाधमें जाय ॥ ५ ॥ दरवाजे दीने हुते, उज्ज्वल फटिक कपाट ॥ तिहि मारग अवलोकिकै, लीनी सोई बाट ॥ ६ ॥ ता मारग कुरुराजके, लागी चोट लिलाट । तब आगे सहदेव है, नृपहि गहाई बाट ॥ ७ ॥ निरखि भूपकी यह दशा, पंच वीर मुसकाइ ॥ अरु हँसि द्रुपदसुता गई, रह्यो नृपति मुरझाइ ॥ ८॥ हिमकरहत जैसे नलिन, त्यों भूपति मुख देखि ॥ उतराये भीजे

वसन, आदर कियो विशेखि ॥ ९ ॥ बैठारे भूपति सभा, धर्मपुत्र तिहि काल ॥ रच्यो अखारो नृत्यको, बोलि गुणिनके जाल॥१०॥ आनी अर्जुन जीतिकै, उत्तर ते जे बाल ॥ भीम जीति पूरब लई, ते आईं तिहि काल ॥ ११ ॥ जीति नकुल सहदेव वर, आनीहीं जे नारि ॥ नृत्यहेतु आगे नृपति, ते सब लई हँकारि ॥ १२ ॥ (सोरठा ) नृत्यत त्रिय बहु भाय, सुरपति रति उलथा सहित ॥ उपमा दीजे काय, मानहुं रंभा उरवशी ॥१३॥ ( दोहा ) इंद्रपुरी सम सो सभा, धर्मपुत्र सुरराय । नृतति त्रिया मनु मेनका, तिलोत्तमा छविछाय ॥ १४ ॥ ( चौपाई ) देखि सभा आये ज्योनार । जेंवत षटरस भोजन सार ॥ भांति भांतिके व्यँजन आने । नाम कहाँलगि कौन बखाने ॥ १५ ॥ जेइँ उठे तव दीनो पान । गये गेह तब बुद्धिनिधान ॥ महामलिन मन कछु न सुहाइ । सब बंधुनसों कह्यो बुलाइ ॥ १६ ॥ पांडुसुतनको कह मत कीजै । कहो तो देशनिकारो दीजै ॥ भारत सब विधि मेरो मान । देश तजें सो करो सयान ॥ १७ ॥ चलि धृतराष्ट्र भूपपै गये । पांडुसुतन बहुधा दुख दये ॥ तब जैहै पितु मोर अंदेश । पांचों वीर न छूटै देश ॥ १८ ॥ ( धृतराष्ट्रउवाच । दोहा ) जब पांचो बालक हते, दीने देश निकारि ॥ भ्रमत फिरे वन बीथिकानि, रह्यो सहाय मुरारि ॥ १९ ॥ मन न विचारो दुष्टता, कारज भलो न एहु ॥ कहो मानि मेरो उन्हें, जीवदान किन देहु ॥ २० ॥ यों सुनिके उतरे नृपति, आये अपने गेह ॥ शकुनि दुशासन कर्ण तहँ, बोले सहित सनेह ॥ २१ ॥ दुष्ट चौकरी जुरि तहाँ, कहैं विचारि विचारि ॥ सो कीजै पांचौ अनुज दीजै देश निकारि ॥२२॥ ( शकुनीउवाच ) मंत्र विचारयो एक मैं, आप मानि मन लेहु ॥ भूप हरावो यूपमें, देशनिकारो देहु ॥ २३ ॥ जो विरंचि उनको

करै; यहि थल आनि सहाउ ॥ भूपं जीतिहौ आप वै, लहै न क्योंहूं
दाउ ॥ २४ ॥ ( दोधकछन्द ) मंत्र महीपतिके मन मान्यो ॥ सत्य
यहीं अपने उर आन्यो ॥ भीपम कर्ण तहां तव बोले । बुद्धि कपा-
ट हृदयके खोले ॥ २५ ॥ द्रोणहि आदि सबै चलिआये । भेद स-
बै तिनको समुझाये॥ऐसो मंत्र कछू प्रतिपारो । भूप युधिष्ठिर देश
निकारो ॥ २६ ॥ ( विदुरउवाच । दोहा ) जौलगि उनको भूप सु-
नं, त्रिभुवननाथ सहाय । तौलगि काहूकी कछू, कैसेहू न वसाय
॥ २७ ॥ ( द्रोणउवाच । दण्डकछन्द ) देखिकै परायो कछु कीजिये
न अनरायो दाये विना दायो किये ह्वैहै महा हानिये । ऐसो अ-
विवेकी है कुटेव टेव टेकी जिहि नेकहु तो त्रास हरिजूको उर आनिये।
सांजतुहै काज तू कसाई अघदाई कैसो ह्वैहै अपयश यह नीके
उर आनिये । बंधुनसों कीजे मोह द्रोह उर कोह छोंड़ो कीरति
कलित जाते भूतल बखानिये ॥ २८ ॥ ( दोहा ) परद्रोही अरु
कृतघनी, ते अन्तक सब होत ॥ दीजत नरक अघोरमें, जिते सँ-
हारत गोत ॥ २९ ॥ सुनि नृपमहि उत्तर दियो, वचन कह्यो
गुरु थोर ॥ शरसोंलाग्यो चित्तमें चितये भीषम ओर ॥ ३० ॥
( भीष्मउवाच ) खेल कपटको नाश जो, ह्वैहै मूल विनाश ॥
बाढै बंधु विरोध अति, ह्वैहै जग उपहाश ॥३१॥ ( छप्पय ) विनशै
सोई धर्म जहाँ पाखंडहि कीजै । विनशै सोई प्रीति जहां हांसी
मन दीजै ॥ विनशै सोई पुत्र लाड़ माता पितु मंडहि । विन-
शै सोई वंश आप कुल करनी छंडहि ॥ विनशै सो धन वेगही,
धन होते जो ऋण करै । छत्र सुमति मारग चलो, कुमति कल-
ह नृप परिहरै ॥ ३२ ॥ विनशै सोई विप्र जौनपट कर्महिं साजै ।
विनशै मन्दिर वहै निकट रावरके राजै ॥ विनशै सोई कथा जो न
तामहँ मन दीजै । विनशै सोई काज जहां पर आशा कीजै

विनशै नारि प्रचंड गृह, सकल कुमति गति परिहरो। शिष सीख भूप भीषम कहै, सुनृप ताहि मंडन करो॥ ३३॥ विनशै सोई वधिक दया जाके उर आवै। विनशै तस्कर वहै भेद आपनो बतावै॥ विनशै सोई नेह कपट जो उरमें धरिये। विनशै स्वइ व्यवहार नीचसों जो कछु करिये॥ विनशै द्विज सेवा करत विनशै द्रुम सरिता निकट। इहि भांति सीख भीषम कहै समझहु भूपति आप घट॥ ३४॥ (दोहा) तजो यूपकी वाणि सव, अयश वढ़ै संसार॥ ह्वैहै कलह कुटुम्बमें, रचि राखी करतार॥ ३५॥ धर्मपुत्रको भूप जो, आयसु देहु वुलाय॥ वचन न मेटै रावको, उठि काननको जाय॥३६॥ भीषमके यों वचन सुनि, भूपति गयो अवास॥ आप वुलाये अनुज सव, हितकै अपने पास॥ ३७॥ पाय रजायसु शकुनि तव, रच्यो कपटको यूप॥ निरखि कर्ण रविपुत्रको, यों वोल्यो तव भूप॥३८॥ आनहुँ वोलि युधिष्ठिरहि, यों वोल्यो सुख पाइ॥ कपट यूपमैं खेलिकै, लेहौं ताहि हराइ॥ ॥ ३९॥ कर्ण गयो चलि इन्द्रपथ, कह्यो भूप सों जाइ॥ वोलत खेलत यूपसों, दुर्योधन सुखपाइ॥ ४०॥ चले भूप यह वात सुनि, भीमसेन सुधि पाइ॥ जाहु हस्तिनापुर नहीं, कही नृपतिसों जाइ॥ ४१॥ (युधिष्ठिरउवाच। चौपाई) युवा युद्धको क्षत्री भागै। ताको ध्रुव अपयश वहु लागै॥ कह्यो भीम सो करयो न कान। चले भूप तव वुद्धिनिधान॥ ४२॥ चले अनुज सव कसि किरवार। चली द्रौपदी लिये भंडार॥ साहन लै परिमेह सिधाये। नगर हस्तिनापुर चलि आये॥ ४३॥ कोश एक आगे ह्वै लिये। आदरभाव अमित विधि किये॥ हितकारि लिये सभामें आये। निरखत विदुर महादुख पाये॥ ४४॥ तव आरंभ यूपको कीनो। वोलि शकुनि दुश्शासन लीनो॥ भीषम विदुर भाव यह

जान्यो । कपटखेल अपने उर आन्यो ॥ ४५ ॥ भूप युधिष्ठिरको
तब देखि । दावें रदन करज सविशेखि ॥ चकृत भये चहूंघा
ताके । भूपति डर कछु कहि नहिं साके ॥ ४६ ॥ कपट खेलको
कियो विचार । कौरव जीते सब भंडार ॥ राजपाट आपन पौहा-
र्यो । विलख वदन भये बंधव चार्यो ॥ ४७ ॥ फूल्यो दुर्योधन
भुवराई । लयो दुशासन निकट बुलाई ॥ तुरत जाइ नहिं लागै
बार । ल्याव द्रौपदी सभा मझार ॥ ४८ ॥ इतनी बात कहत उठि
धायो । तुरत द्रुपदतनया ढिग आयो ॥ अजुगत बात आयकै
भाखी । ताकी नेक कानि नहिं राखी ॥ ४९ ॥ ( दुश्शासनउवाच ।
( दोहा ) जीत्यो कौरव यूपमें, पुरी युधिष्ठिर हारि ॥ तू दुर्योधन
मन वसी, चलि मेरे सँग नारि ॥५०॥ ( द्रौपदीउवाच । दंडकछंद )
सत्त धर्म पुत्रके असत्त कहूं देखिये न जाके सत्त तेज क्षिति छोरै
लौं मढ़ति है । तामें तू अधर्म कहि भाषतु है दुश्शासन कीरति
नशत अपकीरति बढ़ति है ॥ करको करज दावि दंतनिमें वारवार
मींजि मींजि हाथ ऐसे द्रौपदी रढ़ति है । मानके समान जेठे बंधुकी
वधूसो अब ऐसी क्यों अनैसी तेरे मुखते कढ़ति है ॥ ५१ ॥
( दोहा ) दुश्शासन फिरि तहँ गयो, कह्यो नृपतिसों जाइ ॥
द्रुपदसुताकी विनय बहु, रही गेह भुवराइ ॥ ५२ ॥ ( दुर्योध-
नउवाच ) दुश्शासन जिय मारिहौं, लाउ द्रौपदी बाल ॥
पकरि केश नहिं कानि करि, आनि सभा उत्ताल ॥ ५३ ॥
जाय गहे कर केश तिन, कीन्हीं कछू न कानि ॥ सभा
मांझ आनी पकरि, आई मनन गलानि ॥ ५४ ॥ ( दुर्यो
धनउवाच ) बैठि त्रिया मो जंघपर, मनमानी तू नारि ॥ मैं-
तुम हित सगरी तजी, निज तरुणी सुखकारि ॥ ५५ ॥ ( द्रौ-
पदीउवाच ) पापी बोलि न दुष्टता, कछु न अबूझत बैन ॥ रा-

ज पाट मिटि जायगो, इहिविधि कछू रहैन ॥ ५६ ॥ झुकि भूप-
ति तव यों कह्यो, लेहु दुकूल उतारि । सुनि दुश्शासनमो
निकट, आइनग्यो वहु नारि ॥ ५७ ॥ ( चौपाई ) दुश्शासन क-
र पकऱ्यो चीर । भीमसेन थरहऱ्यो शरीर ॥ कही युधिष्ठिरसों
अकुलाई ॥ आयसु दै त्रिय लेहुँ छुटाई ॥५८॥ राजा उत्तर कछू न
दीनो । तव दुश्शासन उद्यम कीनो ॥ पांचाली सुमिरै अकुलाई ।
दीनवंधु किन करौ सहाई ॥ ५९ ॥ (द्रौपदिउवाच । दंडकछन्द )
जिनकी पति नीकी तिन पतिनकी तुम पतिखोवत पतित उधारन
गति कैसेकै कसाईकी।नीरा अकुलाइ कही फाटिहू न जाय मही कै
से जात सही दुष्टदुश्शासन दाईकी ॥ कीनी कर्ण कानि नहीं द्रोण
न गिलानि करी तजी पहिचानि वानि भीषम भलाईकी । जैसे
प्रहलादकाज कीनोहै इलाज त्योंहीं कीजै महाराज आज लाजशर-
नाईकी॥६०॥( सवैया , काहूकि वार सह्यो गिरिभार सुकाहुकि वार
अँगार चवाये।काहुकि वार विदारि अदेव सुकाहूकिवार पयादेइ धाये
काहू किवारको पाहन फारि कढ़े नरसिंहके रूपहि आये।दीनके ना-
थ कहाइकै वेगुण वार हमारी कहां विसराये ॥ ६१ ॥ ( दन्डकछन्द)
मेटी कुलरीति मानो जानि पहिचानि नहीं द्रौपदी सभामें छोर ग
ह्यो आनि चीरको । रानी अकुलाय कही फाटिहू नजाय मही
हूजिये सहाय धऱ्यो ध्यान यदुवीरको ॥ दीननकी लाज राखि लीजे
महाराज आप और कहौं कासों कोऊ हीरकोन । पीरकोजोरसाथ दु
श्शासन हाथ थाके पाथर ज्यों छूव्यो नहीं क्योंहूं पट रंचक शरी
रको ॥ ६२ ॥ साहस सहित वल वाहु सविलाइगये भीषम समे-
त कोऊ वोलत न तटको । व्यालसे विशाल कालदंडते कराल
वाहु ऐंचि साक्यो पट दुश्शासनसे भटको ॥ आश छांड़ि पति-
की निराश वाम टेरे हरि, करुणानिधान शब्द सुन्यो दीनरटको।

देहते कढ़्योहै पट कोटिन मढ़्योहै छत्र द्रौपदी दुकूल बढ़्यो जैसे सूत नटको ॥ ६३ ॥ भीमसेन भीर तजी पारथहू पीर तजी धीर तजी धर्मपुत्र सत्तमें दृढ़ाइकै । भीषमहू बानि तजी द्रोण पहिचानि तजी कर्ण तजी आनि रह्यो विदुर बराइकै ॥ बुद्धि कुरुराज तजी दुश्शासन लाज तजी ऐंचि हान्यो पट खरोई खिसायकै । बार ना लगाई करी द्रौपदीकी भाई तहां सांकरे सहाई यदुराई भये आइकै ॥ ६४ ॥ खैंचत पिरानी बाहैं कीना जू अनेक आहैं दोऊ कर मींजि दुश्शासन दयातुहै । भोडरके कत्ता भोजपत्तरके पत्तालौं पट उघरत जातु पै न उघरत गातुहै ॥ दुर्जन दुश्शासन क्षमा न गहतु क्षण क्षण छीजत वसन पै न उघरतु गातुहै । द्रुपदसुताको चीर पुजवत यादववीर अंगते तरंग सों अम्बर होत जातुहै ॥ ६५ ॥ ( दोहा ) पट झटकत भटकी नहीं, भुजबल भये अनाथ ॥ आपु न लीनो ग्यारहों, वसन रूप यदुनाथ ॥६६॥ ऐंचि ऐंचि हान्यो पटहि, दुश्शासन अकुलाइ ॥ थाकि रह्यो करि बल घनो, रही सभा अरगाइ ॥ ६७ ॥ ( भीमसेनउवाच ) दंडकछन्द ) मारिडारों रणमें निकारिडारौं गर्व सर्व मूल ते उखारिडारों बाहू दुश्शासनके । तोरिडारों जानु जंघ दुष्ट दुर्योधनके तनक करोंना श्रम दुष्टनके तनके ॥ चाहि सुख नृपति युधिष्ठिरजू भीम कहै आयसु जो देहु तौ तौ सारों काज मनके । हमहिं अछत खल चीरऐंचो द्रौपदीको धम कत हिये मांझ जैसे घाउ घनके ॥ ६८ ॥ ( दोहा ) द्रुपदसुताको इन गह्यो, जिहिकर दुष्ट दुकूल॥हौंवरबाहु उखारिहौं, तेई भुजा समूल॥६९॥ द्रुपदसुतहि अन्हवायहौं, ताके रुधिर मँझार ॥ भीम पैज बोली यहै, इहि विधि बारंबार ॥ ७० ॥ (भीमसेनउवाच) सांचहु जाये अंधके, अछत दृगनि जे अन्ध ॥ चलै कहाधौं एककी, वैसेही वस

बन्ध ॥ ७१ ॥ महिमा करुणासिन्धुकी, देखतहैं खल नैन ॥ भये लटपटे मूढ़ भुज, ऐंचत पट उवरैन ॥ ७२ ॥ शाप देहिं त्रिय क्रोधकरि, सभा भस्म ह्वै जाइ ॥ होनी होय सो क्यों मिटै, देखि देखि पछिताइ ॥ ७३ ॥ सुनी सकल धृतराष्ट्र यह, तत्क्षणही अकुलाय ॥ धर्मपुत्र युत द्रौपदी, लीने निकट बुलाइ ॥ ७४ ॥ समाधान सन्तोष करि, दीन्हे गेह पठाइ ॥ पहुँचे त्रियंयुत इन्द्रपथ, पांचौ बांधव आइ ॥ ७५ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्र विरचितायां द्रौपदीअक्षयदुकूलवर्णनोनाम षोड़शोऽध्यायः ॥ १६ ॥

---

(चौपाई) दुर्योधन सब अनुज बुलाइ । तिनसों कही वात अकुलाइ॥कहा हमारे जीते होइवै सुख विलसत हैं सब कोइ॥१॥ऐसो मन्त्र कछू अब कीजे । उनकी सकल संपदा छीजै॥पांचों अनुजन देश निकासि।तब ह्वैहै सुखकी बहुरासि ॥ २ ॥ पठयो कर्ण इन्द्रपथ गयो। खेलन द्यूत सँदेशा दयो॥चलन युधिष्ठिर भूपति कह्यो।न्योत पठाये जाइ नरह्यो ॥ ३ ॥ खेल कपटको ते सब जानैं । कही भीमकी चित्त न आनैं ॥ चलिकै नरपति पहुँचे जाइ । आदर कीनो कौरवराइ ॥ ४ ॥ खेल कपटको तब तिन गन्यो । कपटमहा अपने चित अन्यो ॥ अभय कीजिये वचन दृढ़ाय । जो हारै सो वनको जाय ॥ ५ ॥ बांचा बंधु दुहूंमिलि कीनो । द्यूत खेलमें तब मन दीनो ॥ हारचो राजयुधिष्ठिर भूप । हारचो सिंहन पाट अनूप ॥ ६ ॥ हारचो देश सहित भण्डार । हारचो गज बाजिनको दार॥ प्रफुलित ह्वै दुर्योधन कही । राजपाट सब हारी मही ॥ ७ ॥ बारह वर्ष जाय वन रहो । गिरि गह्वरके सब दुख सहो ॥ ८॥ (दोहा)

वर्ष तेरहीं जाय दुरि, जो हम लेहिं निहारि ॥ फिर करि द्वादश व,
पैंको, देहैं तुम्हैं निकारि ॥ ९ ॥ ( भीमसेनउवाच ) कपट द्यूत
इन खेलिकै, कानन दीनो वास ॥ पाय रजायसु हों करों, कौरव
कुलको नास ॥ १० ॥ नृपता लेहुँ छिड़ाइकै, करौं राजभुवईश ॥
करै सकल जगवन्दना, छत्र धरो किन शीश ॥ ११ ॥ ( राजोवा
च ) नल दमयन्ती की कथा, भूप कही समुझाय ॥ द्वादश वर्ष
विपिन रहि, राज्य करैंगे आय ॥१२॥ ( अर्जुनउवाच ) मोको आ-
यसु देहु जो, राज छांड़ि सब लेहु ॥ सकल परेखो जाय मिटि, नृप-
ता विप्रन देहु ॥ १३ ॥ मिटै परेखो चित्तको, दूजे ह्वैहै धर्म ॥ आ-
यसु देहु कृपालु ह्वै, यहै करौं हौं कर्म ॥१४॥ ( राजोवाच । छप्पय
धन्य धन्य तू पार्थ खण्ड खण्डन यश कीनो।धन्य धन्य भुजदण्ड क-
र्यो सुरपति बल हीनो॥धन्य धन्य तव पाणि कोपि धनु करत यु-
क्त शर।धन्य धनुर्द्धर धीर दियो विधिना तोकहँ वर।कवि छत्र नकी-
जै रोप मन तुव सरवरि कहु को कराहि ॥ शंकत दश दिगपाल धर
सुथर थर थर थर थर हराहि॥१५॥ ( दोहा ) विप्रनको यह दान नहिं
देहु पंथ वलिवण्ड ॥ वारह वर्ष व्यतीत करि, करिहैं राज्य अखण्ड
॥१६॥ ( सहदेवउवाच ) हतौं अन्धसुत अनुज सब, यह मेरे जिय
आज ॥ आप वचन प्रतिपालिये, वनहिं चलो महराज ॥ १७ ॥
राजसिंहासन द्रव्य सब, साहन अरु भंडार ॥ रखवारो ह्वै राखिहौं,
कीजै यही विचार ॥ १८ ॥ विपिन दुखी जनि होहु नृप, मोसों
सेवक पाइ ॥ अन्न द्रव्य युत भूषणन, देहौं वन पहुँचाइ ॥ १९ ॥
( राजोउवाच । चौपाई ) तेरो पौरुष हौं सब जानों । अतिहि शूर
तनु कहा वखानों ॥ पै निज वचन हमारो मानि । फेरि राज्य करि-
हैं हम आनि ॥ २० ॥ नकुल परजर्यो यों हठि भाखै । कौरव
मारों को अब राखै ॥ आज्ञा देहु भूमि भरतार । हतौं अनुज सब

लगै न वार ॥ २१ ॥ हारी पुहुमि सुनीचे धरों । तरकी धरती ऊपर करों ॥ तापर बैठि राज्य नृप कीजै । सकल अरिन ऊपर पगु दीजै ॥ २२ ॥ ( दोहा ) नकुल निवारयो नृपति तव, योंकहि वारंवार ॥ तोसों बली न और भुव, जानै सब संसार ॥ २३ ॥ गहि ठोढ़ी नरनाथ तब, लघु बंधव समुझाय ॥ तबै इन्द्रपथ धाममें, पहुँचे सब जन आय ॥ २४ ॥ ( राजोवाच ) तेरह वर्ष विपिन बसि फेरि आय हैं धाम ॥ क्रोध नहीं कोऊ करो, मनसा वाचा काम ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह
विरचितायांराजायुधिष्ठिर दुर्योधनद्यूत वर्णनो
नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

---

## अथ वनपर्व।

( गीतिकाछन्द ) राजचिह्न तजे युधिष्ठिर भूप सब वनको चले। चतुर भ्राता संग लीन्हे हुते शूर भले भले ॥ मातु राखी विदुरके गृह हेतु बहुविधि जानिकै। राखी सुभद्रा पुत्र युत पुर-द्वारकामें आनिकै ॥ १ ॥ द्रौपदीके पंचसुत नृप द्रुपद ढिग ते राखियो। पंचबंधव द्रुपदतनया सहित वन अभिलापियो ॥ छत्र पाट धरे सिंहासन सदनमें सुख पायकै। भूप रथ चढ़ि बंधुयुत कानन चले अकुलायकै ॥ २ ॥ चलतहीं यक असुर मारग विपि-नको तब रोकियो। विकट घट अति रदन दीरघ भीमसेन विलो-कियो ॥ गदायुद्धहि छांड़िकै बलवंत रथ तजि धायकै। मल्लयुद्ध कियो बली बहु दुष्ट अंकहि लायकै ॥ ३ ॥ भूमि गाडि संहारि राक्षस विपिनको तब पगुधरयो। लख्यो वन अति सघन द्रुम बहु

ांतिकै वहु फल फरचो ॥ ललित ललित लवंग लतिका कलित
करना सोहिये । वेलि वल्ली वहुचमेली जुही युत मन मोहिये॥ ४ ॥
( छप्पय ) सोहत तरुवर तालकेलि करनार अमृत फल । सोहत
कंजन युक्त किते सरवर जल निर्मल ॥ सोहत निर्झर झरत सुथल
थल सहित अखंडित । सोहत लतिका फूल भँवर पुंजनि सुख
मंडित ॥ शीतल मंद सुगन्ध तहँ वहत पवन अति सुखद गति ।
कविछत्र रम्य अवनी सुथल निरखत होत प्रसन्न मति ॥ ५ ॥
( भुजंगप्रयातछन्द ) तहां आपहीको कुटी भूप कीनी । विलोकी
वनी ता थलीकी नवीनी ॥ छहूं कालके वृक्ष फूले फले हैं । तहां
कोकिला आदि पक्षी भले हैं ॥ ६ ॥ तपी विप्र केते तहां चित्त
मोहैं । मनों देव देवेश लोकेश सोहैं ॥ मयूरी चहूं ओर ते नृत्य
साजैं । कहूं हंसिनी हंसनीके विराजैं ॥ ७ ॥ ( दोहा ) तपसी मर्कट
देखि ऋषि, कीने नृपति प्रणाम ॥ भांति भांति करि वन्दना, कही
नृपति गुणग्राम ॥ ८ ॥ मोकहँ होहु प्रसन्न ऋषि, देउ कछू उप-
देश ॥ दीनो सूरज मंत्र तव, सुनि सुख भयो नरेश ॥ ९ ॥ जाप्यो
भूप तुरंतही, प्रकट भयो भू भानु ॥ कही भूपसों मंत्रको, सुनिये
सकल विधानु ॥ १० ॥ प्रात न्हाइकै भूप तुम, जपियो मंत्रहि
नित्त ॥ पटरस भोजन द्योस प्रति, पहुँचाऊं तुव हित्त ॥ ११ ॥
( चौपाई ) यहि विधि भोजन प्रतिदिनपावैं । आपनु जेवें
ऋषिन जिवावैं ॥ ऋषि सब भूपतिको समुझावैं । तिहि वन रह-
त न कछु दुख पावैं ॥ १२ ॥ करि दुष्टता जयद्रथ आयो । हर-
ण द्रुपदतनयाको धायो ॥ सक्यो ननेक युद्धको कांधि । ली-
नो भीमसेन सो बांधि ॥ १३ ॥ ( भीमसेनउवाच ) आज्ञा मोहिं
गुसाईं दीजै । बांधि दुष्ट अवहीं मारीजै ॥ भूप कहै ऐसी नहिं की-
जै । बांधि मारि अपयश क्यों लीजै ॥ १४ ॥ पाय रजायसु सो

मुकरायो। लज्जित ह्वै गृहको चलिआयो॥ करी तपस्या शिवकी जाय। केती वर्ष तन मन लाय॥ १५॥ (दोहा) बहुदिन बीते करत तप, भये महेश उदार॥ मांगु मांगु तोकहँ दयो, सोई वर सुखकार॥ १६॥ (जयद्रथउवाच) भीम धनंजय धर्मसुत, सहदेव नकुल कुमार॥ मीचु लहैं मो हाथते, यह इच्छा मोसार॥ १७॥ (शिवउवाच) विष्णुभक्त वे पंचजन, तिनसों कहा बसाय॥ एक दिवस वे पांडुसुत, जीति जयद्रथ जाय॥ १८॥ (चौ०) जवहिं जयद्रथ यह वर पायो। चलि दुर्योधनके ढिग आयो॥ आप पराजय सब अनुसरी। तब मैं शिवकी सेवा करी॥ १९॥ एक दिवस दीनो शिव मोहिं। जीति जाय मैं दीनो तोहिं॥ सुनिकै दुर्योधन बहु लाज्यो। दुःख भयो मन आनँद भाज्यो॥ २०॥ (दोहा) धर्मधुरन्धर धर्मसुत, विहरत वनमें जानि॥ भेंव्यो चाहत पुत्रको, धर्मराज सुखदानि॥ २१॥ लहै अकेलो पुत्र नाहिं, तव दानव बपु साजि॥ शिर अकाश पगु धरणिसो, देखि उव्यो गल गाजि॥ २२॥ ऊपर लैगयो नृपतिको, बाण धनंजय तानि॥ घायल करि ता दुष्टको, कानि भूप उर आनि॥ २३॥ सिंहनाद लौ भीम तहँ, गरजि उव्यो किलकारि॥ गिर्‍यो असुर भुव आयकै, ज्यों मुरहत्यो मुरारि॥ २४॥ (सोरठा) कह्यो व्यास ऋषिराय, अर्जुनसों उपदेश तब॥ सेवो ईश्वर जाय, मन वच कायिक नेमसों॥ २५॥ (दोहा) रुद्रबाण लहि रुद्रपै, कहै पार्थ सतिभाउ॥ त्रिभुवन साईं करि कृपा, अमरपुरी दरशाउ॥ २६॥ तव ईश्वर आज्ञा दई, कुसुम विमान चढ़ाय॥ दरशायो सब अमरपुर, भेंव्यो तहँ सुरराय॥ २७॥ चित्रसेन गन्धर्वसों, प्रीति बढ़ी बहुभाय॥ नृत्य नाद तव अर्जुनै, विद्या दई सिखाय॥२८॥ पार्थ रिझायो इ-

न्द्र बहु, सातो स्वर तब गाय ॥ नृत्य कियो सुर तरुणि तब, ना-जन विविध बजाय ॥२९॥ ( सुन्दरीछन्द ) अर्जुनकी बहुधा हरषी मति । तासे देव प्रसन्न भयो अति ॥ ईश्वर को सब धाम दिखावत । देखत पार्थ महासुख पावत ॥ ३० ॥ विष्णुपुरी अवलोकि सबै तहँ । देखीजाय विरंचिपुरी जहँ ॥ इन्द्रपुरी महँ मंदिर राजत । सुन्दर रूप नियुक्त विराजत ॥ ३१ ॥ ( सवैया ) सुन्दर मन्दिर कञ्चनके मणि नील कँगूरनि सों छविछाये । लाल मनोहर माणिक जाल, खचे सितखंभ विचित्र सुहाये ॥ विद्रुम मुक्त अमौलिकसों, प्रति द्वारन वन्दनवार बँधाये । सूर प्रभासी अभा कबि छत्र विलोकिके पार्थ हिये सुख पाये ॥ ३२ ॥ ( चौपाई ) कहि गन्धर्व अचम्भव एह । काहेते सूनो यह गेह ॥ किहि पुर मन्दिर रच्यो बनाय । किहि हित तज्यो सुकहु समुझाय ॥ ३३ ॥ ( चित्रसेन गंधर्वउवाच ) तालबरण दानव यहि नाम । तिहि सुर जीत्यो यह संग्राम ॥ वाके त्रास धाम यह तज्यो । आखंडल दूजो गृह सज्यो ॥ ३४ ॥ सुनिकै पार्थहि चिंता भई । सहसनैनपै आज्ञा लई ॥ कीनो रण दानवसों जाई । वह रण जुज्यो घोर दल लाई ॥ ३५ ॥ ( दोहा ) ॥ तालबरणकी सब चमू, मारत लगी न वार ॥ कहौं कहांलगि युद्धकी, बाढ़ै कथा अपार ॥३६॥ ( छप्पय ) करत अमित गति युद्ध लड़त दानव बल जान्यो । इंद्रपुत्र शिवबाण कोपिकै तब-संधान्यो ॥ रुण्ड मुण्ड कटि बांह जानु जंघा कर टूटे । एकहि बाण निदान सर्व सेना बल लूटे ॥ भयभीत शेष हति असुर गण, सब तजि रण बल दुरिगये ॥ जय युद्ध पार्थ करि बाहुबल, तन प्रसन्न आनन्द हिये ॥ ३७ ॥ ( दोहा ) इन्द्रहि सुबस बसायकै, सुचिते करि तिहि धाम ॥ लहि आज्ञा आयो पुहुमि, जीति असुर

संग्राम ॥ ३८ ॥ (चौपाई) आय युधिष्ठिरके पद वन्दे । बंधव सुनत सकल आनन्दे ॥ (राजोवाच) तोसों तुही काहि सरि दीजै। सुर नर कौन बराबरि कीजै ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्र
सिंह विरचितायांअर्जुनविजयवर्णनो
नामअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

---

(नाराचछन्द) तबै नरेश धर्मपुत्र संग बंधुलै भले। निकेत नारि द्रौपदी महाअरण्यमें चले॥लखे तहां अनेक पुष्प स्वर्ण वर्ण देखिकै । सबै सुगन्ध फूलमें नवीन हैं विशेषिकै ॥ १ ॥ उठाय द्रौपदी लये सराहि ताहि यों कहै । मँगायलेहु भीमसेन पुष्प ये जहां लहै ॥ (भीमसेनउवाच) उड़ाय पौन ह्यां परे कहां सुनारि पाइयो।न जानिये दिशा सुकौन कौन ओर धाइये॥२॥ (द्रौपद्युवाच) विलोकि देह आपनी विचार क्यों न तू कहै । विना अनेक यत्नते नशूर कोय यों लहै ॥ कहां प्रसून हेतुते विचार चित्तमें कियो । न देहि मोहिं आनिसो कठोरहै महा हियो ॥ ३ ॥ (दोहा) गदा लई तब भीम कर, अनबोले अकुलाय ॥ उत्तर दिशि गिरि कंद-रन, कानन पहुँच्यो जाय ॥ ४ ॥ बैठि वीर गिरि शिखरपर, उच्यो महा गलगाजि । पावस घन गरज्यो मनो, चले सिंह सुनि भाजि ॥५॥ गिरि गह्वर मग सघन द्रुम, ठाढ़े गुहा पहार ॥ सुनत नाद हनुमंत तब, आयगयो तिहि वार ॥ ६ ॥ किये युद्ध कपिरूप तब, परयो तहां विच आइ ॥ अवलोक्यो सो भीम तब सकै नवाट छुटाइ ॥ ७ ॥ (चौपाई) तारी दैदै भीम डरावै । वानरके मन कछू न आवै ॥ झुकि झुकिकै वह तिन ललकारयो। छुटै न मारग पचि पचि हारयो ॥ ८ ॥ (भीमसेनउवाच) मारग

छांड़ि कहतहौं तोहिं । लांघत जीवहि लज्जा मोहिं ॥ मेरे
वचन परयो जो रहै । आपुन कियो आपुही लहै ॥ ९ ॥ ( हनुमं-
तउवाच ) हौं अशक्त बहु भांति निहारो।तुम समर्थ इत उत गहिडा
रो॥भीमसेन बल करि करि हारयो । मर्कट टरयो न क्योंहू टारयो ॥
॥ १० ॥ तब तिन बहुविधि स्तुति लाई । सत्य कहौ तुम कोहौ
भाई ॥ असुर सुरेश कि गंध्रव कोई । सांची बात कहौ तुम सोई॥
॥ ११ ॥ गर्व हमारो सब विधि भाग्यो । दौरि भीम तब चरणन
लाग्यो ॥ अब जनि कपट हियेमें राखौ । अपनो भेद सकल
विधि भाखौ ॥ १२ ॥ ( हनुमंतउवाच ) हनूमानहै मेरो नाम ।
चहौ सु पुजऊं तुव मनकाम ॥ सुनते भीम उठ्यो अकुलाय ।
चरण कमल तिन वंदे जाय ॥ १३ ॥ ( दोहा ) ॥ भूलि-
गर्व मनमें कर्यो, क्षमियो मो अपराधु ॥ सदा चूक ति-
नकी क्षमै, जो जन साधु असाधु ॥ १४ ॥ लीनी लंका रूप जिहि
सो वपु दे दरशाय ॥ कही युधिष्ठिर भूपसो, जिनके मन पछिता-
य ॥ १५ ॥ मूंदत आंखैं भीमके, कीनो रूप कराल ॥ पग धरती
आकाश शिर, निरखत भीम विहाल ॥ १६ ॥ ( भीमसेनउवाच
देखिसकौं यह वपु नहीं, विकल होत मम देह ॥ ताते दर-
शावो वहै, निज शरीर करि नेह ॥ १७ ॥ निज मूरति हनुमंतकी,
दरशाई सो वाट ॥ पठयो हित करिकै तहां, हुते कमल जिहि
घाट ॥ १८ ॥ ( भीमसेनउवाच ) दुर्योधन करि दुष्टता, लीने द्यूत
हराय ॥ द्वादश वर्ष वन लह्यो, पहुंचे यहि थल आय ॥ १९ ।
( दोधकछंद ) युद्ध महा उनसों अब ह्वैहै । जीतिहि सो धरणी अ
व पैहै ॥ आप कृपा करिकै चलि आवैं । बैठि ध्वजा गलगाज
नावैं ॥ २० ॥ होय सहायक छाहहिं कीजे । तौ वर जीति सबै
लीजै ॥ वैन सुन्यो हित जबै जबैजू । बांह दई हनुमंत तबैजू॥२.

नाय चल्यो शिर सो सर देख्यो। उत्तमके जंन युक्त विशेख्यो॥ गंध्रव रक्षकदेखि घनेजू। यों तिनसों तब भीम भनेजू ॥ २२ ॥ (दोहा) आज्ञा देहु कृपालु है, लहौं प्रसूनन धाय॥ झुकि गंधर्व कही यहै, तू कत नियरो जाय॥ २३ ॥ बरबट सर तर पैठिकै, लीनो बीड़ा बांधि॥ रक्षक दौरे धनुष गहि, तीक्षण बाणनि सांधि। ॥ २४ ॥ कमलफूल द्रुम तर धरे, शिरते तरे उतारि॥ कोपि गदासों एक संग, गयो करोरिक मारि॥ २५ ॥ मुद्गर फरसा शक्ति शर, भागे किन्नर डारि॥ आनि कमल दीने सकल, प्रिया पानि सुखकारि॥ २६ ॥ (युधिष्ठिरउवाच) तोसों जुरै न युद्ध में, किन्नर यक्षक कोइ॥ तोहींते मन कामना, सब विधि पूरण होइ॥ २७॥ (त्रोटकछन्द) जबहीं बहुद्योस व्यतीत भये। वन माहिं अखेटक भीम गये॥ पुनि दीरघ पन्नग एक लह्यो। तिनि दौरि तबै पशु आइ गह्यो॥ २८॥ (दोधकछंद) भीम बली न छुड़ावत छूट्यो।हारि रह्यो बल दीरघ टूट्यो। मारि गदा अहिको शिर तोरी। ताकहँ नेक सक्यो नहिं मोरी॥ २९॥ बीति गये दश बासर ताही। बाट तहांलगि भूपति चाही॥ बंधुनसों मिलि कानन देख्यो। सर्प ग्रस्यो तब भीम विशेख्यो॥ ३०॥ अर्जुनसों अहि बाणनि मारचो। दौरि खड्ग सहदेव प्रहारचो॥ भूप कहो कत पन्नग मारो। देवनको अवतार विचारो॥ ३१॥ नागनोष नृपको संताप। सर्प भयो सुनि विप्रन शाप। ऐसो जंतु आहि यह कोइ। तासों याहि प्रहार न होइ। ॥ ३२॥ भीमसेन बल करि करि हारचो। सो कत मरत तुम्हारो मारचो॥ कीनो पन्नग जय जयकार। जान्यो भूप धर्म अवतार॥ ३३॥ (सर्पउवाच। दोहा) तब पुरखाहीं भूप सुनु, नागवोप मो नाम। विप्रदोष दुर्गति भई, भयो सर्प गुणग्राम॥ ३४॥ अपनी नृपतामें महा, यह कीनो अप-

राध ॥ लियो द्रव्य सब द्विजनको, दीनो दण्ड अगाध
॥ ३५ ॥ मोकहँ दीनो शाप तिन, पायो यह अवतार ॥ तब वि-
नयो कर जोरिकै, कब पाऊं सुखसार ॥ ३६ ॥ कही द्विजन ज-
ब पुहुमिमें, होइ धर्म अवतार ॥ तब लहिहौ शुभ गति नृपति,ता
हि परसि तिहि बार ॥ ३७ ॥ (चौपाई) छुवत युधिष्ठिर मिटिग-
यो दोष । पायो नागवोस नृप मोष ॥ छांड़ि भीम भयो अन्त-
र्द्धान । आयो बन्धव निज अस्थान ॥ ३८ ॥ सबहीके मन आनँ-
द भयो । शोक द्रौपदी उरको गयो ॥ पांडुपुत्र वनमें ब्योपरहीं -
वनफल खाइ अहेरो करहीं ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछ
त्रसिंहविरचितायांराजानागघोषमोक्षवर्णनो
नामएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

---

(दोहा) दुर्योधन बैठ्यो सभा, बन्धु सहित सुख पाइ ॥ पां-
डु पुत्र पांचो तबै, हियरा करके आइ ॥ १ ॥ कर्ण दुश्शासन श-
कुनि तब, बोलि लिये सुख पाइ ॥ मोमन आई सो करौं, अव-
र न कछू उपाइ ॥ २ ॥ (सवैया) बूझतहैं सबही दुर्योधन बुद्धि
उठी यह मों उरहींतैं । शुद्धि लहै न पितामह भीषम जाइ युधि-
ष्टिर भूपहि जीतैं ॥ लेहिंगे वे सब देश भँडार सबै धन आल
ख औधि व्यतीतैं । साजि चले चतुरंग चमू सब बन्धुन
जीति न कुंज कुटीतैं ॥ ३ ॥ (दोहा) मानि रजायसु शास तिन
साजे दल चतुरङ्ग ॥ चले भूप करि दुष्टता, कर्ण दुश्शासन स
ङ्ग ॥ ४ ॥ गिरि गौहर मग देखिकै, लख्यो घोर वन जाइ ॥ चि
त्रसेन गन्धर्व तब, रोपित पहुँच्यो आइ ॥ ५ ॥ बांधे विधिकी
ससों, दुर्योधन भुवपाल । मन वच क्रम बहु कर्ण नृप, कीनो

कराल ॥ ६ ॥ (सुन्दरीछन्द) कर्ण महीपति कोप करचोवर। पूरिलियो वर वाणन अम्बर। गन्ध्रव बोलि उच्यो तिनसों हँसि। कौन छुटावहि भूप लयो ग्रसि ॥ ७ ॥ (गंधर्वउवाच) देवनसों रण तू कत ठानहि। मानव युद्ध नहीं उर आनहि ॥ गाजत कर्ण सुवाणन छांड़तु। होत कछू नहिं पौरुष मांड़तु ॥ ८ ॥ (दोहा) श्रवण कुलाहल पार्थ सुनि, आयो शर धनु साजि ॥ निरखि बँधे दुर्योधनै, बली उच्यो रण गाजि ॥ ९ ॥ (अर्जुनउवाच। चौपाई) जो बांध्यो दुर्योधन राज। कहै पार्थ तौ हमको लाज ॥ यद्यपि हमको मारन आयो। अपना कियो आप फल पायो ॥ १० तबहिं पार्थ विनवै गलगाजि। तू मौपै कत उबरै भाजि ॥ छांड़ि राय जो चाहै जियो। नातरु वेधतुहौं तव हियो ॥ ११ ॥ (गन्धर्वउवाच) (दोहा) दुर्योधन करि दुष्टता, आयो तुव वध काज ॥ अबल अकेले जानि वन, उर कछु धरी नलाज ॥ १२ ॥ मित्रभाव उरमें धरचो, तो बांध्यो भुवराय ॥ खोलि पाश सौंप्यो नृपति, अर्जुनकर सुख पाय ॥ १३ ॥ छूट्यो मृग ज्यों वधिकते, यों भूपति उर जानि ॥ दियो रजायसु धर्मसुत, बिदा करहु सुखमानि ॥ १४ ॥ (अर्जुनउवाच) आजु भये तुमते उऋण, यों कहि समदेराय ॥ बिलखि वदन युत कर्ण तव, चले सदन दुख पाय ॥ १५ ॥ (चौपाई) जैसी करै सु तैसी पावै, ओछी ताके ओछी आवै ॥ परहित कूप जो खोदै कोई। निश्चय गिरिहै तामें सोई ॥ १६ ॥ (दोहा) मलिन भूप आये सदन, निशि दिन कछु न सुहाय ॥ लखि लखि पुरवासी सबै, यों तव करत चवाय ॥ १७ ॥ (पुरवासीउवाच) गये विपिन करि दुष्टता, धर्मपुत्र वध काज ॥ बांधिलये गन्धर्व नृप, उपजी दल उर लाज ॥ १८ ॥ कुलहि कलंक विचारिकै, पार्थ उच्यो अकुलाइ ॥ त्रास दिखायो गन्ध्रवै, लीनो भूप छुटाइ ॥ १९ ॥ गय

ताकिहे दुष्टता-, गई जीवकी आश ॥ पार्थ छुड़ाये जानिकै, बैठे मलिन अवास ॥ २० ॥ हुते जहां नृप धर्मसुत, धर्मराज तहँ आइ ॥ देखत सत्याकर दयो, माया मृग मुकराइ ॥ २१ ॥ आप विप्रको रूप धारि, आयो भूपति पास ॥ कह्यो देहु मृग पकरिकै, यह पुजओ मों आस ॥ २२ ॥ तुम क्षत्री हौ विप्रहौं, यह टारो मों आरि ॥ तौ सीजे मो काज सब, सिंह जाइगो मारि ॥ २३ ॥ (दोधकछन्द) बंधव पांच तबै उठिधाये ॥ काननमें मृगके ढिग आये ॥ दूरि कहूँ कहुँ सूझत नेरो। हाथ चढ़ैन फिरै कहुँ घेरो ॥ २४ लागि तृषा बल थाकि रहेहैं ॥ क्लेश भये नहिं जात कहेहैं ॥ पर्वतपै चढ़िकै तब हेरैं। देखत सूझ परयो जल नेरै ॥ २५ ॥(दोहा) नकुल गये तहँ अम्ब हित, लीनो भरि करि नीर ॥ भइ अकाशवाणी तहां, चकित भयो सुनि धीर ॥ २६ ॥ (चौपाई) मेरे बूझे उत्तर देहि। जब तू नीर आपु कर लेहि ॥ कह्यो न ताको इन कछु मान्यो। नकुल नीर तब बाहिर आन्यो ॥ २७ ॥ प्राणन तजिगये ताकी काय। चिंता करी युधिष्ठिर राय ॥ सहदेव धाइ नीर हित गयो। विधिवाही तिनहूं जी दयो ॥ २८ ॥ अर्जुन भीम गये जल पास। लियो अम्ब भरिकै सुविलास ॥ फिरि सो शब्द अकाशहि भयो। उत्तर ताहि न तिनहूं दयो ॥ २९ ॥ मृतक परे ता जलकी पारि। गये युधिष्ठिर भूप विचारि ॥ नीर जहाँ भरि अंजुलि लयो। सोई शब्द अकाशहि भयो ॥ ३० ॥ (आकाशवाणीउवाच) मैं बूझौं तू उत्तर देहि। पाछे देव नीर भरिलेहि ॥ धर्म विवाद सकल तिन ठयो। भूप सत्य तब उत्तर दयो ॥ ३१ ॥ (सवैया) लाभ कहा गुणवंतनको संग हानि कहा जु समौ वितयेते। दुःख कहा जड़मूढ़की संगति सुःख कहा बुधिवन्त भयेते ॥ ज्ञान कहा अवलोकै न आतम ध्यान कहा विषयान

चहेते। प्रीतमको पति आहि सबै त्रिय शीलवती नितकै चितयेते ॥ ३२ ॥ (चौपाई) कह्यो धर्म हौं रीझ्यो तोहिं। प्रीति भई उर अंतर मोहिं॥अब तेरे जो मनमें भावै।वर मांगै सो मोपै पावै॥३३॥ (राजोवाच। दोहा) चारो वीर मरे परे, ते अब देहु जिवाइ॥ और कछू नहिं कामना, यहै करौ सुखदाइ॥ ३४॥ (धर्मउवाच) जोई चाहै चारिमें, सोई देहुं जिवाइ॥ और न जीवै तीनमें, निश्चय जानो राइ॥ ३५॥ (चौपाई) साईं अब कीजे सतिभाव। कही भूप सहदेव जियाव॥ फेरि भई ऊरधमें वानी। वात भूप तुम मिथ्या मानी॥ अर्जुन भीम वीर मा जाये। कहि काहेते वे न बताये (राजोवाच) निज वीरनकी पकरों वाँह। अयश होय अति धरणी मांह॥ ३६॥ ताते सहदेव देउ जिवाय॥ मिथ्या वचन न भाष्यो जाइ॥ रीझ्यो धर्म देह धरिआयो। सत्यवंत भूपति उर लायो॥ ३७॥ तेरो पिता धर्महो आय। अबै देउहौं सबै जिवाय॥ अमृत सों छिरक जिवाये चारि।कही सुनो सुत सब सुखकारि॥३८॥ बारह वर्ष गये वन वीति। चलियो व्यास करी जिहि रीति॥ धर्मराइ कहि स्वर्ग सिधाये। पांचों बंधु कुटी महँ आये॥ ३९॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्र सिंहविरचितायांभीमराजादुर्योधनमानभंग वर्णनोनामविंशोऽध्यायः॥ २०॥

---

## अथ विराटपर्व।

(दोहा) धर्मसुवन भुव भूप तब, सुमिरे श्रीऋषिव्यास॥ आय गये तिहि ठामही, करन सकल दुख नास॥ १॥ (राजोवाच) (चामरछन्द) बुद्धिदै ऋषीश मोहिं जायकै कहां रहैं। सुःखसों रहैं जहां समूह वस्तु को लहैं॥ शोध अंधपुत्र शुद्धिरंचको नपावही।

ठाम सो हमें ऋपीश करिं कृपा बतावही ॥ २ ॥ (व्यासउवाच) और तो दिशान भूप रावरे दुरोदहीं । जाउ जू विराट्देश सुःख पाइहो तहीं ॥ चारि वर्णके हिये तहां सदा दया रहै। गुप्त होउ जाइकै ऋपीश बात यों कहै ॥ ३ ॥ (दोहा) तब ऋपीशको वचन सुनि, कीनो नृप परमान ॥ तब विचारि कीनो यहै, सब गुण ज्ञान निधान ॥ ४ ॥ (चौ०) जै ऋपिनाम भूपको भाख्यो । नाम जयंत भीमको राख्यो ॥ विजय बृहन्नल अर्जुन नाम । सहदेव ग्वाल भयो गुणग्राम ॥ ५ ॥ बाहुक अश्वनि नकुल कुमार । यों कहिकै ऋपि कियो विचार ॥ छांड़ि गर्व सेवक ज्यों सेव । कीजो मन मारे तुम देव ॥ ६ ॥ (व्यासकीशिक्षा। सवैया) क्रोध तजो हो विरोध तजो अरु गर्व तजो तुम धाम पराये। आयसु पाइ करो सब धाय सुजाय रहो सब आप दुराये ॥ ऊंचोरु नीचो कहै कोउ आयकै सोउ सुनै रहियो शिरनाये। शोच विमोचन राजिवनैन सदा रहियो तिनसों चित लाये॥७ (सोरठा) चलियो तेही छांह, जब जैसो समयो लखो ॥ गर्व नहीं मनमांह, नेकहु भूप विचारिये ॥ ८ ॥ (दोहा) यहि विधिकै बहु सीखदै, गये व्यास ऋपि धाम ॥ सोई मनुहिरदे लह्यो, मनसा वाचा काम ॥ ९ ॥ पाइ सीख भूपाल तब, वनते भये उचाट ॥ पांचों बन्धव करि क्षमा, आये नगर विराट ॥ १० ॥ मृतक पुरुषसों वेगिहो, आयुध बांधे धाय ॥ नगर निकट तरुवर समी, तापर राख्यो जाय ॥ ११ ॥ निरखि ग्वाल ता थल कह्यो, याहि छुवै जो आइ॥ वर्षदिवस लौं मृतक यह, ताकहुँ खैहै धाइ ॥ १२ ॥ (चौपाई) यह कहिकै ग्वालनि बौराई। आप तु चले नगरको राई ॥ पैठत नगर शकुन भये घने।सहदेवसों भूपति यों भने ॥ १३ ॥ (राजोवाच) कैसे शकुन होत सुखकारि। सो तुम बन्धव कहौ विचारि ॥

ऐसे लक्षण मैं पहिचाने । ह्वैहैं काज सकल मनमाने ॥ १४ ॥ ( सहदेवउवाच । सवैया ) बाल खिलावहिं बालकको सुत स्तन पान करै सुरभीको । सुखमें बास सिरावहुगे सब होयगो काज महीपति जीको ॥ लीलगयो दिशि वाम चिकारि कछू यह मो उर लागत फीको । केतिक काल व्यतीत भये तब शोच उठै कछु विग्रह हीको ॥ १५ ॥ ( चौपाई ) पुरमें बन्धव चारौ रहे । राजसभा चलि भूपति गहे ॥ द्विजके रूप करौ तीकिये । सोहत द्वादश तिलकनि दिये ॥ १६ ॥ उठि विराट निरखत शिरनायो । को तू विप्र कहांते आयो ॥ दै अशीष यों विनवै राय । धर्मसुवनको वरुवा आय ॥ १७ ॥ गिरि गह्वर वे डुरिगे पांचो । मोसों बैन कह्यो यह सांचो ॥ जाहु विराट महीपति पास । रहियो तहां सुखी सविलास ॥ १८ ॥ धर्मपुत्र तुव पास पठायो । ताते निकट तुम्हारे आयो ॥ सुनि भूपति कीनो सनमान । बैठो मुनि गुणज्ञान निधान ॥ १९ ॥ ( राजोवाच ) जै ऋषि नाम व्यास मुनि भाख्यो । सुनि क्षितिपति बहु आदर राख्यो ॥ अर्द्धासन बैठ्यो तब भूप । शिरपर तान्यो छत्र अनूप ॥ २० ॥ फिरिकै आयो भीम कुमार । आय भूपको कियो जुहार ॥ दीरघ तनु दीरघ भुजदंड । निरखत कौतुक भयो अखंड ॥ २१ ॥ ( विराटउवाच । दोहा ) किततै आये कौन तुम, काह तिहारो नाम ॥ कौन जाति किहि हेतु तुम, आये मेरे धाम । ॥ २२ ॥ ( भीमसेनउवाच । गीतिकाछन्द ) व्यास नाम जयन्त भाष्यो पाण्डु सुतको स्वारहौं । सर्वदा करतो तहां बहु भीमको जु अहारहौं ॥ दया करते रचत भोजन हौं सलोने। अति घने। अति सुगंधित स्वच्छ व्यंजन सकल षटरस सों सने ॥२३॥ रीझि रीझि नरेश दिन प्रति देत पट भूषण घने । राखते बहु मान मेरो अनुज सरवर को गने ॥ हे विराट उदार हित करि वचन अमृत भाखियो।

हेतसों बहु मान करिकै निकट अपने राखियो ॥२४ ॥( दोहा ) निरख्यो सरवरि भीमकी, भूपति ताकी देह ॥ वैसो बली विचारिकै, ढिग राख्यो करि नेह ॥ २५ ॥ फिरि अर्जुन नटराज ह्वै, कीनो तियको रूप ॥ कंकण किंकिणि आदिदै, सजि आभरण अनूप ॥ २६ ॥ सिंदुरशीश तमोरमुख, मेंहदीयुत शुभपानि ॥ जावक चरण मृदंगकी, धुनि कीनी तिहि आनि ॥ २७ ॥ सुनि भीतर बोले नृपति, सब बूझ्यो व्यवहार ॥ सकल ज्ञान संगीत लखि, कला चौगुनीचार ॥ २८ ॥ ( अर्जुनउवाच । गीतिकाछंद ) हौंतो अखारे धर्मसुतके रहत बहु सुख पाइकै । भांति भांति रिझावतौ करि नृत्य गीत सुनाइकै ॥ कौन अपनो गुण कहै सब बूझिजै ऋषि बोलिकै। देहि सकल सुनाइकै सब कहैं विद्या खोलिकै॥२९॥ ( दोहा ) पारथको हौं सारथी, विजय वृहन्नल नाम ॥ जीवन आये रावरे, गेह लियो विश्राम ॥ ३० ॥ ( चौ० ) धर्मपुत्र करिकै बहु नेह । पठये इहां जानिकै गेह ॥ अब आभार हमारो लेहु । वस्त्र अन्न वर मम भरिदेहु ॥३१॥ लघु कन्या बालकहिं पढाऊं।विद्या दै जगमें यश पाऊं॥भूपसुता उत्तरा कुमारि।सौंपी पढन योग सुखकारि३२॥ फिरि सहदेव पहूंचो आय। शुद्धिकरी भूपति सो जाय ॥ ( सहदेवउवाच ) हौंतौ धर्मपुत्रको ग्वाल। करतो महाकृपा भुवपाल ॥३३॥ वेतो दुरिं वन वीथिन गये । दै उपदेश पठै ह्यां दये ॥ करि जानों गाइनको सार। अरु सब विधि करिसकों हथ्यार ॥ ३४ ॥ मो देखत धनुको कहै गरै। को रण जुरिमो समता करै ॥ नाम सौनि यह वृत्ति हमारी । यह जीविका सुचित्त विचारी ॥ ३५ ॥ अरु जयंत जैऋपि म्वाहिं जानै। उन्हैं बूझि भूपति सनमानै॥ सुनि तिन जान्यो वुद्धि विशाल। सौंपी सुरभी कीनो ग्वाल ॥ ३६ ॥ (दोहा) फेर नकुल आयो तहां, लिये जात सो हाथ ॥ देखि

रूपकी राशि तव, चकित भये नरनाथ ॥ ३७ ॥ ( विराटउवाच ) कौन जाति को आपुहौ, कहा तिहारो नाम ॥ केहि कारण कवि-छत्र कहि, देख्यो मेरो धाम ॥ ३८ ॥ ( नकुलउवाच । दोधकछन्द ) बाहुक भूप युधिष्ठिर केरो। राखत मान सबै विधि मेरो ॥ वै दुरि-कैं वनमाहिं सिधारे। दै सबते हमको दुख भारे ॥ ३९ ॥ कट्टर कूटर अश्व चलाऊं। योजन सौ यक वासर धाऊं ॥ बूझहु जै ऋषिको गुण मेरो। मैं बहु नाम सुन्यों नृप तेरो ॥ ४० ॥ मोकहँ सौंपिय वाहन जेतो। जानहुगे गुण मोमहँ तेतो ॥ यों सुनि भूप उदार भयो चित। हेत करयो बहुधा नितही नित ॥ ४१ ॥ ( दोहा ) सौंप्यो साहन नकुल कर, ह्वै भूपाल उदार ॥ वहुरयो आई द्रौपदी, भूपति सदन मझार ॥ ४२ ॥ देखी भूपति तरुणि जब, संभ्रम बढ़्यो अपार ॥ शची किधौं रति मेनका, रम्भाते सुकुमार ॥ ४३ ॥ नगी पन्नगी कमलजा, भुव आई धरि देह। सब रनिवास चकोरसों, शशि ज्यों आई गेह ॥ ४४ ॥ ( रानीउवाच ) कहौ कौ-नकी कुलवधू, आई ह्यां किहि काम ॥ कौन जाति वरणो सकल, सब विधिकै गुणग्राम ॥ ४५ ॥ ( द्रौपद्युवाच ) पांडुपुत्र गृह द्रौपदी, रानी परम उदार ॥ ताकी दासी मोहिं गिन, आईहौं तुम द्वार॥४६॥ ( सुंदरीछंद ) वे वनमें पतिसंग गईं दुरि। मोसों बैन कह्यो हँसिकै मुरि ॥ जाहु विराट महीपतिके घर। काटहु काल तहां त्यहि औसर ॥ ४७ ॥ ( दोहा ) आई तुम सेवा करन, मोहिं सुजानी नाम॥आज्ञा देहु कृपालु ह्वै, करौं यहां विश्राम ॥४८॥ ( रानीउवाच ) कौन सेव उद्यम कहा, करिजानौं काहि बाल ॥ चन्द्रवदनि सो वेगि-कहि, सोइ सौंपौं यहिकाल ॥ ४९ ॥ ( द्रौपद्युवाच । दंडकछन्द ) मंजन कराऊं आछे भूषण बनाऊं चुनि चीर पहिराऊं आछे भोजन संजोयहौं। दर्पण दिखाऊं दरशाऊं महानीकी द्युति कुंकुम सुगंध

घनसार उर लोयहौं ॥ वीजना डुलाऊं जल शीतल पिलाऊं अरु सेजहू विछाऊं ना करोंगी काज दोयहौं । ऐसेकै सुजानी कहै जानो नीके मेरी रानी जूंठो हौं नखैहौं और पायँ हौं न धोयहौं ॥ ५० ॥ (रानीउवाच। चौपाई) सत्य वचन तैं कहे सुजानी। मैं तुम निज पंडौकी जानी ॥ तनया सम मेरे गृह रहिये। मोसों मनकी वातैं कहिये ॥ हलकी भारी जो कोउ भाखै। तू जानि ताको आदर राखै ॥ थोरेहूं कीजे सन्तोष। निशि दिन करिहौं तुमपर दोष ॥ ५१ ॥ ( सुजानीउवाच। गीतिकाछन्द ) करत रक्षा पांच गंधर्व अंतरिक्ष सदा बसैं। विक्रमी बलवंत बहुविधि घोररूप महालसैं ॥ देहिं मोको दुःख जो वे आय ताहि संहारिहैं। देवको नरदेवको क्षितिदेवको न विचारिहैं ॥ ५२ ॥ पाप दृष्टि जो मोहिं देखै प्राणगत सो जानियो। मो पंचरक्षक वे सदा यह सत्य उरमें राखियो ॥ निकट तिन राखी सुजानी परमजिय सुख पायकै। देत शिक्षा रहत सब शृंगार रचति बनायकै ॥ ५३ ॥ ( दोहा ) यहि विधि पांचौ पांडुसुत, और द्रौपदी वाम ॥ कालक्षेप तिनके करैं, छत्र सकल गुणग्राम ॥ ५४ ॥ ( चौपाई ) होहिं एक संग कालहिं पाई। सकल अवस्था वरणैं जाई॥ जव भुवपतिहि जुहारन आवैं। प्रथमहिं जैऋषिको शिरनावैं ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकवि छत्रसिंहविरचितायांपांडवअज्ञातवासवर्णनोनामएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

---

( दोहा ) अपनी दुहिताको रच्यो, नृपति विराट विवाह ॥ छत्र सकलपुरमें भयो, गृह गृह प्रति उत्साह ॥ १ ॥ क्षितिके किती क्षितीश तब, आये तिनके धाम ॥ शक्र समान पराक्रमी, जगमें

जिनके नाम ॥ २ ॥ ( सोरठा ) सभा रची तिहिकाल, अमरावति-सी जगमगे ॥ आपुन ज्यों सुरपाल, भूमिदेव सब देवसे ॥ ३ ॥ ( भुजंगप्रयातछन्द ) कहूं नृत्य कालीनके यूथ सोहैं। कहूं रागकी तानसों चित्त मोहैं ॥ कहूं कंचनी लै मृदंगी नचावैं। लसैं उर्वशी-सी सबै मान पावैं ॥ ४ ॥ कहूं मल्लमाते भिरैं भीम भारे। कहूं मेषशूरे डरारे डरारे ॥ कहूं मत्त मातंगते घोर घूमैं। तपी पुत्रसे देखिये चारु भूमैं ॥ ५ ॥ ( दोहा ) मल्ल एक आयो तहां, बानो बांधे जाल ॥ पगमैठो उर पीतपट, बोलिउठ्यो उत्ताल ॥ ६ ॥ सभा मांझ नरनाह तव, चारि वर्णकी भीर ॥ बड़े धनुर्द्धर साहसी, देख तहां सब बीर ॥ ७ ॥ मोसों मल्ल जुरै नहीं, कोऊ काहू देश ॥ है कोऊ मोसों जुरै, आज्ञा देहु नरेश ॥ ८ ॥ ( छप्पय ) मरहट सोरठ जीति जीति सारंग तिलंगी। जीति बिदर्भी मल्ल सकल भूधरके संगी ॥ मगध जीति मेवार मधूधर जीति चंदेरी। वंदर वारिधि घाट जीतिं करनाटक हेरी ॥ कविछत्र जीति अंगद नगर नाहिं कोउ सरवरि करिसकै। भुज वर्णहुं तिहि शूरके जो करिवर सन्मुख तकै ॥ ९ ॥ ( चौपाई) सुनि सुनि सभा न बोलै कोई। मन साहस काहू नाहिं होई ॥ नृपति बिराटहि सुधि ह्वैआई। लीनो स्वार जयंत बुलाई ॥ १० ॥ ( विराटउवाच ) सुनु जयंत तू आयसु मान। मल्लयुद्ध तू यासों ठान ॥ जो हारै तौ लाज नहोय। जीतै द्रव्य देहिं सबकोय ॥ ११ ॥ ( दोहा ) तब जयंत यह मल्लसों, कही बात हर्षाय ॥ हम तुम रससों खेलिहैं, लीजे सभा रिझाय ॥ १२ ॥ तू जो आनै रोप मन, डारै भुजा उपारि ॥ हम परदेशी न्यायही, देहैं भूप निकारि ॥ १३ ॥ ( मल्लउवाच ) तन दीरघ दीरघ भुजा, वचन कहत कत दीन॥ यों सोऊ नाहिं उच्चरै, होय जुतनको हीन ॥१४॥ ( चौपाई ) मल्लयुद्ध दोऊ मिलि करैं। लटपटाय धरती

धकि परैं ॥ फिरि फिरि बलकारि उठत सँभारि । कोउ नमानत द्वैमें हारि ॥ १५ ॥ जबहिं जयंत भुजाबल कियो । मल्ल उठाय पुहुमिते लियो ॥ करि बहु क्रोध सुभूतल डारचो । जनु सुर बज्र धाय गिरि पारचो ॥ १६ ॥ सम्हरि उठ्यो ये वचन सुनाय । अब मारों तू खल कित जाय ॥ लै तब गुरज उठ्यो अकुलाइ । हन्यो जयंत नासिका आइ ॥ १७ ॥ विषमचोट थरहऱ्योशरीर । मूर्च्छित पुहुमि गिऱ्यो रणधीर ॥ निरखत जैऋषि और सुजानी । हैहैहै करिकै अकुलानी ॥ १८ ॥ चोति जयंत उठ्यो गलगाजि । जान नपायो सो खल भाजि ॥ भूमहिं सातवार धरिमाऱ्यो । गहरो गर्ब्ब दुष्टको गाऱ्यो ॥ १९ ॥ सो फिरि जुऱ्यो नकरि बल जोरि । दो बरकीनो मल्ल मरोरि ॥ देखत सभा सकल नर हर्षें । बसन रजत मणि माणिक वर्षें ॥ २० ॥ मृतक दियो सुरसरी बहाई । तब सब समदे राजा राई ॥ जब सब नृपति बिदाह्वै गये । अपने अपने गृह सुख लये ॥ २१ ॥ (दोधकछन्द) मत्त गयन्दहुतो इक ऐसो । अंजनको भुवधूमर जैसो ॥ नीरनिकेत सुछोरि चलायो । गर्जत धाम निडारत आयो ॥ २२ कानि महावतकी न करै सो । प्राण तजै ढिग आवतहै सो ॥ सुंदर मन्दिर डारिदये जू । भीतर सब नर नारि भरे जू ॥२३॥ भूपतिसों सब लोग पुकारे । ह्वै कुंजर नर केतिक मारे ॥ ताहित केतिक लोग पठाये । बांधहु याको भाषत आये ॥ २४ ॥ (चौपाई) कोऊ निकट सकै नहिं जाई । भूपतिसों सब कही सुनाई ॥ क्योंहूं हाथ न कुंजर आवै । करो उपाय जो भूप बतावै ॥ २५ ॥ (राजोवाच) कै सब मिलिकै बांधो जाइ । कै अब शस्त्र गहो किन जाइ ॥ बोलि जयंतहि आज्ञादई ॥ या गयन्दतें चिन्ता भई ॥ २६ ॥ कै बल बांधि कै ताकहँ मारि । पुरको कंट-

क वेगि निकारि ॥ कहै जयंत जु मारौं याहि। कुंजरको जिनि पकरौ ताहि ॥ २७ ॥ सिंहनाद गाज्यो बलबीर। तब गयंद थरहर्‍यो शरीर ॥ पूँछ पकरि झकझोर्‍यो ऐसो। दावत मृगको चीतो जैसो ॥ २८ ॥ पकरि रदनलै पहुँच्यो थान। ज्यों अजया गहिलीजै कान ॥ बांधि ताहि भूपति शिरनायो। तब जयंत वसननि पहिरायो ॥ २९ ॥ (दोहा) इहिविधि बीते मास दश, नृप विराटके तीर। कालक्षेप इहिविधि करैं, पंडुपुत्र वरबीर ॥ ३० ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणविजयमुक्तावल्यांकाविछत्रसिंह विरचितायांभीमसेनविजयगजवधवर्णनो नामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

---

(सोरठा) नृप तरुणीको बन्धु, कीचक बली विशाल तन। यौवन मद अति अन्धु, सहसदुरद सम ताहि बल ॥ १ ॥
(चौ०) शतबंधव कीचक अति बली। बर अवगाह तरण अस्थली॥ सोहत एक मातके जाये। ऐसे सुभट महीपति पाये ॥ २ ॥
(गीतिकाछन्द) इकद्यौस कीचक मोहिकै निज महल भूपति के गयो। कीनो प्रणाम अशेष भगिनी देखिकै आसन दयो ॥ पवन तेहि ठौरैं सुजानी नृपति त्रिय भोजन करे। रूपदासीको विलोकत देह कीचक थरहरे ॥ ३ ॥ बात भगिनीसों कहै चित अटकि दासीसोंरह्यो। काल घेरो मूढ़ हँसिकै तब सुजानी यों कह्यो ॥ हैं पंचरक्षक मोहिं गंध्रब तुरत ताहि सँहारिहैं। यह बलीहोउ कि होउ निर्बल कछुन चित्तविचारिहैं ॥ ४ ॥ काम अंध भयो सुआतुर तुरत भगिनीसों कहै। देहु दासी मोहिं मांगे इच्छा मों उरमें रहै ॥ देहुं बदले सहस दासी एक यह मोहिं

दीजिये । छांड़ि लज्जा कही तोसों कह्यो मेरो कीजिये ॥ ५ ॥ (रानिउवाच) आहि दासी द्रौपदीकी कहौ केहिविधि दीजिये। रहै मेरे उत्तरासम लोभ चित्त न कीजिये ॥ जीविका हित आइ विरमी कहौं किहिविधि पाइये। दईजाय न वीर मोपै आप धामसिधाइये ॥६॥ (कीचकउवाच) (दोहा) काहि कैसे तू राखिहै, दासी बल करि लेहुँ ॥ राजपाट सब छीनिकै, कोटिकोटि दुख देहुँ ॥ ७ ॥ चेरी लागि नशावहि राजा । तेरो कहा सुधरिहै काजा ॥ अति बलवन्त वीर है मेरो। राखिलेहु को ऐसो तेरो ॥ ८ ॥ (रानीउवाच) परतरुणी रत जे नर भये । अपनी करणी ते मिटिगये ॥ जो चाहै अपनी कुशलात । फेर कहौ जिनि याकी बात ॥ ९ ॥ (सवैया) अंधमहा दशकंध हरी सिय राघवको शर ताउर शाल्यो। शक्रहि शाप दयो मुनि गौतम जानि कुकर्मकेकर्मनि चाल्यो। शुंभ निशुंभ हते तरुणी अरु तारहि लागि वध्यो वर वाल्यो ॥ यों समझै मनमें शठ तू किन कोन गयो परवामको घाल्यो ॥१०॥ (दोहा) भगिनी मुख ये वचन सुनि, उठि सुध धायो धाम॥विकल महा जिय कल नहीं, घरी मुहूरत याम ॥ ११ ॥ (चौपाई) कीचकको सुधि बुधि नहिं रही। सूने सदन सुजानी लही ॥ काम अंध अंचल तब गह्यो । आतुरह्वै या विधिसों कह्यो ॥ १२ ॥ चित मेरो तोसों अब लाग्यो । भो आसक्त सुधीरज भाग्यो ॥ मेरे तरुणी शशि उनहारी। सबपर होहु सुहागिल नारी ॥ १३ ॥ उत्तम भूषण वसन बनाऊं । अरु दासीको नाम मिटाऊं ॥ काहे यौवन उत्तम गँवावै । तूतो मो उरमें अति भावै ॥ १४ ॥ (सुजानीउवाच) गंध्रव पंच मोहिं रखवारे । दीरघ तनु बल विक्रम भारे ॥ मोहिं छुवत वै तुरतहि आवैं। कीचक तेरे प्राण नशावैं ॥ १५ ॥ तोहिं मरे मो अपयश ह्वैहै । मोहीं दोष सकल जग दैहै ॥ यह सुनि कीचक बहु भयमानी।

तुरत गयो मुकराय सुजानी ॥ १६ ॥ निशि दिन ताकहँ नींद न आवै। धन संपति घरबार न भावै॥दूती बोलि सु इहि विधि कही। यह दासी मो चित बसिरही ॥ १७ ॥ भोरे ल्याउ सुजानी अबै। मो मन इच्छा पुजवे सबै ॥ बहु बातन दूती समुझावै । चित्त सुजानी कछू नलावै ॥ १८ ॥ यह विचारि नहिं बोलै सोई। आजु कालि कछु कलह नहोई ॥ कीचक आतुरह्वै उठि धायो । जहां सुजानी तिहिथल आयो ॥ १९ ॥ (दोहा) सूने गृहमें पायकै, गहे केश कर धाइ ॥ शठ कहि धों तोको अबै, कौन छुटावै आइ ॥ ॥ २० ॥ दासी कर्म करायकै, त्रास दिखाऊं तोहिं ॥ अपनी मन-भाई करौं, यहै आनिहै मोहिं ॥ २१ ॥ क्योंहूँ हठ नहिं खल तजै, अंचर डारयो फारि ॥ करते केशन सो तजै, अति अकुलानी नारि ॥ २२ ॥ (सुजानीउवाच) जानत रसकी रीति नहिं, तू खल एक हु बात ॥ परतरुणीको मन दिये, तब सब सुख सरसात ॥ २३ ॥ रसही रसही मन मिलै, तब लहिये परनारि ॥ बौरायो ये वचन कहि, गूढ़ उपाय विचारि ॥ २४ ॥ शिथिल भयो ये वचन सुनि, केश दये मुरकाइ (सुजानीउवाच) रैनि भये ते क्यों न तू, नाच अखारे जाइ ॥ २५ ॥ भोग योग सूने सदन, ह्वै निशि कीचकराइ ॥ जाहु तहां हौं आयहौं, यामक रैनि विहाइ ॥ ॥ २६ ॥ (दोधकछन्द) कीचक यों सुनिकै सुख पायो। वैन सुन्यो हितवन्त सुहायो ॥ जातभयो अपने गृह सोई। चाहत बाट निशा कब होई ॥ २७ ॥ बैन कह्यो तहँ आय सुजानी। है पति भूप जहां सुखदानी ॥ कीचक कानि न नेकहु राखी। सो गति वाम तहां सब भाखी ॥ २८ ॥ आयसु अर्जुनको अब दीजै। कीचक मारहिं सो मत कीजै ॥ रोवत वामहि श्वास न आवै। भूपति या विधिकै समुझावै ॥ २९ ॥ (दोहा) मासदिवस बीते

त्रिया, हो व्रत पूरण होइ॥ तौलगि कालहि काटिये, लखै कछू नाहिं कोइ॥ ३०॥ (चौपाई) अवधि बिते कीचक संहारों। तब नाहिं और विचार विचारों॥ कै तौ लगिरहिये मनमारि। कैं वन-वास करावहि नारि॥ ३१॥ बिलखि वदन त्रिय पहुँची तहां। हुते बृहन्नल अर्जुन जहां॥ वरणी कीचककी अधिकाई। भूपतिके मन कछू नआई॥ ३२॥ मेरो कह्यो गुसाईं कीजे। हनि कीचकको जग यश लीजै॥ तुमहिं अछत कीचक दुख दयो। पौरुष कहां तुम्हारो गयो॥ ३३॥ (अर्जुनउवाच) जो भूपतिको आयसु पाऊं। तौ कीचकको मारि दिखाऊं॥ नृपकी कानि न तोरीजाय। ताते कछू न करौं उपाय॥ ३४॥ (दोहा) गई नकुल सहदेवपै, बिलखि वदन वर नारि॥ अधिकाई ता दुष्टकी, सब विधि कही विचारि॥ ३५॥ (सुजानीउवाच। चौपाई) कीचक बांह हमारी गही। तुममें कहो कहां पति रही॥ मेरो जियको परिहसुसारो। क्यों नहिं अपने अरिको मारो॥ ३६॥ (सहदेवनकुलउवाच। दोहा) सुनि सुनि तेरे वचन ये, बाढ़्यो क्रोध अपार॥ मेट्यो जाइ न नृप वचन, विनयो बारम्बार॥३७॥ मारों कीचक क्षणकमें, भूपति आयसु पाइ॥ करै अवज्ञा नारि अब, को काहि नरकै जाइ॥ ३८॥ (चौपाई) मास एक तू और निवारि। तब सकिहैं कीचकको मारि॥ इनहूंते त्रिय भई निरास। पहुँची भीमसेनके पास॥ ३९॥ सजल नयन भरि आंशू डारे। मीडत नयन भरे रतनारे॥ पवनपुत्र तब यह विधि जानी। बिलखी ठाढ़ी द्वार सुजानी॥ ४०॥ आयो द्वार लखी त्रिय नैन। श्वासा लै लै कहै न वैन॥ बोली बिलखि अंसुवनि मांह। कीचक दुष्ट गही मो बांह॥ ४१॥ पंडुसुतनपै फिरी पुकारि। वे नगुहारि लगे कोउ चारि॥ अब जो साईं तू सहिहैहै। गहि सो दुष्ट मोंहि लैजैहै॥ ४२॥ (सवैया) रोप चल्यो विपसों

सब अंग लखी त्रियके मुखपै मलिनाई। बूझत उत्तर फेर नदेत गरो भरिकै मुख बात नआई॥ कीचकको सुनि ता मुख नाम सुदौरि गई दृगमें अरुणाई। देखतही वधिहौं क्षणमें यह पैजु युधिष्ठिर भूप दुहाई॥ ४३॥ पै हथि मीचु बुलाइलई तिन स्यार वराइकै सिंहसो खेल्यो। दादुर धाइ जुरयो अहिसों सुकपोत किधौं वर बाजसों झेल्यो॥ मूषक युद्ध मंजारिहिसों पग पीलको चाहत गर्दभ ठेल्यो। पेरयोहे काल कराल सोई करजाय भुजंगमके मुख मेल्यो॥४४॥ (दोहा) काल सर्प्पसों खल डरयो, काम लहरि अकुलाइ॥ पूंछ मरोरी सिंहकी, अब जीवत कित जाइ॥ ४५॥ जो नहिं मारों क्षणकमें, आवै कुंतिहि लाज॥ जो वैरी बल करि रहै, जीवन कछू न काज॥ ४६॥ (द्रौपद्युवाच। चौपाई) तुम देखत सब पंचन मांह। दुश्शासन पकरी मो बांह॥ दुर्योधन तब छीने चीर। हुते अछत तहँ पांचो वीर॥ ४७॥ विपिन जयद्रथ छलकै हरी। बांध्यो दुष्ट कानि नहिं करी॥ दुखदे कीचक फारयो चीर। तातें व्याकुल भयो शरीर॥ ४८॥ (दोहा) सभा मांझ सुनि कीचकै, भीम चल्यो अकुलाइ॥ अबही मारों दुष्टको, अबको सकै बचाइ॥ ४६॥ (द्रौपद्युवाच) अब न उतावल कीजिये, जाने काल बचाइ॥ दुष्टहि मारो रैनिमें, रहै अखारे आइ॥ ५०॥ मैं सहेट तासों बदी, आवै तहां निशंक॥ताहि तहां संहारियो, करियो दया न अंक॥५१॥पूरौ मतौ सुकीजिये, आवै जामें जीति॥नहीं उतावल कीजिये, यहै स्यानकी रीति॥५२॥(चौपाई)भीमसेन तरुणी वपुकीनो। दृग अंजन शिर सिंदुर दीनो॥पट भूषण आभरण सम्हारे।कटि किंकिणि नूपुर झनकारे॥५३॥ करि तरुणी वपु पहुँचे तहां।बदी सहेट अखारे जहां॥ बैठिरह्यो ता गृहमें जाय॥ कीचक काल पहूंच्यो आय॥ ॥५४॥ (दोहा) होनहार सों नाहिं मिटै, भावी महा बलिष्ट॥

कीचक मनसिज सिंधुमें, वोल्यो वली आदिष्ट ॥ ५५ ॥ (दोधकछन्द) रैनिभयो सुख कीचक पायो। वाम सहेट वदी तहँ आयो ॥ देखि त्रिया वपु यों हँसि भाख्यो। तू धनिहै अपनो प्रण राख्यो ॥ ५६ ॥ आवतही करता कहँ मेल्यो। मान कियो वहु वारन ठेल्यो ॥ नेक जहीं वल कीचक कीनो। दुष्ट ढकेलि त्रिया तव दीनो ॥ ५७ ॥ जानिगयो यह वाम नहोई। है वरवीरनमें यह कोई ॥ तो कहँ मारि सुजानी लाऊं। जो नवधौं द्विज दोपनि पाऊं ॥ ५८ ॥ (सोरठा) भिरे कोपि दोउ वीर, लटपटात लोटत लिपटि ॥ शूर समर रणधीर, भूधर जनु भूतल भिरत ॥ ५९ ॥ (चौ०) द्वैमें हारि न कोऊ मानै। कोपि अमित गति युद्धहि ठानै। अति वल भीमसेन तव कियो। मूढ़ उठाय पुहुमिते लियो ॥ ॥ ६० ॥ पटक्यो भूमि गरे पग दियो। मारि सुदुष्ट प्राण विनु कियो ॥ मांझ चौहटे राख्यो जाय। जानैं नाहिं पुरजन ये भाय एक बूंद कहुँ रुधिर न आयो। देखत सब जन विस्मय पायो। ॥ ६१ ॥ (दोहा) मारि दुष्ट धारि चौहटे, जियकी व्यथा नशाय ॥ अर्द्धरैनि सुत पवनको, निज थल पहुँच्यो आय ॥ ६२ ॥ जागे पुरजन सदन सब, प्रात भये नर नारि ॥ मृतक देखि कीचक तवै, सकै नकोउ विचारि ॥ ६३ ॥ (नगस्वरूपिनी छंद) नृपाल शुद्धि पायकै। गये तुरंत आयकै ॥ विलोकि भीति ह्वैरहे न वैन जायँ तहँ कहे ॥ ६४ ॥ विलाप तापसों तये। अशेप शोक सों रये ॥ उपाव कौन ठानिये। कछू न वात जानिये ॥ ६५ ॥ (दोधक छंद) वंधवकी सुधि ताक्षण पाई। भूपतिकी तरुणी तहँ आई ॥ रोदनकै अतिही दुख ठाने। देखत भूप महा विलखाने ॥ ॥ ६६ ॥ (राजोवाच) कौन्यहिं कीचक शूर प्रहार्‍यो। जासँग युद्ध जुर्‍यो सोइ हार्‍यो ॥ अंग नहीं छत शोणित आयो। भूलि

रहे कछु शोध न पायो ॥ ६७ ॥ (रानीउवाच। दोहा) रहै तुम्हारे गेहमें, जाहि सुजानी नाम ॥ गंध्रव रक्षक तासुके, निशिदिन आठहु याम ॥ ६८ ॥ कीचक अति आसक्तह्वै गही सुजानी बाल। ताही दिनसों मैं लख्यो, घेर्योहै यहि काल ॥ ६९ (चौपाई) कीचक तिन गंधर्वनि हयो। काहू पास नराख्यो गयो ॥ अब चलि ताकी किरिया कीजै ॥ लै कुश ताहि तिलांजलि दीजै ॥ ॥ ७० ॥ लखि कुतवालहि बोलेराउ। परजा लोगनि वेगिबुलाउ॥ ले कीचकको घाटहि जाउ। विधिसों सब किरिया करवाउ ॥ ॥ ७१ ॥ (गीतिका छंद) कहै जैऋषि नीच लोगनि नाहिं अंग छुवाइये। वर्ण उत्तम होय जोई ताहि वेगि बुलाइये॥ शुद्धि आई भूपको तब लैजयंत बुलायकै। बार द्वैयक राजआज्ञा तिहि दई तब टारिकै ॥ ७२ ॥ फेरि आयो पवनको सुत भूप तासों यों कहै। वचन मेरो मेटिकै कहु वेगि मूढ़ कहां रहै ॥ पांडुसुतकी कानि राखों क्रोधह्वै कैसे हनो। तूतो रहै सन्मानसों बहु अनुज सरिवर हौं गनो ॥ ७३ ॥ (जयंतउवाच। दोहा) मार्‍यो कीचक मैं कहा, कत कीजतहै क्रोध ॥ मो दुख पायो वादि नृप, अंतहि लीजै शोध ॥ ७४ ॥ भोजन भाजन छांड़िकै, हौं नहिं अंतहि जाउँ ॥ मनसा वाचा कर्मना, तुमको महा डराउँ ॥ ॥ ७५ ॥ (सोरठा) करी कृपा नरनाहु, यहि विधि कही जयंत सों ॥ लै कीचकको जाहु, दूरि नगरते कृति करो ॥७६॥ (जयंत उवाच) बंधु कुटुंब जो होहिं, सोई मृतकहि काढ़िहैं ॥ कहा परी है मोहिं, ऐसे कर्मन हौं करौं ॥ ७७ ॥ (दोधकछन्द) भूपतिको फिरि आयसु पायो। यों नरनाथहि बैन सुनायो ॥ जो अब भोजनको कछु पाऊं। लै कीचकको घाट सिधाऊं ॥७८॥भोजनको भुवपाल मँगायो॥बैठि जयंत तहां सब खायो॥रोवहिं कीचकके सब

भाई। जेंवत सो नाहिं नेक अघाई ॥ ७९ ॥ (दोहा) करि भोजन बलवंत तब, कीचक लयो उठाय ॥ दूरि नगरते घाट पर, मृतक उतार्यो जाय ॥ ८० ॥ वन उपवन द्रुम तोरिकै, आनिधरे तिहि ठौर ॥ और शिखर बहु गिरिनकें, केतिक आने तौर ॥ ८१ ॥ इत कीचकके बंधु सब, पकरि द्रौपदी वाल ॥ जारन कीचक संगही, लिये चले तेहिकाल ॥ ८२ ॥ (चौपाई) या हित मार्यो बन्धु हमारो। पकरि याहि वाके सँग जारो ॥ बरजत पुरजन सो नहिं मानै। कछु भय अपने चित्त न आनैं ॥ पकरि ताहि लै पहुँचे तहां। कीचक मृतक परो है जहां ॥ भरि भरि घट घृत केतिक आने। चंदनके गुण कौन बखाने ॥ ८३ ॥ (दोहा) रुदन कराति लखि द्रौपदी, गृह तन चल्यो जयन्त ॥ क्रोध बढ़्यो अँग अंगमें, देखत कर्म दुरन्त ॥ ८४ ॥ वसन उतारि धरे कहूं, भीम भयानक धाय ॥ फूलिं गात दूनो भयो, उपमा कही नजाय ॥ ८५ ॥ कीच चढ़ाई सकल अँग, केश दये मुकराय ॥ करलै तरुवर वज्रसम, दयो दिखाई आय ॥ ८६ ॥ देखि सकल भयभीत ह्वै, भागिचले दिशि चारि ॥ एकौ कीचकके निकट, रहे न नर अरु नारि ॥ ८७ ॥ (चौपाई) कीचक भागे तब अकुलाय। यह गंधर्व पहूंच्यो आय ॥ भीम बटोरि वीर सब लये। सुरजनु वज्र धाय गिरि हये ॥ ८८ ॥ (सवैया) अंगन अंगन कीच लपेटिकै केश बड़े चहुंधा मुकराये। भेष भयानक देखि सबै नर ह्वै भयभीत दिशानको धाये ॥ हांकि हने द्रुम वज्रके धाय महीधर कीचक भूमि मिलाये।कोपि निशंकह्वै अंक भरे सुसकेलि सकोलै चितान चढ़ाये॥८९॥ (दोहा) गये शेष नरभाजि कछु,कहो भूपसों जाय॥कर तरुवर गंधर्व लै, तिहि थल पहुँच्यो आय ॥ ९० ॥ (तोटकछन्द) द्रुम धाय हने वरवीर किते। अवलोकि भजे नर शूर जिते ॥ नृप कीचक हैं तिहि ठाम सबै।

सुधि लीजियेजू तहँ जाय अबै ॥ ९१ ॥ नकह्यो कछु संभ्रम भूलि-रहे। मुखते कछु बैन न जायँ कहे ॥ सब कीचक भीम जरायदये। तरुणी उर आनँद कोटि छये ॥ ९२ ॥ (दोहा) गृह तन पठई द्रौपदी, आपु गयो सर पास ॥ न्हाइ धोय पहिरे बसन आयो आप अवास ॥ ९३ ॥ सरवर तट द्रुम डारिकै, आयो भूप निकेत ॥ धाइ धाइ नर नारि सब, बूझत करिकरिहेत ॥ ९४ ॥ (चौपाई) हे जयन्त कहिये सतभाई। कोगन्धर्व पहूंच्यो आई ॥ ताके हाथ कहा हथियार। सो सब वर्णहु ताको सार ॥ ९५ ॥ (भीमसेनउवाच। दंडकछन्द) आयो वीर ऐसो कोऊ गंध्रव अनैसो गिरि मंदर है जैसो कौन वरणिबतावई। हाथमें तमाल कालदंडते कराल वाहु देखिये विशाल महाकाल काल गावई ॥ भारे भारे कीचक सँहारे मेरे देखतही भाजेहु नवीर भाजिं जान कोऊ पावई। मोहिं बुद्धि आई एक कंदरामें पाई देखो त्रिभुवनराई विनु औरको वंचावई ॥ ९६ ॥ (दोहा) नीचे ऊपर काठदै, दीने कीचक जारि ॥ आयो वीर कराल तहँ, जहां सुजानी नारि ॥ ९७ ॥ (चौपाई) ताके कान मांझ कछु कह्यो। हौं निशंक तहँ बैठ्यो रह्यो ॥ देखत सो उड़िगयो अकास। डारि गयो द्रुम सरवर पास ॥ ९८ ॥ सुनि सुनि सबही अति भयमानी। देवी करिकै गनी सुजानी ॥ अरु गंधर्व भक्ति उर राखैं। निशि दिन नृपसेवा अभि-लाखैं ॥ ९९ ॥ पांचौ बंधव कालहि पाई। भये एकथल सब जन आई ॥ हर्षें भीमसेन गुणगाइ। कोऊ भेद सकै नाहिं पाइ ॥ १०० ॥

इति श्रीकीचकवधवर्णनेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥

---

(चौपाई) दुर्योधन नृप यह सुधि पाई। कीचक किहिं मारे सौ भाई ॥ सो उर उपजत यह संदेह। भीम करयोहै कारज येह ॥ १ ॥

दुर्योधनउवाच। तोमरछन्द ) सुनि दूत तिहि थल जाउ । यह शुद्धि लै फिरि आउ ॥ तव भूप आयसु पाइ । पहुँच्यो तहां सोजाइ ॥ २ ॥ लहि भेद बात बनाइ । तिन कही नृपसों आइ ॥ शत हने कीचक राइ । कछु भेद जानि नजाइ ॥ ३ ॥ नाहिं पांडुसुत तिहि ठाम । लहिये कहूं नाहिं नाम ॥ तव दूत विनयो येह । नृपके भयो संदेह ॥ ४ ॥ ( दोहा ) भूपति करि संदेह मन, बोले भीषम द्रोन ॥ पुर विराट कीचक वधे, केहिधौं कारण कौन ॥ ५ ॥ ( भी-ष्मउवाच ) कीचक को संहारि है, भीम विना को और ॥ किते द्विरद सम ताहि बल, सुभटनको शिरमौर ॥६॥ ( सुशर्माउवाच ) भूपति और विचार नकीजै । मो सँग सैन अवै कछु दीजै ॥ जो हरिकै सुरभी हम लावैं । होहिं तहां सब पांडव धावैं ॥ ७ ॥ वे सुरभी न हरी सहिहैं हैं । लागि गुहारि तहां चलिऐहैं ॥ भूपति संग चमू सब दीनी । वेगि विदा तिहि अवसर कीनी ॥ ८ ॥ ( तोटकछन्द ) नरनाह चमू सब साजि चले। चतुरंग बने सब सैन भले ॥ दिशि उत्तर आपु महीप गये । बन वीथिनमें सब पूरि लये ॥ ९ ॥ ( दोहा ) कोपि सुशर्मा तव गयो, दिशि दक्षिण उत्ताल॥ तत्क्षण नृपाति विराटके, हरे धेनुके जाल ॥१०॥ ( भुजंगप्रयातछंद किते ग्वाल बांधे सुशर्मा जहांते । किते जीव लैलै भगेहैं तहांते॥ किते आयकै भूपहींपै पुकारे । कितेधेनुके वृन्द लीने तिहारे ११॥ चलो सैन लै वीर यों आपु भाखैं । किधौं आपही जायकै धेनु राखैं ॥ तवै भूप शोचैं कहा मंत्र कीजे । रहे आपनो दाउँ सो बो-लि दीजै ॥ १२ ॥ ( दोहा ) कीचक को सुमिरे नृपति, यह कहि वारंवार ॥ वा विन सुरभी वेढ़िये, को कहि लगै पुकार ॥ १३ । हरुवै बोल्यो भूप तव, सैन पलानो जाइ ॥ धाय सुशर्मा वीरते सुरभी लेहु छड़ाइ ॥ १४ ॥ ( नगस्वरूपिणीछन्द ) नरेश साजिवै

चले। अनेक शूर लै भले॥ तुरंग ज्यों कुरंगहैं। करी समूह सं-
गहैं॥ १५॥ महाकराल क्रोधमें। चले सुधेनु शोधमें॥ न अस्त्रसों
कहूं मरैं। सुवर्म्मलै तहां जुरैं॥ १६॥ (दोहा) विजय बृहन्नल
गृह रह्यो, पांडु पुत्रते चारि॥ देखत कौतुक युद्धको, सकै नकोऊ
हारि॥ १७॥ (चौपाई) तव रण सुभट सुशर्मा कोप्यो। भूप
विराट नहीं पग रोप्यो॥ भागत जानि वांधि रथ धरयो। लै कहि
ताहि पयानो करयो॥ १८॥ (दोहा) सहदेव वपु ग्वालको,
जैऋपिको शिरनाइ॥ टेरि सुशर्मा हांकदे, फेरयो तत्क्षण जाइ
॥ १९॥ मत्त करी दल तासुको, अंकुश लै फिरि धाइ॥फेरयो वल
कारि सिंह ज्यों, गह्यो कोपि धँसि जाइ॥२०॥(चौपाई) सबै सुशर्मा
वल कारि हारयो। पांडुपुत्र सो धरणि पछारयो॥मल्लयुद्ध करि दल
विचलायो।छोरि विराटहि दलमें लायो॥२१॥जैऋपिको तिन माथो
नायो। ताकी सेना वहु सुख पायो॥ लै सुरभी तन मन सुख पाइ।
चले आप गृहको तव राइ॥ २२॥ उत्तर दिशि दुर्योधन राइ।
वेढ़िलई सुरभी सुख पाइ॥ कर्ण दुशासन अरु भगदंत। कि-
ते यूथ लैचले तुरंत॥ २३॥ (दोहा) भागे ग्वाल परायकै, वहु
विधि करी पुकार॥ उत्तर क्यों निष्चितहै, वैठ्यो सदन मझार॥
(छप्पय) दुर्योधन इक हरी हरी दुश्शासन वल कारि।
एक कर्ण कुल हरी कोप कारि आगे धारि धरि॥ हरी हर-
पि भगदत्त किती कपिला अरु धौरी। लक्ष्मण कुवँर कलिं
ग हरी केतिक इक ठौरी॥ हरी द्रोण सुरभी किती, क्यों न श्रवण
यह किज्यिै। सुनि उत्तर उत्तर दिशा सव तेरो धन लिज्यिै॥
॥ २४॥ (चौपाई) करत कुलाहल गिरि गिरिजात। दीरघ दी-
रघ स्वर कहि वात॥ ऐसो धिकहै जगमें जिये। कहा कुवँर तू
हारै जिये॥ २५॥ (उत्तरउवाच) जो मेरे ढिग सारथि होतो।

तौ काहे कौरवको दल केतो ॥ ता विनु कैसेके रथ बाहौं । पैड़ो याते नृपको चाहौं ॥ २६ ॥ (द्रौपद्युवाच) (दोहा) द्रुपदसुता ये वचन सुनि, अर्जुनसों हरपाइ ॥ कही सकलयुत साहसै, इहि विधिकै अकुलाइ ॥ २७ ॥ (सवैया) क्षत्रिय युद्ध डराइ रहे जग कर्म वृथा सब धर्म अकारथ । काज त्रिया द्विज गायनके वर देत अभयपद जीतिकै भारथ ॥ तू सब बात डराइ रह्यो कत चाउ न चित्त कहाइकै पारथ । काहे ते बैठि रह्यो हठिकै अब क्यों नकरै उठि उत्तर स्वारथ ॥ २८ ॥ (दोहा) उत्तरसों तबही कही विजय बृहन्नल बात ॥ क्यों न युद्धकी बातको, हर्षतहै हठि गात ॥ २९ ॥ पारथ स्वारथमें कियो, जानो रथहौं बाहि ॥ जहां होत हौ सारथी, कहौ कहां डर ताहि ॥ ३० ॥ भयो बृहन्नल सारथी, रथ आरुह्यो कुमार ॥ सजिकै दल लीनो घनो, कोपि कस्यो कर बार ॥ ३१ ॥ (उत्तरउवाच) ऐसो रथ अब हांकि तू, तुरत तहां चलि जाउँ ॥ हनौं सकल शतबंधु वे, बचै न कौरव नाउँ ॥ ३२ ॥ (चौ०) तब सारथि बरुकरि रथ हांक्यो। औघट घाटन कानन ताक्यो ॥ कौरव दल लखि सिंधु समान।लखि उत्तर घट रहे न प्रान॥३३॥गाजत सिंधुर अतिहय हींसत । मारै मार करत भट दीसत॥उत्तर तब विनवै करजोरि। सारथि फिरि गृहतन रथ मोरि ॥३४॥ बार बार सो विनती करै । एकौ सारथि चित नहिं धरै ॥ रथ तजि सो भाग्यो अकुलाइ । धाय पार्थ पकस्यो सो जाइ ॥ ३५ ॥ बांधि धरयो रथ ऊपर आइ । सन्मुख चल्यो सेनके धाइ ॥ तब गुरु द्रोण पार्थ पहिंचान्यो । सबही सों यह वचन बखान्यो ॥ ३६ ॥ (द्रोणउवाच। सवैया) बांधि रथी रथ आनि धरयो जिहि आप निशंक न शंक खरी सी । सायर संगमको अवगाहन आपु भुजाबल पैज करी सी ॥

वाण शरासन शूर सजौ यह वानि भली कछु मैं नहिं दीसी। पौनके गौनहुते अति लाघव आवनि सूझति अर्जुन कीसी॥ ॥ ३७ ॥ (दोहा) उत्तरसों सारथि कही, करि नकछू भय अंक॥ सकल निपातौं अरि चमू, रहिये आप निशंक ॥ ३८ ॥ नगर निकट तरुवर शमी, तापर धनु अरु वाण॥आनि उताइल मों निकट, गंजौं अरिदल प्राण ॥ ३९ ॥(दोधकछंद) बैन सुन्यो उठि उत्तर धायो। वेगिहि ता द्रुमके ढिग आयो ॥ लेतहि पन्नग सो दरदेख्यो। संभ्रम चित्त महा तिन लेख्यो ॥ ४० ॥ सारथिको फिरि वैन सुनाये। व्याल भये इषु मोकहँ धाये ॥ यों सुनिकै तव सो उठिधायो। वाण शरासन लै तहँ आयो ॥ ४१ ॥ (दोहा) निर्गुण धनु गुणवंत करि, सूधे कीने वान॥ काढ़ी गंगा भूमिते, धोये सकल कृपान ॥ ४२ ॥ पहिरि कवच शिर टोपदै, करी धनुप टंकार ॥ हांक्यो रथ वहु क्रोध करि, पहुँच्यो कटक मझार॥४३॥वीर धनुर्द्धर धीरके,उरमें कछू न शंक॥ भट दुर्घट घट सव कटक, करो महा आतंक॥ ४४ ॥ (चौपाई) बैठ्यो आनि ध्वजा हनुमंत। जाके वलको कछू न अंत ॥ पूर्‍यो शंख धनुष टंकार्‍यो।जीतन दुर्जन दल पगु धार्‍यो॥४५॥(उत्तरउवाच) मो सों कहि न वृहन्नल आन। सत्य कहो को आप निदान॥ अद्भुत कर्म कछु कहत न आवै। महानिशंक युद्धको धावै ॥ ४६ (अर्जुन उवाच) सुनिये उत्तर यह सतभाय। जैऋपि भूप युधिष्ठिरराय॥ हौं अर्जुन यह सुनो कुमार। भीम जयंत तुम्हारो स्वार ॥ सहदेव सुरभी रावत सैन। वाहक नकुल मनों महि मैन ॥ ४७॥ (दोहा) वह रानी है द्रौपदी, जाहि सुजानी नाम॥ कछू नभय चित कीजिये, जीतौं सब संग्राम ॥ ४८ ॥ हमहीं लगि सुरभी हरी, लेत हमारो शोध ॥ अव सुनि वीती अवधि सो, तव मैं कीनो क्रोध ॥ ४९ ॥

फिर उत्तर लाग्यो चरण, सुनि सोई सतभाय ॥ दशौ नाम अपने कहौ, तौ मो मन पतिआय ॥५० ॥ (अर्जुनउवाच) जन्मो कोहर वृक्ष तन, अर्जुन पायो नाम ॥ सितवाहन अरु फाल्गुन, कृष्णजिष्णु उरयाम ॥ ५१ ॥ विजय किरीटी नामभो, और विभत्सुहि जानि ॥ सव्यसाची अरु धनञ्जय, ये दश नाम बखानि ॥ ५२ ॥ (चौपाई) भीमसेन सब कीचक मारे। लखि अपराधी ते संहारे॥ मारयो मल्ल द्विरद गहि लायो। तेरे गृह हम बहु सुख पायो॥५३॥ तेरी आय विपति हम टारी। बरस दिवस की अवधि निवारी॥ द्वादश बरसें बनमें रहे। तुम छायामें अतिसुख लहे ॥५४॥ (उत्तरउवाच) हलकी भारी जो हम कही। समरथ आपुन सो सब सही॥ जो कछु हमते भो अपराधु। सो सब क्षमियो आपुन साधु ॥५५॥ (दोहा) वीर धनंजय क्रोध करि, चल्यो सबल रथ हांकि ॥ अति बल परे तुरंग तब, श्रमित रहे तहँ थाकि ॥ ५६ ॥ तेज दयो गंधर्व तब, फिरि बलभरे तुरंग ॥ कही द्रोण गुरु पार्थसों, क्यों न करै रणरंग॥५७॥(द्रोणउवाच। सवैया)आयो धनुर्द्धरधीर बलीश कहौ रण सन्मुखको अब रैहै।युद्ध जुरयो नहिं नेकहु सो यम खाइगयो सुख त्यों दल खैहै ॥ याहीते शोच बढ़यो उर अन्तरको काहि धौं वर बाणनि सैहै। कोटि उपाय करो तुम पारथ जीत्यो नजैहै नजैहै नजैहै ॥ ५८ ॥ (सोरठा) वीरा लयो कलिंग, जीतन पारथ वीरको ॥ कियो कोटि रणरंग, अचलमेरु सोधर परयो ॥ ॥ ५९ ॥ (दोहा) पार्थ सहस दश बाणसों, हन्यो कोपिकै वीर ॥ मूर्च्छित गिरयो कलिंग रण, धरि नसकत दल धीर ॥ ६० ॥ जब कलिंग मूर्च्छित्त गिरयो, तब विकर्ण रण गाजि ॥ कोपि शरासन बाणलै, आयो सन्मुख साजि ॥ ६१ ॥ (नाराचछन्द) तबै विकर्ण बाण तीस पार्थके हिये दये । विशेप बाण वृष्टिसों सलोप शूर है

गये ॥ नजानिये निशान व्योस अंधकारसों छये । सरोप पांडुपुत्रहै कृपान कोपिकै लये ॥ ६२ ॥ (दोहा) तब विकर्ण चालीस शर, हने कोपि बलवंड ॥ कोटि बाण नभ छायकै, संग्राम कियो अखंड ॥ ६३ ॥ तब विकर्ण साहस सहित, भूमि गिरचो मुरझाय ॥ निरखि कर्ण बरवीर तब, लीनो धनुष चढ़ाय ॥ ६४ ॥ रण अर्जुनके नेकहू, सहि न सक्यो सोवान ॥ रणमंडल तजि सो भज्यो, रविसुत तेज निधान ॥ ६५ ॥ (चौपाई) देखे कर्ण महाबल हारे । दुश्शासन भगदत्त सम्हारे ॥ दुर्योधन शतबंधव धाये । चहुँदिशि घेरि पार्थको आये ॥ ६६ ॥ (सुन्दरीछन्द) नीरद घेरि रहे गिरिको जन । यों चहुँओरनिते भट अर्जुन ॥ कोपित वीर घने शरडारत । इक लैलै गिरिके गन मारत ॥ ६७॥ लैकर बाणनि पार्थ उव्यो तबामारि भगायदये बलकै सब॥ भागत शूर नहीं फिर हेरत । ते रणभूमि विरे नाहिं घेरत ॥६८॥ (सवैया) घोर घने घनसे घुमड़े उमड़े दल दीरघ दीसन लागे । चामरसे धुरवा धरधार ध्वजा चल दामिनिकी द्युति जागे ॥ बुन्दनिसे वर्षै शरजाल सुवीर सबैर सबीरसों पागे । पौन उड़ायदये पवि ज्यों भहरायकै नीरदसे भट भागे ॥ ६९ ॥ अक्षयतूणते एक कढ़े शर देखतही लखिये कर ऐसो । आवतही मृगयूथनि ऊपर कोपि उव्यो सुत केहरि कैसो ॥ सेही करै भट बोधिसबै तिन और कियो बरविक्रम ऐसो। काटिदये ध्वज बैरख चौंर बिछा इदयो कदली बन जैसो ॥ ७० ॥ (भुजंगप्रयातछंद) जबै पार्थके क्रोधसों बाण छूटे। तिते सैनके यूहके शीश टूटे ॥ गये भागिकै एक पीछे न चाहैं । कटैं एकते जानु जंघान बाहैं ॥ ७१ ॥ महाक्रोध कैकै धनुर्बाण साधैं । सशोके किते बीरके यूथ बांधै ॥ छुट्यो मोहिनी बाण सो सर्व मोहे । कहाँलौं बखानों न मोहै सु

॥ ७२ ॥ ( चौपाई ) मोहिरह्योदल संभ्रम छाई । एक नमोहे भीष-
मराई ॥ उत्तर पठयो तबै प्रचारि । पट भूषण सब लाउ उतारि
॥ ७३ ॥ ( गीतिकाछन्द ) शीश भूषण सेनके नृप आदिदै सबके-
हरे । आनिकै तिहिवार उत्तर पार्थके आगेधरे ॥ जागिकै कुरुरा-
ज लज्जित बाण धनु कर गहिलियो । धाय भीषम बरजि राख्यो
प्रकट तासों यों कियो ॥ ७४ ॥ एकपार्थ अनेक जानो युद्ध जीत
नहीं सको । लाज ह्वैहै बीर भागत चित्तमें यह नातको ॥ विकल-
ह्वै बिलखात बिथक्यो कछू नहिं मुखते कहै । व्याल ज्यों लै श्वा-
स दीरघ वचन घनसे उर सहै ॥ ७५ ॥ ( दोहा ) भीषम आयसु
मानिकै, दल लै चल्यो अवास॥ धावन धाइ गयो तबै, नृप बिराटके
पास ॥ ७६ ॥ ( दूतउवाच ) जीती उत्तर अरि चमू, कौरव गये
पराइ ॥ सुत सपूत कीनी विजय, भागति हारेराइ ॥ ७७ ॥
( चौपाई ) भूपति खेलत पांसेसारि । संगलिये जैऋषि सुखकारि ॥
हरष्यो सुतकी कीरति गावै । सब जनमन आनन्द बढ़ावै ॥ ७८॥
( जैऋषिरुवाच ) ( दोहा ) बिजय बृहन्नल जिहि कटक, सो कत
जीत्योजाय ॥ युद्ध जुरैं संग्राम थल, यमहूं देइ भगाय ॥ ७९ ॥
(चौपाई)इतनी सुनत भूप परजरयो। राते दृग करिबहुरिस भरयो॥
तत्क्षण नाहिं नरनाथ बिराट।पांसे जैऋषि हये लिलाट॥८०॥ छूट्यो
रुधिर द्रौपदी धाई । अंजलिमें तिन लीनो जाई ॥ निरखि भूप उर
चिन्ता मानी । क्यों नकहै यह भेद सुजानी ॥ ८१ ॥ ( सुजानीउ
वाच ) भूतल रुधिर परे जो एह । द्वादश वर्ष न वर्षै मेह ॥ यों
कहिकै भूपति समझायो ॥ भीमसेनके उर दुख आयो ॥ ८२ ॥
( दोहा ) क्रोध भयो लखि भीम उर, धर्मपुत्र दै सैन ॥ बरज्यो
केहरि क्षुधित ज्यों, युक्त कछू यह सैन ॥ ८३ ॥ ( दोधकछंद )
उत्तर गृह तबहीं चलिआयो । भूपतिको यह बैन सुनायो ॥ आजु

वृहन्नलही दल जीत्यो। कौरवको वहुधा वल रीत्यो ॥ ८४ ॥ शूर भगाइदये सवरे यों। पौन विड़ारत मेघ घने ज्यों ॥ मौनाहिं भूपति धाम सिधायो। उत्तर भीतर वोलि पठायो ॥ ८५ ॥ युद्ध कथा सवरी सुनिलीनी। सारथिकी शरजाल प्रवीनी ॥ अर्जुनहै जिहि कौरव मारे। व्योस इते इहि ठाम निवारे ॥ ८६ ॥ (दोहा) धर्मपुत्र नरनाहसों, अर्जुन वोल्योवैन ॥ जाने हम सव कौरवन, अव कछु चिन्ताहैन ॥ ८७ ॥ तेरह वर्ष व्योस दश, वीतिगये इहि ठाम ॥ अव वैठो शिर छत्र धरि, गुप्त करौ कतनाम ॥ ८८ ॥ (सवैया) पाइकै त्रास अवास तजे वनवास जे दुःखन साधना साधी। भूख न प्यास उदास महागति योगके योगिनिकी अवराधी ॥ नेकहु शोच सकोच कर्यो नहिं कानि सवै कुरुनन्दन वाधी। आयसु दीजिये कोपि महीपति लेहिं भुजावलसों भुव आधी ॥ ८९ ॥ (दोहा) प्रात होत शिरछत्र धरि, धर्म पुत्र सुखपाइ ॥ दान दये कविछत्र कहि, विप्रहि, विप्र वुलाइ ॥ ९० ॥ वन्धव चारों जोरि कर, ठाढ़े भये सुजान ॥ कारण सवही काजकै, कीजै काहि समान ॥ ९१ ॥ नाहिंन वाहन उपनह्यों, उत्तर सहित विराट ॥ नृपति युधिष्ठिर चरणपर, राख्यो आनि ललाट ॥ ॥ ९२ ॥ (विराटउवाच । सोरठा) ढिठय भई जो होय, सो क्षमिये करिकै कृपा ॥ भूप वड़ो जो होय, चूक न मानत जनन की ॥ ९३ ॥ (चौपाई) धोखे तुमपै सेव कराई। सो सव चूक कही नहिं जाई ॥ ओछी पूरी मन नहिं धरिये। ईश अनुग्रह हम पर करिये ॥ ९४ ॥ (युधिष्ठिर उवाच । दोहा) तुमसे तुमहि न दूसरो, जग मण्डलमें आन ॥ विपति हमारी सव हरी, राखे पुत्र समान ॥ ९५ ॥ (चौपाई) तुम पटुतर को दीजै आन। सुर नर नाहीं अपने जान ॥ तुम हमको सव कीनी भली। तव कीरति सव

भूतल चली ॥ ९६ ॥ नित नित नेह दीसिहैं नये । अब तुम भुजा हमारी भये ॥ जीति समर सुरभी जे आनी । जितनी २ जाकी जानी ॥ ९७ ॥ ते सब जाकी ताको दीनी । सबकी विदा महीपति कीनी ॥ दुर्योधन संदेश पठायो । भूप युधिष्ठिर पै चलि आयो ॥ ९८ ॥ ( दोहा ) प्रकटे भीतर अवधि तुम, फेरि करौ वनवास ॥ मितिसो पूरण कीजिये, तब तुम करौ प्रकास ॥ ९९ ॥ कहि सब विधि मलमासकी, समझायो सो दूत ॥ समदिशही बैठ्यो तहां, ज्यों सुरपुर पुरुहूत ॥ १०० ॥



इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह विरचितायां अर्जुनविजयवर्णनो नामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

---

( दोहा ) उत्तरसों कीनो मतो, नृप विराट तिहि वार ॥ दुहिता दीजै अर्जुनहि, करि विवाह शुभचार ॥ १ ॥ ( दोधकछंद ) अर्जुन ताको नृत्य सिखायो । द्योस निशा गुण तासु पठायो ॥ ताकहँ सो दुहिता अब दीजै । जियमें और विचार न कीजै ॥२ ॥ यों कहिके तिन दूत पठायो ॥ अर्जुनको यह बैन सुनायो ॥ तोहिं सुता नृप अपनी दीनी । हेतु विवाह सबै विधि कीनी ॥ ३ ॥ ( अर्जुनउवाच ) मैं दुहिता सम जानि पढाई । लाज तुम्हैं नहिं भाषत आई ॥ मो सुतको दुहिता अब दीजै । आनंदसों सब कारज कीजै ॥ ४ ॥ भूपति यों सुनिके सुख पायो । बूझि मुहूरत मंगल गायो ॥ गावत आनँदसों नर नारी । भूप युधिष्ठिरको सुख भारी ॥ ५ ॥ ( दोहा ) दूत द्वारका नगरको, पठयो बहु सुख पाय ॥ वार नलागी वाटमें, कही कृष्णसों जाय ॥ ६ ॥ ( दूतउवाच ) ( दण्डकछन्द ) दीननके नेहसों न डोलतहो गेह गेह द्रौपदीकी लाज

वहे ऐसी कौन वाहतो । तांत मात पास प्रहलादहैं निरास रहे जो नहोती तेरी आस त्रास कैसे सहतो ॥ ओक छांडि आपनो सुलोक कियो लोक लोक कौन भांति थिर थोक ध्रुवलोक लहतो । त्रिभुवनराथ जो पै होते नसहाय आपु कैसे केधौं मेरो काज और लौं निवहतो॥७॥ ( दोहा ) करि आये हो करतहौ, करियो सदा सहाइ ॥ सहित मातु अभिमन्यु लै, आपु पहूंचौ आइ ॥ ८ ॥ चले कृष्ण भगिनी सहित, लै अभिमन्युहि साथ ॥ चले तुरत सुख पाइकै, धर्मसुवन नरनाथ ॥ ९ ॥ मिलिकै शारंगपाणिको, लै आये निज गेह ॥ स्तुति वन्दन युत करी, मन वच क्रम करि नेह । ॥ १० ॥ ( युधिष्ठिरउवाच )। छन्द ) श्रीयदुनन्दन मुनिजन वंन्दन । कल्मष हर सब दुष्ट निकन्दन ॥ जनतारण वक वदन विदारण । दुखदारण गजराज उधारण ॥ ११ ॥ जगपावन संतन मनभावन । व्रजछावन गिरिवर नख लावन ॥ जन मनरंजन भव भय भंजन । दनुज विमर्दन भव धनु गंजन ॥ १२ ॥ कंस विनाशन प्रभु गरुड़ासन । यदुवंशी अवतंस प्रकाशन ॥ असुर निवारण मुनिजन पारण । कुंजविहारण गणिका तारण ॥ ॥ १३ ॥ जगधर नगधर पीताम्बरधर । हरि दामोदर हलधर सोदर ॥ सिंधुसुतावर श्रीराधावर । नरकानि हरवर रदन धरणिधर ॥ १४ ॥ जनकसुता भूषण भुवभूषण । सुर रिपु दूषण तल तल पूषण ॥ भक्तन हितकारी हरि निशिचारी । भक्ति तिहारी सब भयहारी ॥ १५ ॥ (दोहा) करि स्तुति श्रीकृष्णकी, भूपति पुनि शिरनाइ ॥ नगर कंपिला द्रुपदगृह, दीनो दूत पठाइ ॥ १६ ॥ (चौपाई ) सुनत सँदेशो फूल्यो हियो । भूपति द्रुपद पयानो कियो ॥ गज रथ बाहन तुरी तुषार । सब दलयुत साहन भंडार ॥ १७ ॥ पंचाली सुत पांचौ साथ । पहुँ

चे पुरविराट नरनाथ ॥ विदुर गेहते कुंती आई। मिली सुतन अति आनँद छाई ॥ १८ ॥ द्रुपदसुता ताके पद वन्दे। सब विधिके सव जन आनन्दे ॥ बनते चली वरूका आयो। मायावी माया मग छायो ॥१९॥ नगर राजगिरितें चलि आयो ॥ दुरासंध भूपति मन भायो ॥ धर्मपुत्र सुरराज समाना। विबुध अनुज सब बुद्धिनिधाना ॥ २० ॥ शुभघटिका शुभ लग्न गनि, शुभ वासरहि सुधाइ । रच्यो ब्याह अभिमन्यु को, मंगल चार कराइ ॥ २१ ॥ दोऊ कुलकी रीतिज्यों, करि विवाह सुखदानि ॥ बाजी गजरथ छत्र कहि, दीनो आनँद मानि ॥ २२ ॥ (सुंदरीछन्द) भाट भले विरदावलि गावत। सिंधुर बाजिनके गण पावत ॥ नृत्य गुणीजन नर्तन साजत। ताल पखावज साजत बाजत ॥ २३ ॥ को वरणै सब आनँद संयुत। वासरहू निशि कौतुक अद्भुत ॥ भांवरि पारत वेदनि उच्चरि । द्वौ कुलकी ऋषि रीति तबै करि ॥ ॥ २४ ॥ (दोहा) दैसोवो समदी सुता, हरषे भूप विराट ॥ धर्मपुत्र सुख पायकै, लसत अनंदित पाट ॥ २५॥ (युधिष्ठिर उवाच। सोरठा) सुन अर्जुन गुणग्राम, वेगि बुलावो मय सुताहि ॥ धवल सँवारहु धाम, खचि खचि रचि रचि जाल मणि ॥ २६ ॥ (तोटकछन्द) तब पार्थ मयासुर बोलिलयो। बहु भांतिनके सुख सद्म ठयो ॥प्रतिधामनि चित्र विचित्र करयो । रँगरंगनिही गुरुवान ढरयो ॥ अति दीसत सुंदर श्वेत अटा। इक नीलवने जनु मेघघटा ॥ २७॥ उपमा कवि कौन वखानि कहैं। निरखैं नर कौतुक भूलि रहैं ॥२८॥ इक अद्भुत बाहिर शोभ सने। नृप के रहिबे कहँ धाम वने ॥ तहँ बैठत भूपति नित्य सभा। अमरावति मोहति देखि प्रभा ॥ २९ ॥ पुर अंतर धाम सुशोभगहैं। रनिवास जहां सब वाम रहैं ॥ हय हींसत वारन गाजतहैं । निशि

वासर दुंदुभि बाजतहैं ॥३०॥ भुव भूप सभा सुख साजतहैं। द्विज बृंद तहां बहु राजतहैं ॥ बहु भीर तहां दरबार रहैं। कहिको कवि ताहि बखानि कहैं ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्र
सिंहविरचितायां अभिमन्युविवाहवर्णनोनाम
पंचविंशोऽध्यायः॥ २५ ॥

---

(भुजंगप्रयातछन्द) सोमवंश धर्मपुत्र शक्रसों सभा लसै। चारि बंधु देवसे विलोकि दुःख सो नसै ॥ अंजलीन जोरि जोरि कृष्णपै विनय करी।शोधिकै जहां तहां विपत्ति जीवकी हरी ॥१॥ अर्द्ध देश पाइये विचार आपसो करौ । ज्यों हरे अशेप शोक त्यों कलेश ये हरौ ॥ देशते निकारि अंध पुत्र कानि नाकरी । धाम ग्राम छीनि २ संपदा सबै हरी ॥ २ ॥ (दोहा) करिआयेहौ करतहौ, सेवक सदा सहाय ॥ करी वंदना कृष्णकी, धर्मसुवन भुवराय ॥ ३ ॥ (युधिष्ठिरउवाच । छन्द) कच्छप वपु-धरि सागर थाहन । मत्स्यरूप शंखासुर दाहन ॥ वंदत मुनिजन सनक सनंदन ॥ जैजैजै तुम जै जगवन्दन ॥ ४ ॥ शूकररूप रदन धरनीधर । वर हिरण्याक्ष पतित प्राणनिहर ॥ भूतल खल दल दुष्टनिकन्दन । जैजैजै तुम जै जगवन्दन॥५॥नरहरि वपु धरि भक्त सवाँरण। हिरणाकुश नख उदर विदारण ॥ कोटिक कष्टहरण जग-फन्दन। जैजैजै तुम जै जगवन्दन ॥ ६ ॥ छल बल बलि पाताल पठावन। बावन वपु धरि भूतल आवन ॥ काटत सब माया दुख द्वन्द्वन। जैजैजे तुम जै जगवन्दन ॥ ७ ॥ परशु पाणि क्षत्रिय मद नाशन। रघुकुल कमल दिनेश प्रकाशन ॥ रामचन्द्र दशरथ नृप नन्दन। जैजैजै तुम जै जगवन्दन ॥ ८ ॥ कंस कठोर असुर भय-

कारी। केशी मर्दन अजिरविहारी॥ पीत वसन तन चर्चित चन्द-न। जैजैजै तुम जै जगवन्दन॥ ९॥ बोध स्वरूप पुहुमिपर धरि-हौ। कलकी ह्वै दुष्टनिसंहरिहौ॥ वर्णत विदित छत्र बहु वन्दन॥ जैजैजै तुम जै जगवन्दन॥ १०॥ (दोहा) विनय मानिकै करि कृपा, दुर्योधनपै जाउ॥ समझावो बहु विधिनकै, बचै गोतको घाउ॥ ११॥ (चौपाई) विहँसि कृष्ण तबहीं उठि धाये। नगर हस्तिनापुर चलिआये॥ सुनि कुरुनन्दन अनुज पठाये। सभा मध्य श्रीकृष्णहि लाये॥१२॥ (श्रीकृष्णउवाच) धर्मपुत्र तुम पास पठाये। गोत विरोधहि मेटन आये॥ भूपति जगमें यह यश लीजै। आधो देश बांटिकै दीजै॥ १३॥ अपने कुलहि कलंक न लावो। कलह गोतको भूप बचावो॥ दुर्योधन बोल्यो अकुलाई। कैसे सकों कलेश बचाई॥ १४॥ देश बांटि जो उनको देहौं। योगीह्वै कपाल कर लेहौं॥ भूमि बांटि कत मोपै पावैं। जो वे नभ भूतल फिरि आवैं॥ १५॥ (श्रीकृष्णउवाच) और भूमि भूपति जिनि देहु। पंचग्राम दीजै करि नेहु॥ तिलपथ नाग इंद्रपथ लीजै। अरु सुनिपथ पानीपथ दीजै॥ १६॥ (दुर्योधनउवाच। दोहा) सूचि अग्र जितनी कढ़ै, सो कबहूं नहिं देहुँ॥ पीछे भुव वेई लहैं, प्रथम युद्ध करिलेहुँ॥ १७॥ (चौपाई) तुमहिं कहत यह कैसे आवै। जीवत म्बहिं को धरणी पावै॥ सुनि सुनि वचन जरत है गात। जियत सुनै यह अद्भुत बात॥ १८॥ (श्रीकृष्णउवाच। सवैया) लोकमें शोक समूह बिनै अपलोक महा अपने शिर लैहौ। केलि सकेलि महादुख मेलिहौ यों यश पेलिकै अपयश पैहौ॥ उपायकै व्याधि नलीजिये राय सु आयपरे तेहिते पछितैहौ। सूझिपरी यह कृष्ण कही तब आपु मही सब देहौ जुदैहौ॥ १९॥ कोपिकै लेइ गदा कर भीम सुपार्थ धनुर्द्धर बाणनि बा है। बंधु समेत तहां

सहदेव सुसाइर संग्रमको अवगाहै ॥ बैठि ध्वजा हनुमन्त वली रण गाजि उठै यह तू मन चाहै। ऐसोइ भावतुहै जिय तोहिं सुजानै को तेरी कहा मनसाहै ॥ २० ॥ (दोहा) कृष्ण उठे ये वचन कहि, तिनको यह समझाय ॥ भावी सो कैसे मिटै, को कहिसकै बचाय॥२१॥नगर हस्तिनापुर तवै, कुन्ती पहुँची आय॥समाचार श्रीकृष्णजू, कहे सकल समझाय॥२२॥ दुर्योधन मति परिहरी, देत न पांचौ ग्राम॥देवेको कहिका चली, श्रवण सुनत नहिं नाम ॥२३॥ एक बातको भय भयो, कर्णहिं बाढ़यो गर्व ॥ मारिलेहुँ यह कहतहै, जीतौं भारत सर्व ॥ २४ ॥ जाहु आप तुम कर्णपै, लाउ आपने गेह ॥ कुशल होइ तुम सुतनको, बाढ़ै अद्भुत नेह ॥ २५ ॥ कर्ण पास कुंती गई, उन उठि वंदे पाय। करि आदर आसन दयो, बैठे सब सुख पाय ॥ २६ ॥ (कुंत्युवाच। चौपाई) जेठो सुत तू तेरो राज। लेहु सकल गृह चलिये आज ॥ हँस्यो कर्ण माता सुख चाहि। यह सब बात अबूझत आहि ॥ २७ ॥ तब तुम राज्य हमारो टारचो। घालि मंजुषा जलमें डारचो ॥ तनु पोष्यो दुर्योधन छांह। अब कत डारत नरकन मांह ॥ २८ ॥ (कुंत्युवाच) जो नचलो सुत करिके नेहु। एक बात तो मांगे देहु ॥ मो पुत्रनको करि न प्रहार। यह सब करौ दयाको सार ॥ २९ ॥ सुन सुत मेरो वचन विलास। पांच वाण जो तेरे पास ॥ जननीको करिकै हित देहु। यामें जगत विदित यश लेहु ॥ ३० ॥ (कर्णउवाच) चारि पुत्र तुवहित परिहरों। एक पार्थ सों तो रण करों॥ औरनिको नहिं घालों घाउ। अब माता अपने गृह जाउ॥ ३१ ॥ (दोहा) दीने पांचों वाण कर, कुंतीको तिहिकाल ॥ विदा करी पग वंदिकै, तबै कर्ण भुवपाल ॥ ३२ ॥ (चौपाई) यह सुनि कुंती आई तहां। त्रिभुवननाथ कृष्णहैं जहां॥ कही कर्णसों वरणि सु

नाई। यहिविधिकै सब निशा सिराई ॥ २३ ॥ ( दोहा ) प्रात हो
त श्रीकृष्णजी, दुर्योधनके पास ॥ गये फेरि हित संधिके, छत्र सु-
बुद्धि अवास ॥ २४ ॥ ( श्रीकृष्णउवाच ) कह्यो हमारो कीजिये, पं-
च ग्राम किन देहु ॥ बन्धु एकसौ पांचसौ, निशि दिन बढ़ै सनेहु
॥ २५ ॥ ( दुर्योधनउवाच ) नित उठि उसले साल हारि, कतहिं स-
लावत आनि ॥ करों अपांडव भूमि सब, करों न कुलकी कानि२६
( श्रीकृष्णउवाच । घनाक्षरी ) कोपि कोपि भीम भुजा रोपि रोपि
रण मांझ, ओपि ओपि मुख गदालीने गल गाजिहै। रोष हिये आनि
आनि क्रोध धनु तानि तानि, लैकै पार्थ पानि धनु बाण सूधो सा-
जिहै ॥ अश्विनीकुमारके कुमारनकी हांक सुने, धीर न धरोगे ब-
ल पोरुषसो भाजिहै। गर्व्वही अरूढ़ मंत्र मूढ़ तू नजानै कछू चे-
तिहै तूमूढ़ जब आय मूड़बाजिहै ॥२७॥( दोहा ) यह सुनि शकुनि
सरोष ह्वै, कही नृपतिसों जाय॥कहा कानि याकी करो, बांधिलेहु
सुख पाय ॥ २८ ॥ सब मिलिकै चाहत कियो, बैन नहीं कछु बा-
त ॥ बिलखे भीषम बिदुर तब, विह्वल ह्वैगयो गात ॥२९॥(चौपाई)
भीषम विदुर विलोकत जानि। वदन पसारचो शारँगपानि ॥ मुख
भीतर देख्यो ब्रह्मण्ड। संभ्रम पायो चित्त अखण्ड ॥४०॥ (छप्पय)
देख्यो गगन सु सूर्य्य चंद्र तारागण देखे॥देखी पुहुमि सुनीर भूरि
भूधर सुविशेखे ॥ देखे सरिता सलिल सिंधु सरवर जल संयुत।
देखे तरुवर विपिन सघन द्रुम उपवन अद्भुत ॥ मृगराज मत्त मा-
तंग लखि अवलोके ऋषिराज गन ॥ भ्रम भूलि विदुर भीषम रहे
शिथिल विकलह्वै सकल तन ॥ ४१ ॥ ( भीष्मउवाच। चौपाई )
खल दुर्योधन मर्म नजानत ॥ सिख त्रिभुवनपतिकी नाहिं मानत ॥
भूल्यो मूरख नृपता गर्व। कुलके कर्म तजे तिन सर्व ॥ ४२ ॥ ह्वै-
बैहै सो जुरची करतार। भीष्म कहत बारही बार ॥ चले कृष्ण

नृपको समझाइ। पहुँचे धर्मपुत्रपै जाइ ॥ ४३ ॥ (श्रीकृष्णउवाच) सूक्षम महि तुमको नहिं देत। उद्यम लीनो भारत हेत ॥ विना युद्ध वह कछू नदेहै। जो रण जीतै सो भुव लेहै ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह-
विरचितायांश्रीकृष्णदुर्योधनसंवादोनाम
षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

---

## अथ उद्योगपर्व्व कथनम् ॥

(सुंदरीछन्द) बैठिसभा सुत धर्म पहीपति। बोलि लये तहँ कृष्ण महामति ॥ बंधव चारि विराजत ता थल। कौन वखानि कहै तिनके बल ॥ १ ॥ (राजोवाच। चौपाई) युद्ध वचै हरि सो कछुकीजै। भूतलमें बहुधा यश लीजै ॥ मोहिं महा डरमें डरु आवत। विग्रह हौं निशि द्योस वचावत ॥ २ ॥ (दोहा) बनि आई सबके मते, लीने द्रुपद बुलाइ ॥ संधिकाज कुरुराजपै, दीने तुरत पठाइ ॥ ३ ॥ गये द्रुपद नरनाह तब, भूपति कौरव पास ॥ आदर करि आसन दयो, बोल्यो वचन प्रकास ॥ ४ ॥ (दुर्योधनउवाच। गीतिकाछन्द) कौनहेत महीप आये सो कहो समझायकै। पावन भये तुम दरशते बहु सुःख दीनो आयकै ॥ द्रुपद भूपति यों कह्यो जगमें महायश लीजिये। नृप युधिष्ठिरको धरा नृप बांटिकै कछु दीजिये ॥ ५ ॥ नेहकरि कुलकलह नाशो लेहु तिनहिं बुलाइकै। सब आपनी मर्य्यादसों रहिहैं सदा सुखपाइकै ॥ लगी शरसी बात यह सो चित्त नहिं कछु लावही। कहत विनु रण कौन मोपै भूमि रंचक पावही ॥ ६ ॥ कोयुधिष्ठिर भीमको है वचन कोटि नपावही। तौन छांड़ौं वरुण सुरपति आप आय

वचावही ॥ द्रुपद सुनिकै शीश ढोरचो रची सोई हैरहै। सो वचाई क्यों वचै झुकि क्रोधसों तव यों कहै ॥ ७ ॥ (सवैया) लोकमें आप कछू अपलोक नलीजे नलीजे नलीजियेजू ॥ चाहत भूमि युधिष्ठिर सूक्षम दीजिये दीजिये दीजियेजू ॥ यों करि राज निकंटक आपन कीजिये कीजिये कीजियेजू। छत्र महा हितकै तुमवैन पतीजै पतीजै पतीजियेजू ॥ ८ ॥ दीजिये पंच उन्हें अव ग्राम नहीं नृपकी नृपता घटिजैहै। वैठिरहैं तिनमें अव जाय युधिष्ठिर आप महासुख पैहै ॥ जानि अजान प्रमानके मान कि भूमि अवै अपने वललै है। वाणकि धारमें स्योपर वारहि तोहिं वहाइ धनंजय दैहै ॥ ९ ॥ (दोहा) फिरि आये तव द्रुपद नृप, नृपति युधिष्ठिरपास ॥ दुर्योधनकी कुमतिके, कीने वचन प्रकास ॥ १० ॥ (द्रुपदउवाच) वुधि कैकै वहु चातुरी, अरु कैकै उनमान ॥ समझायो समझै नहीं, करिदेखै सव श्वान॥ ११ ॥ हरि विराट पठये तहीं, नृपति तीसरी वार ॥ समझाओ दुर्योधनै, वाचै कलह अपार ॥ १२ ॥ (चौपाई) नृप विराट वहु विधिकै कही। सूक्षमसी कछु दीजै मही ॥ वे संतुष्ट वैठि तहँ रहैं। फेरि कछू नाहिं तुमसों कहैं ॥ १३ ॥ (दुर्योधनउवाच। दोहा) हैहै के जग वावरो, मांगत धरणी आय ॥ हनौं पांडुसुत क्षणकमें, को अव सकै वचाय॥१४॥ हमसों राखौ हेतु तुम, मतिभाषो वे वैन ॥ जौलौं जियमें जीवधर, कहौं न तिलभरि दैन ॥ १५ ॥ (विराटउवाच। सवैया) आपु वरावहु गोतको घाउ उतै उनि वारही वार वराई। देन कहौ नाहिं चारिक ग्राम कहा मति धौं तुमको वनिआई ॥ होनी जोहोइ सो होइरहै नमिटै यह भूपति मैं मति पाई। नीकीयो और वुरी वुधिको सवको करता हरता करताई ॥ १६ ॥ (चौपाई) इन कहिवेमें कछू न राखी। जो मुख आई ते सव भाखी ॥ कहा कहै काहूके

होई। होनी मेटिसकै नाहिं कोई ॥ १७ ॥ आये नृप विराट उठि धाम। किये कृष्णको अकित प्रणाम॥कहे न मानत खल कछु बात।सुनि सुनि वैन जरतहै गात ॥ १८॥ यह सुनि कृष्ण विदा तव भयो। चलिकै नगर द्वारका गयो॥ नृपति युधिष्ठिर मन दुचिताई। बाचत सूझी नहीं लराई॥१९॥(दोहा)उत दुर्योधन अनुज युत, कीनो चित्त विचार ॥ भीषम अरु आये विदुर, बैठ्यो सब परिवार ॥ २० ॥ ( दुर्योधनउवाच। भुजंगप्रयातछन्द ) बढ़्यो शोचतौ आपने चित्त कीजै। मतो होय पूरो पिता मोहिं दीजै ॥ सदा पांडुके पुत्रहैं शाल मेरे। तिन्हैं नाशके यत्न कीने घनेरे॥ २१ ॥ कहो मंत्र जो जासुके चित्त आवै। हितू होय सो हित्तही की बतावै-गई तेरहौं वर्ष यों सुःखमाहीं । रहैशाल जाको सुजीवै वृथाहीं ॥ २२ ॥ (विदुरउवाच) करो मंत्र सोई तुम्हैं चित्त आवै। हमारो कह्यो क्यों हिये माहिं भावै ॥ तजो विग्रहौ संग्रहौ बात ऐसी। सबै भूतलीमें कही वेद जैसी ॥ २३ ॥ (भीष्मउवाच। सवैया) एक सुनै नहिं भाषी अनेक सुटेक सबैहै कुटेककी टेकी। ताको भलो न भयो कबहूं जिहि पैज तजी नाहिं आपु कहेकी ॥ यों समझौ अपने मनमें हठ झूंठकी नाहिंन बानि भलेकी। छांड़िदई कुलकी करनी यह रीति लई हठिकै अविवेकी ॥ २४ ॥ (चौपाई) भुवपै रहत नदीसै कोई। अमर एक यश अपयश होई ॥ हिरणाकुश अरु रावण गयो। यह धन नाहिं काहूको भयो ॥ २५ ॥ कत अभिलाष तासुको कीजै। लोक विलोक अलोक नलीजै ॥ हानि होइ जीते अरु हारे। यम रहिहैं नित वदन पसारे ॥ २६ ॥ सुनत वचन नाहिं भूपहि भायो। तब तिन नियरो शकुनि बुलायो ॥ सोई करो जु मंत्र विचारो। मो उर भावत वचन तिहारो ॥ २७॥ (शकुनिउवाच) मेरो मतो महीपति कीजै। नगर विराट वेगि

लीजै ॥ जौलौं उनको नहीं सहाउ । लै सब सेना तिहि थल जाउ॥
॥ २८ ॥ पांचौ वंधुन मारौ आज। सीझि जाय तौ सगरौ काज ॥
उपजतही जो काटिय व्याधि।फिरि कत मारिय औषध साधि२९॥
(दोहा) अंकुर निरखि करेछको, कापि तोरे तिहिकाल ॥ त्यों अ-
पने अरि मेटिये, कुटुँब सहित भुवपाल ॥ ३० ॥ (चौपाई) सुनि
मतमानि भूप दल साजा॥सकल बुलाये भुवके राजा ॥ सिमटे दल
पुहुमी नसमाय । छार भये सब गिरिवर जाय॥३१॥आये सोमदत्त
भुवराय । अरु भगदत्त सबल दल लाय ॥ तिनके दलकी संख्या
नाहीं । रथ हय हाथी गने नजाहीं ॥ ३२ ॥ सेना शल्य क्षोहिणी
तीन । को रथ बाजी गनै करीन ॥ कर्ण महारथ वन्त पलान्यो । अ
गणित दल कलिंग तहँ आन्यो ॥ ३३ ॥ कोपि चढ्यो रण आप
सुशर्मा । कौन गनै रण अद्भुत कर्मा ॥ दुर्योधन द्वारावति आये ।
आवत श्रीहरि दर्शन पाये ॥ ३४ ॥ (दुर्योधनउवाच) करौ सहा-
य हमारो आप । तौ जगमें अति होय प्रताप ॥ दल सजि चलो
हमारे साथ । बारबार विनवैं नरनाथ ॥ ३५ ॥ (श्रीकृष्णउवाच)
(दोहा) मैंतो सब आयुध तजे, अस्त्र गहौं नहिं हाथ ॥ कृतवर्मा
यादव दयो, दलयुत ताके साथ॥३६॥यादव दल सजिके चल्यो, सु
भट चमू चतुरंग ॥ अस्त्र शस्त्र तनु त्राण कसि, कसे चर्म्म सब
अंग ॥३७॥ तीन क्षोहिणी शकुनि दल, नीरद घोर समान ॥ चप-
ला चंचल चल ध्वजा, धनुषहि धनुष बखान ॥ ३८ ॥ दल एका-
दश क्षोहिणी, सिमिटि चल्यो कुरुखेत ॥महारथी अरु अतिरथी, वल
कतहैं रण हेत ॥३९॥(सवैया)कोपि चल्यो दुर्योधनको दल कोपि
चले सब शूर बलीहैं। कुंजर पुंजनिपायक जाल सुभार परै भुव भूरि
हलीहैं॥छायरह्यो तम लोपि दिवाकर लोपि गई सब व्योम थलीहैं।बा-
जिनकी खुरतारनिसों उठिकै धरधूरि अकाश चलीहैं ॥ ४० ॥

( सुन्दरीछन्द ) कुंजर पुंजनि पुंजनिसोहत । लालध्वजा तिनपै मन मोहत ॥ दीरघ शब्द महाध्वनि गाजत । ज्यों तड़ितायुत वारिद राजत ॥ ४१ ॥ हैं यह चंचल कै खग खंजन । पौन कुरंगनकी गति गंजन ॥ शंख घने बहु दुन्दुभि बाजत । वन्दि सबै बिरदावलि साजत ॥ ४२ ॥ ( मधुभारछन्द ) सुपर्व्वत चूरि । भये सब धूरि ॥ गये मिटि नीर । हुते जुगँभीर ॥ ४३ ॥ गये कुरुखेत । सजे रण हेत ॥ पर्‍यो दल जाय । धरा नसमाय ॥ ४४ ॥ ( दोहा ) इत दल साज्यो सबल अति, नृपति युधिष्टिर नाह ॥ चढ्यो वीर रस सबनिको, सबहींके उत्साह ॥ ४५ ॥ साज्यो बहुरि विराट दल, रथी अतिरथी शूर ॥ चलत द्विरद बाजी चपल, फूटि होत गिरिचूर ॥ ४६ ॥ साज्यो द्रुपद विराट दल, दुरासंध सुख पाइ ॥ चले पांडुसुत साजिकै, गर्जि निशान बजाइ॥ ४७ ॥ अर्जुन समदे द्वारका, त्रिभुवनपतिके हेत ॥ हमसों अरु कुल कौरवनि, युद्ध होय कुरुखेत ॥ ४८ ॥ ( अर्जुनउवाच । चौपाई ) हेरत बाट युधिष्टिरराइ।चलिये साईं करो सहाइ॥जैसे काज सदा करि आये । सो न कछू अब जात गनाये ॥ ४९ ॥ ( श्रीकृष्णउवाच ) दुर्योधन बहु दल लै गयो । तजे अस्त्र यह मैंपनुलयो ॥ जो जियमें यह भावै तोंहि । तौ अर्जुन लैचलिये मोंहि ॥ ५० ॥ ( अर्जुनउवाच ) दल दुर्योधनको सब दीजे । हम विनवैं सो पूरण कीजे ॥ आप चलौ नित दर्शन पावैं । कल्मष और कलेश नशावैं ॥ ५१ ॥ ( दोहा ) आप हमारे पगु धरो, दल कोऊ लैजाहु ॥ पार्थ साथ श्री हरि चले, जहां हुते नरनाहु ॥ ५२ ॥ ( चौपाई ) आवत धर्म पुत्र सुख पाये । हर्षि हर्षि हरिके गुण गाये ॥ सिमिट्यो सेन क्षोहिणी सात । उद्यत रणको प्रफुलित गात ॥ ५३ ॥ ( दोहा ) उमड़्यो घुमड़्यो जलद सो, कीनो कटक पयान ॥ तड़ित पताका गरज

घन, गरजनि सिन्धुर जान ( सोरठा ) चलिआये कुरुखेण, जित तित दीसत घोरदल ॥ वलकत भट रण हेत, सजे कवचसेनाह तन ॥५४॥ ( दोहा ) जुरि अष्टादश क्षोहिणी, दोऊ दल इकठौर ॥ महारथी अरु अतिरथी, शूर सुभट शिरमौर ॥ ५५ ॥ ( अथ अक्षौहिणीसंख्या । दोहा ) एक द्विरद रथ एकहै, तीन अश्व असवार ॥ जमले दश संख्या कहे, पायक पांच विचार ॥ ५६ ॥ हाथी १ रथ १ असवार ३ पयादे ५ जमले १० ( दोहा ) तीन पंक्तिको होय इक, सेना मुखता नाम । अपने अपने बुद्धिवल, समुझिलेय गुणग्राम ॥५७॥ हाथी३ रथ ३ असवार ९ पयादे १५ जमले ३० इतिसेनामुखतासंख्या ॥ ताते तिगुणी गुल्म इक, जानि जानि उर लेहु ॥ ताकी संख्या छत्रकवि, बुधिवल सव करि देहु ॥५८॥ हाथी ९ रथ ९ असवार २७ पयादे४५इतिगुलमसंख्या ( दोहा ) फेरि गुल्म तिगुणी करौ, जो कछु संख्या होय ॥ छत्र कहौसो वाहिनी, कहै जगत सवकोय ५९ हाथी २७ रथ २७ असवार ८१ पयादे १३५ इतिवाहिनीसंख्या ( दोहा ) कीजै तिगुणी वाहिनी, ताही पृतना जानि॥ हय हाथी पायक रथी, कहि कवि-छत्र वखानि ६० हाथी ८१ रथ ८१ असवार २४३ पयादे ४०५ इति पृतना संख्या ॥ तालपृतना जोरिकै, एक चमू तव होय ॥ अपने अपने चित्तमें, समुझिलेहु सवकोय ६१ हाथी २४३ रथ २४३ असवार ७२९ पयादे १२१५ इति चमू संख्या॥६०॥ ( दोहा ) एक चमूको जोरिकै, तिगुणी करौ जो कोइ ॥ छत्र सकल समझौ अवै, अनीकिनी सो होइ ६१ हाथी ७२९ रथ ७२९ असवार २१८७ पयादे ३६४५ इति अनी किनी संख्या ॥ ६२ ॥ ( दोहा ) अनीकिनी सेना सकल तिगुणी कीजै ताहि ॥ सोई संख्या छत्रकवि अनीकिनी दश आहि ॥६३॥

हाथी २१८७ रथ २१८७ असवार ६५६१ पयादे १०९३५ इति दश अनीकिनी संख्या ॥ (दोहा) दश अनीकिनी दश गुणी, सोजत पण्डित जानि ॥ ताहीसों इक क्षोहिणी कहि कविछत्र बखानि ॥ ६४ ॥ हाथी २१८७० रथ २१८७० असवार ६५६१० पयादे १०९३५० इति अक्षौहिणी संख्या (दोहा) जुरे अठारह क्षोहिणी, को कवि कहै बखान ॥ छत्र सकल संख्या कही, जानि लेहु सब जान ॥ ६५ ॥ हाथी ३९३६६० रथ-३९३६६० असवार ॥ ११८०९८० पयादे १९६८३०० इति अष्टादश क्षोहिणी संख्या६५ (दोहा) दल एकादश क्षोहिणी, कुरुनन्दन नरनाथ॥भीषम अरु भगदत्त नृप, द्रोण कर्ण सब साथ॥ ६६ हाथी २४०५७० रथ २४०५७० असवार ७२१७१० पयादे १२०२८५० इति कौरवदलकी संख्या अक्षौहिणी॥११॥ (दोहा) सप्त क्षोहिणी पांडुसुत, राजत सेन समाज ॥ द्रुपद विराट नरेश तहँ, शुभकारी ब्रजराज ॥ ६७ हाथी १५३०९० रथ १५३०९० असवार ९५९२७० पयादे ७६५४५०

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां राजादुर्योधनयुधिष्ठिरकुरुक्षेत्रआगमनोनामसप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥

---

(दोहा) कार्तिककी सितपक्षकी, त्रयोदशी शुभ जानि ॥ सन्मुख दल दोऊ जुरे, फिरि तहँ कियो मिलानि ॥ १ ॥ (सुन्दरीछन्द) भानु गयो छिपि रैनि भई तब।अपने ठौर विराजतहैं सब॥ घोर घटा सम सेन परी तहँ । बंदि सबै कुलके किलके जहँ ॥२॥ है चपलाचलसी ध्वज सोहति । सो विदिशानि दिशा मन मोहति॥ गाजत कुंजर ज्यों घन गाजत। गोरमदायनसे घन राजत ॥ ३ ॥

नाद सजे सब ठाम गुणी जन। बोलत ज्यों पिक चातकके गन॥ घोर घने घनसों उमड्यो दल। द्वादश योजन लोपि लियो थल४॥ (दोहा) कार्त्तिक शुक्ल चतुर्दशी, प्रातभयो सब जानि॥ दुहूंओ-रके सेन तब, ठाढ़्यो भयो पलानि॥ ५॥ बुधि पूरो विक्रम ब-ली, साधु संत सुरज्ञान॥ सुरसरिसुत दलपति कियो, कुरुनंदन बलवान॥ ६॥ अमित पराक्रम मेरुसम, सरवर कीजै ताहि॥ सेन भार भीषम लयो, सम लज्जा उर जाहि॥ ७॥ सुरसरि सुत दलपति करयो, सुन्यो पंडुसुत कान॥ बिलखि वदन दुचिते भ-ये, रहे न घटमें प्रान॥ ८॥ (चौपाई) जब यह भीषमकी सुधि पाई। जने जनेके मन दुचिताई॥ त्रिभुवनपति अब रक्षा करिहैं धर्मपुत्रके सब दुख हरिहैं॥ ९॥ कृष्णहि पूछि मतो यह लीनो। धृष्टद्युम्न चमूपति कीनो॥ महापराक्रम संयुत शूरो। रणमें जो बल विक्रम पूरो॥१०॥ लयो सेन आभार शिर, ह्वैके प्रफुलित गात॥ताको साहस को कहै,कहत न बनई बात॥११॥जुरि ठाढ़े द्वै दल भये,रज छाई असमान॥ भई छपासी द्योसही, भये छपाकर भान॥१२॥उत दलपति भीषम लखे, कहत पार्थ भट राउ॥त्रिभुवनपति यह युक्ति नहिं, क्यों करि घालौं घाउ॥ १३॥ (नाराचछंद) विनय करौं सुरारिजू सु मानि चित्त लीजिये। तजे कृपाण गोत घाउ कौन भांति कीजिये॥ विलोकि कै कुटुम्ब बंधु पुत्र मित्रको गनै। अलोक होइ लोक लोक युद्धमें तिन्हें हनै॥ १४॥ (दोधकछन्द) इन भीषम कोटिक दुःख हरे। बहु भांतिनके प्रतिपाल करे॥ तिनको क्यहि भांति हथ्यार सजौं। अप कीरतिसों बहु चित्त लजौं॥ १५॥ यह काज नहीं हमते सरिहै। नहिं सन्मुख बाण धरयो परिहै॥ जब अर्जुन ये बहु बैन सजे। अरु आतुरह्वै धनु बाण तजे॥ १६॥ (श्रीकृष्णउवाच) कहि

क्यों यह कातर बुद्धि भई। शिशुता मनसे अजहूं नगई॥ अब क्षत्रिय धर्म विचारि हिये। नाहिं पाप कछू अब युद्ध किये॥१७॥ (दोहा) समुझाये बहु ज्ञान कथि, भगवद्गीता गाइ॥ अमर एक ध्रुव यश रहै, कह्यो कृष्ण समुझाइ॥ १८॥ (सवैया) तेज धरा जल पौन अकाश मिलैके विरंचि शरीर रच्योहै। क्रोध विरोध सलोभ सकाम सुगर्व समोह समूह रच्योहै॥ एक रहै जगमें यश औयश काल बलीपै नकाऊ बच्योहै। बंधु कुटुम्ब त्रिया सुत हेतुहि लीन भयो बहु नाच नच्योहै॥ १९॥ (दोहा) बदन पसारयो कृष्ण तब, पार्थ लख्यो अकुलाइ॥ देख्यो सब भारत भयो, अद्भुत कह्यो नजाइ॥ २०॥ (श्रीकृष्णउवाच। चौपाई) कत अर्जुन तू संशय करै। यह दल सब या थल संहरै॥ यामें सब बचिहैं दशजने। और सकल तू जूझे गने॥ २१॥ मैं यह सब भारत करि राख्यों। यह तोसों मैं यशहित भाख्यों॥ तेरो करयो कहा अब होई। करै कहा ताको अब कोई॥ २२॥ अर्जुनको सुनि संशय गयो। लयो धनुष हरि आयसु दयो॥ संभ्रम केवल कृष्ण भगायो। उठ्यो वीरतिनको शिरनायो॥ २३॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह विरचितायां श्रीकृष्णभगवद्गीताज्ञानउपदेशवर्णनोनामअष्टाविंशोऽध्यायः॥ २८॥

---

## अथ भीष्मपर्व्व कथनम्।

(दोहा) पंडुपुत्र कुरुराज रण, कोप उठे दल दोइ॥ चर्म वर्म तन त्रान कसि, बलकत भट सब कोइ॥ १॥ (दंडकछन्द) वीर रस रसे शूर कवच सनाह कसे कोपि कोपि यत्र तत्र पैज युद्धकी लई। चूरि चूरि वन नीर सोखि सोखि भूरि भूरि पूरि पूरि व्योम धूरि

घोसही निशा भई ॥ थर थर कंपिउठे भूतलके थल थल धर धर कूरमकी छातीमें महाठई । पायक अपारनिसों मत्तदंती भारनिसों वाजि खुरतारनिसों क्षिति छार ह्वैगई ॥२॥ ( भीष्मउवाच । छप्पय ) क्षत्री कुलहि कहाय सकल कुलधर्म नशाऊं । पातकानि दै निगम और द्विज दोपनिपाऊं ॥ गुरुके वचननि मेटि सर्व तीरथ व्रत हारौं । गुरुजन शासन भंग लोककी लीकहि टारौं ॥ वह लाज होय नृप शांतनुहि वाण कृपाननि परिहरौं । प्रतिद्योस दीह दुर्घट सुभट सो जोन सहसदश संहरौं ॥ ३ ॥ ( दोहा ) शूर सँहारों सहसदश, दिनप्राति करि चित चाउ ॥ नित्य करों जलपान तव, इतनो करि भरिठाउ ॥ ४ ॥ ( चामरछन्द ) ब्रह्म रुद्र इन्द्रजू सहाय आय जो करैं । कोपि कोपि युद्ध वाण कोटि कोटि जो धरैं ॥ लोकपाल जो जुरैं तऊ न पैज टारिहौं । आजुते इतेक शूर नित्य नित्य मारिहौं ॥ ५ ॥ पार्थसों जुरे कराल युद्धभो महा-वनो । लंकनाथसों सक्रुद्ध रामचन्द्रहैं मनो ॥ गंगपुत्र अस्त्र शस्त्र वाण वृष्टि यों करै । सारथी रथी समेत ठाम ठाम संहरै ॥ ६ ॥ ( दोहा ) उत्तर जूझ्यो प्रथमही, करि बहुधा संग्राम ॥ एक अयुत भीषम हने, गने नपरई नाम ॥ ७ ॥ जूझे दोऊ सेनके, रथी द्विरद रणमांझ ॥ भीषम पुजयो आपु व्रत, बहुरि ह्वैगई सांझ ॥ ८ ॥ रैनि भये सब शूरमा, कियो नशर संधान ॥ सजे सकल भट सेनके, प्रात उगतही भान ॥ ९ ॥ मारु मारु दुहुँ दल भई, उठे वीर रण गाजि ॥ पायक रथी मतंग गण, अरु जूझे ब हु वाजि ॥१०॥ मंडलीक कीनो धनुष, शर छायो आकाश ॥ व्रत पाल्यो दश सहस हति, करि सेना उर त्राश ॥ ११ ॥ ( चौपाई ) दिनप्राति दश दश सहस सँहारे । रथी अतिरथी गजरथ मारे ॥ मारग कृष्णा पष्ठी भई । पांडुपुत्र उर चिंता ठई ॥ १२ ॥ भीषम

अगणित शूर सँहारे। पांडुपुत्र सवही हियहारे ॥ रह्यो युद्ध तहँ निशि ह्वैगई। पांडुसुतनके उर मति भई ॥ १३ ॥ (दोहा) अर्द्ध-रैनि जवहीं गई, आये भीषम पास ॥ वहु विधि कै स्तुति करी कीन्हे वचन प्रकास ॥ १४ ॥ (दोधकछंद) आजु पिता कछु सो मति दीजै। जाविधि जीति सवै दल लीजै ॥ ज्यों कुरुनंदनको दल छीजै। आयसु देहु सु तौ अव कीजै ॥ १५ ॥ (भीष्मउवाच) (छप्पय) जौलग मोघट प्राण कहौ को सरवर पावै।चिरंजीव कुरु-राज ताहि पद ओछो आवै ॥ विजय करै को शूर मोहिं देखत रण माहीं।जो जितवै व्रजराज तोहिं तो अचरज नाहीं॥सुनि धर्मपुत्र सुखसींव यह सत्य मानि चित लीजिये। जियत हमारे समरकी कछु संदेह नकीजिये ॥ १६ ॥ (गीतिकाछंद) मोहिं पितु वरदान दीनो परम उर सुख पायकै। विना वोले काल नियरो क्यों सकैगो आयकै ॥ मांगिहौं मुख मृत्यु लहिहौं ना पराजय देखिहौं। वाण जाको साधिहौं गतप्राण ताके लेखिहौं ॥ १७ ॥ मोहिं को रण जीतिहै विधि रुद्र सुरपति रण करैं। जाहि ताके हरों प्राणनि वाण निष्फल नापरैं ॥ वृद्ध शिशु अरु नारिको द्विज को धनुप कर ना गहौं। भजो देखि न ताहि मारों सत्य तोसों हौं कहौं ॥ १८ ॥ आपनी जय भूप चाहौ तौ कहौं सो कीजिये । द्रुपद नृपको सुत शिखण्डी ताहि आगे दीजिये ॥ नारिते वह पुरुषभो ताकी कथा सुनिलीजिये। तुम योग शिक्षाहौं कहौं नरनाथ ताहि पतीजिये। ॥ १९ ॥ (चौपाई) काशिराजकी सुता दुलारी । करी शम्भुसेवा तिहि भारी ॥ तियते पुरुष भई वर पाई । लीनो जन्म द्रुपद गृह आई ॥ २० ॥ आगे दै उपदेशों तोहिं । वाणन पार्थ वेधिहै मोहिं ॥ भीषम जव इहि विधिकै कह्यो । पग वन्दे नहिं संशय रह्यो ॥ २१ ॥ अपने ठाम धर्मसुत आये। सत्य वचन भीष

मको पाये ॥ सुःख सुते भिनसारो भयो। उद्यम महायुद्धको लयो।
॥ २२ ॥ ( दोहा ) सुभट शिखंडी अग्र करि, पांडु पुत्र वलवंड ॥
छायलयो शरजाल नभ, संग्रह कियो अखंड ॥ २३ ॥ मारु मारु
द्वैदल रटे, होत अमित गलगाज ॥ उठत अग्नि असिवर बजत,
जूझत सुभट समाज ॥ २४ वीतीमारग सप्तमी, समर होत अति-
काल ॥ रुधिर सलिल पूरी पुहुमि, दीसै ठाम कराल ॥ २५ ॥
युद्ध होत दिन नव गये, को कवि कहै बखानि ॥ दशवें दिवस
कराल रण, परचो भटनसों आनि ॥ २६ ॥ कीन्ह्यो असुर अला-
पसों; अभिमन्युहि संग्राम ॥ रण विकर्ण तासों करचो, जाहि
घरूका नाम ॥ २७ ॥ भीमसेनसों तव जुरे, दुश्शासन बलवान ॥
चित्रसेन सहदेवसों, कीनो कोपि कृपान ॥ २८ ॥ नकुल सुशर्मा
द्रोणसों, द्रुपदरायसों युद्ध ॥ धृष्टद्युम्न गुरुद्रोण सुत, समर करचो
ह्वै क्रुद्ध ॥ २९ जुरचो युद्ध भूरिश्रवा, द्रुपदसुता सुत संग ॥ राउ
विराट कलिंगसों, कोपि कियो रणरंग ॥ ३० ॥ कृतवर्मा अरु पार्थ
सों, बाजी अस बर मारु ॥ पायक हय सारथि रथी, भये सकल
संहारु ॥ ३१ ॥ भूप युधिष्ठिरसों करचो, संग्रम शल्य अपार ॥ इते
सुभट रणभू मिमें, जुरे एकही वार ॥ ३२ ॥ ( सोरठा ) कोपि भीमाति
हि बार, हन्यो दुशासनको द्विरद ॥ गिरचो पुहुमि विकरार, अं-
जनको सो गिरिपरचो ॥ ३३ ॥ ( दोहा ) कृतवर्मा यादव तहां,
करी बृष्टि शरजाल ॥ काट्यो पंजर पार्थको, कीनो रण विकराल
॥ ३४ ॥ जे शर छांड़े पार्थ रण, ते खंडें उन वान ॥ अंधकार धर
उरधमें, ह्वैही गयो निदान ॥ ३५ ॥ कौन गने अब पार्थको, भय-
कारी संग्राम ॥ वाणनिसों बेध्यो कटक, वरणि कहै को नाम ॥३६
(सवैया) ज्यों मृगयूथनि ऊपर केहरि कोपि उठ्यो रण पार्थ वली।
वाण चले असमानहुँ लौं सुमनों शलभा उठि व्योम थली ॥ खंड

करी ध्वज चौंर पताक भई उपमा यह छत्र भली। मानों उड़ी त-
जि शैलके शृंगनि हंसके वंशनकी अवली ॥ ३७ ॥ (दोधकछद)
ठामहिं ठामहिं शूर संहारे। कोपि किते हय सिंधुर मारे ॥ बाण
विशाल हत्यो कृतवर्मा। मोहि गिरयो धर वर्म सुचर्मा ॥ यादव
मोहिं परयो जब देख्यो। सेन सबै भयकाल विशेख्यो ॥ भागत
यों भट अर्जुन आगे। पौन बिडारत ज्यों घन भागे ॥ ३८ ॥
(दोहा) आयो शकुनि सरोष है, कह्यो पार्थ कित जाइ ॥ यादव
जाने मोहिं जनि, डारों गर्व्व नशाइ ॥ ३९ ॥ आयो सन्मुख शक्ति
गहि, पार्थ करी द्वैखण्ड ॥ धायँ शरासन बाणकर, तब दीनो बलव-
ण्ड ॥ ४० ॥ सोऊ कीनो खण्डद्वै, अर्जुन परम प्रवीण ॥ रथ का-
ट्यो सारथि वध्यो, करी पताका क्षीण ॥ ४१ ॥ लज्जित खल थल
तजि भज्यो, तनुकी नहीं सम्हार ॥ लखि दुर्योधन आदि सब, संश-
य करो अपार ॥ ४२ ॥ (दोधकछन्द) रोषकियो शतबन्धव धाये।
अर्जुनसों सब जूझन आये ॥ घेरिलियो जबहीं रथ ऐसे। घेरत
पर्व्वत इन्द्रहि जैसे ॥ ४३ ॥ त्यों चहुंवा सब कौरव कोपे। ज्यों
मघवा घन शूरहि लोपे ॥ बाणन सों रथ छाय लयोहै। सम्भ्रम
कृष्णहिं चित्त भयोहै ॥ ४४ ॥ (दोहा) सहदेव धाये नकुल, भी-
म घरूका साथ ॥ शोच गहे शशि राहु ज्यों, धर्मपुत्र नरनाथ४५॥
(चौपाई) अर्जुन बाण वृष्टि जब करी।कुरुनन्दनदल धीर न धरी॥
उड़ीं पताका बाणन साथ। कटिगे धनुष रहे नहिं हाथ ॥ ४६ ॥
ज्यों बड़वानल पौनहिं पाई। कौरव सेना चली पराई ॥ मारु
मारु दोऊ दल गाजैं। अतिगति खड्ग खड्गसों बाजैं ॥ ४७ ॥
पवनपुत्र सुतधर्म्म प्रचारयो। लैकरगदा धनुष भुवडारयो ॥
रथ हय हस्ती तिहि दल मारे। वज्रपात जनु पर्वत
फारे ॥ ४८ ॥ क्षतनि छाय भट भ्यानक भेसू। यत्र तत्र जनु फू-

ले टेसू ॥ अद्भुत रण को सकै बखानी। गिरिसे परे करी भुव आनी ॥ ४९ ॥ (दोहा) जूझे दुर्योधन अनुज, हने भीम पच्चीश ॥ कहूं बाहु कहुं जंघहैं, कहूं परैं धर शीश ॥ ५० ॥ (सवैया) कोपि गदा करले तिहि खेत कियो दल दुर्गम दीह सँभारचो। जूझे रथी कटि कुम्भन सिन्धुर शोणित पूरि प्रवाह प्रचारचो ॥ ग्राह भसुंड दुकूल ध्वजा झष चामरकै शशिवार निहारचो। पौनके पूत बली रण जीतिकै सांचेहु युद्धको सिन्धु सुधारचो ॥ ५१ ॥ (दोहा) राख्यो भीम कलिंग तहँ, द्वैघटिका विरमाय ॥ धनुष धरे भट राउ तहँ, भीषम पहुँचे आय ॥ ५२ ॥ बूड़त पाई थाह जिमि, त्यों दल तिनको पाइ ॥ घरी घरी साहस बढ्यो, को कवि कहै बनाइ॥५३॥

इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्र
सिंहविरचितायांकौरववधभीमसेनविजय
वर्णनोनामऊनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

---

(भीष्मउवाच। सवैया) आजुही चक्र गहाइके कृष्ण हि आजु घनो दल द्वन्द्व विदारों। आजु महारथवन्त हतों सब आजुही कुंजर वाजि सँहारों ॥ आजु अपाण्डव भूमि करों वर आजुही काज इते सब सारों। जौ नकरों इतनो पुरुषारथ तौ कुलक्षत्रिय धर्मनिं हारों ॥ १ ॥ (दोहा) भीषम कोप्यो देखिकै, तव अर्जुन गुणग्राम ॥ द्रुपदकुँवर आगे करचो, जाहि शिखण्डी नाम ॥ २ ॥ (भुजंगप्रयातछन्द) हँस्यो गंगको पुत्र सो नैन देख्यो। तवै आपनो काल जी माहिं लेख्यो ॥ महारोषसों कोपिकै पार्थ धायो। दिये वर्म आगे गहे खड्ग आयो ॥ ३ ॥ महाकालको कालसों वाण लीनो। फरी खड्गसों तोरि द्वैखण्ड कीनो ॥ तवै गंगके पुत्र लै शक्ति ऐसी। महामीचके तेजहूतें अनैसी ॥ ४ ॥

लखी पार्थ द्वैखण्ड लै त्राण कीनी। सबै देखि सेना तबै त्रास भीनी॥ महारोपसों गंगको पुत्र छायो। धनुर्वाण लै सैनके सौंह धायो॥५॥ (दोहा) कोपि हते द्वैअयुत रण, रथी अतिरथी शूर॥ पायक है गज क्षतन छुटि, चले शोणके पूर॥ ६॥ (सवैया) धीर धरै न चमू चतुरंग सुभागत कोउ न काहु सम्हारो। थाकि रहे पुरुषारथके आति पारथ आपु हिये बहु हारो॥ अश्व गिरे कहुँ बीर गिरे कहुँ मत्त गयंदनको गण डारो। भूप युधिष्ठिरको तृणसों दल कोपकी आगिमें भीषम बारो॥ ७॥ (दोहा) हतो पांडुसुत दल सबल, विचारि चल्यो दिशि चारि॥ भीषमसों मन वचन क्रम, सबहीं मानी हारि॥ ८॥ जब जानी सेना चली, भीषमसों सब हारि॥ धाये करधरिचक्र प्रभु, रक्षक भक्त मुरारि॥ ९॥ (सवैया) चक्र गह्यो करि कोप मुरारि निहारि तहां अपनो प्रण टारचो। ज्यों रथते धँसि धाये धरा गज यूथनि ऊपर सिंह प्रचारचो॥ पेखतही तिलकावलि शीश, नहीं चित ओर विचार विचारचो। पीठिदई करुणामय ताहि कृपा करिकै जनको पन पारचो॥ १० (अर्जुन उवाच। दोहा) सोई हारत पैज कत, जीत्यो यह संग्राम॥ द्रुपद पुत्र हहुँच्यो तहां, धृष्टद्युम्न ता नाम॥ ११॥ (चौपाई) कौरवको दल कोपि सँहारचो। यत्र तत्र हाति भूतल डारचो॥ पार्थ शिखंडी लै तब धायो। भीषमके तब सन्मुख आयो॥ १२ देखि शिखंडी बाणन गह्यो॥तिनके सन्मुख ठाढ़ो रह्यो॥बाणनि बेध्यो पार्थ शरीर। तब हँसि बोलो भीषम वीर॥१३॥अर्जुन इषु बेधतहै मेरे। बाण नहोय शिखंडी तेरे॥ द्रुपदपुत्र जेते शर हये।लगे न तनमें निष्फल गये॥१४॥ अर्जुन बाणन मोहे प्रान। भूमि गिरचो यों कहि बल वान॥ मारग कृष्ण अष्टमी भईतब भीषम शर शय्या लई १५॥ (दोहा) भीषम पौढ़े सेज शर, दशयें दिन वरवीर॥ पूरब शिर

पश्चिम चरण, पर्‌यो पुहुमि रणधरि ॥१६॥ बरषैं सुमनन स्वर्गते, सुर सब चढ़े विमान ॥ आई कौतुक सुरतरुणि, जित तित रूपनिधान ॥ १७ ॥ जैसे शब्द अकाशभो, धनि भीषम भट राउ॥ कौरवको अरु शकुनिको, मिट्यो चित्तको चाउ ॥ १८ ॥ भयो कुलाहल कटक सब, बिलख वदन दीसंत ॥ जन जन उर आतंक ह्वै, संभ्रम बढ़्यो अनंत ॥ १९ ॥ भीषम शरकी सेज लखि, लटकत शीशहि जानि ॥ पट भूषण कुरुराज तब, दये उसीसे आनि ॥ २० ॥ ( भीष्मउवाच ) तुम नहिं जानत यह समौ, लीनो पार्थ बुलाइ ॥ बाण बेधि ऊँचो कियो, शीश सुभट तहँ जाइ२१॥ ( चौ० ) भीषम कहै तजौं तब प्रान । जब उत्तरदिशि आवै भान ॥ काढ़ी गंग पार्थ तिहि बाण । छाय रह्यो जलकितो प्रमाण ॥ २२ ॥ जहँ शर शय्या भीषम पर्‌यो । बहुत यतन तहँ मँदिर कर्‌यो ॥ आयसु बिना मीच नहिं आवै । कौन सुभट भीषम सरि पावै ॥२३॥ ( दोहा ) समर करण कुरुराजसों, पांडुपुत्र सों रैनि ॥ भयो अमित गति दानवनि, सुरपति कैसी ऐनि॥२४॥ ( दंडकछन्द ) नेकहू नमानी दुर्योधन अठान ठानी जाय क्यों बखानी उन भूमि मांगी थोरीसी । गेहनिको नेह मेटि तेहई की बानि लई सुखके पियूष माहिं विष भूरि घोरीसी ॥ खोटो अति जीको नसुभाव पर्‌यो नीको कछू आपनी कहीको सबै कुलकानि तोरीसी । कैकै हठ शठ भीषमादि सेन तृण सम मूरख बरायदयो तोरि तोरि होरीसी ॥ २५ ॥ ( दोहा ) लयो सेनको भार तब, द्रोणाचारज शीश ॥ तिनहींके सँग सबलदल, चढ़े सकल अवनीश ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणविजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह
विरचितायांभीष्मपितामहसंमोहनो
नामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

# अथ द्रोणपर्व्वकथनम्।

( सोरठा ) दलपति द्रोण बजाय, चढ़्यो कोपि रण रुद्रसों ॥ कटक समुद्रहि पाय, शोषत देखत रोष करि ॥ १ ॥ ( दोहा ) सज्यो सेन इत पांडवनि, पार्थ चढ़्यो रण कोपि॥ निरखतही मृगराज ज्यों, जात करी दल लोपि ॥ २ ॥ घुमड़े घनकन गाज ज्यों, द्वै जलमाहिं निशान ॥ चपल पताका दामिनी, सिन्धुर घटा समान ॥ ३ ॥ द्रुपदराय गुरु द्रोणसों, भयो युद्ध अतिकाल ॥ दोऊ वीर समानहीं, वृष्टि करत शरजाल ॥ ४ ॥ प्रथम द्योस रण करि रहे, दोऊ वीर समान ॥ कवच सनाह कसे सबनि, प्रात उगतही भान ॥ ५ ॥ जुरे वीर दोउ ओरके, रज छाई असमान ॥ भई निशासी छाय तम, लसे क्षपाकर भान ॥ ६ ॥ ( त्रिभंगीछन्द ) साजि चर्म सवर्मा अद्भुत कर्मा कोपि सुशर्मा आयगयो । जगमें यश लीजै विरमु न कीजे पार्थहि यह सन्देश दयो ॥ जुरि हमसों न्यारो युद्ध सँवारो अति भारो आनन्द करो ॥ विरमु न लावहु सन्मुख आवहु धनुष चढ़ावहु बाण धरो ॥ ७ ॥ ( दोहा ) अर्जुनके उर वीररस, अति बाढ़्यो सुनि बैन ॥ दोऊ समर प्रवीण अति, क्योंहूं रण उसरैन ॥ ८ ॥ आयो तहँ भगदत्त नृप, बलको कछू न अन्त ॥ अंजन गिरि पर सूरसों, गज ऊपर सोहन्त ॥ ९ ॥ ताके सिन्धुरके चले, को कवि कहै सुनाइ ॥ वाह वातके परसही, वारण गण उठिजाइ ॥ १० ( दोधकछन्द ) भीम वली भगदत्त विलोक्यो। आवत सो भट कौरव रोक्यो॥ नेकहु सो वरज्यो नाहिं मानै ।भांतिन भांतिनको रण ठानै ॥११॥ अंकुश मारि करी तिहि पेल्यो । भीम वली न ठिलै रण ठेल्यो ॥ पौनके पूत सो मुष्टि प्रहार्‍यो ॥ सो गज नेक टरै नाहिं टार्‍यो ॥ १२ ॥ उद्यमकै वहु थाकि रह्योई । जात नहीं मुख बैन कह्योई ॥ पौनको पूत जितो वल ठानै । कुंजर

सों मन नेक न आनै ॥ १३ ॥ (दोहा) चतुरदन्त उनमत्त बल, गर्जत भीमहि पाइ ॥ चाहत लयो लपेटिकै, अब नहिं कछू वसाइ ॥ १४ ॥ (त्रोटकछन्द) भीमसेन बल कीनो सर्व्व। रोम न टूट्यो भाज्यो गर्व्व ॥ कुंजर पै नहिं पावै जान। को भगदत्त नरेश समान॥ १५ ॥ पर्‌यो शब्द अर्जुनके कान। वाही दलको छांडे षान॥ को कहिसकै न साहस रह्यो। तबहिं धाय तिन अर्जुन लह्यो॥ १६ ॥ अर्जुन भीम लख्यो तृण तूल। लई शक्ति जैसो शिव शूल ॥ रावण ज्यों लक्ष्मणपै छंडी। बरु करि इंद्रपूत तब खंडी ॥ १७ ॥ खंड करी द्वै बाणनि काटि। और लयो दल बाणनि पाटि ॥ तब भगदत्त सम्हारो आप॥जाको जगमें बड़ो प्रताप॥१८॥ पांच बाण करमें तिन लये। तब अर्ज्जुनके उरमें हये ॥ लागत उरमें सो पर जर्‌यो । विषम बाण तिन धनुपर धर्‌यो ॥ १९ ॥ (दोहा) झुकि कुंजरके शिर हयो, डार्‌यो शीश विदारि ॥ पार भयो शर बेधि तनु, कर्‌यो फाँक द्वै फारि ॥ २० ॥ कुंजर सबल फँका कर्‌या, दावि गह्यो भगदन्त ॥ गिरन न पावत भूमिमें, साजत यतन अनन्त ॥ २१ ॥ जीत्यो चाहत पार्थको, पेलत बारंबार ॥ पगदे सकत न द्विरद सो, अंकुश हने अपार ॥ २२ ॥ (सवैया) दावि गह्यो युग जानुमें सिंधुर पौरुषको कवि कौन बखाने। युद्ध जुरै न मुरै बरवीर सो भांति अनेकनिके रण ठाने ॥ पेलत क्रोध किये भगदत्त न कुंजर नेकहु अंकुश माने । निर्द्धनकी त्रिय आयसु ज्यों अपने पतिकी कछु चित्त न आने ॥ २३ ॥ (दोहा) युगल जंघमें मृतक गज, वारवार झकझोरि ॥ हार्‌यो दैदै अंकुशै नहीं सकत अँगमोरि ॥ २४ ॥ बीतेएक मुहूरते, भूमि गिर्‌यो गज-राज ॥ प्यादो ह्वै भगदत्त तब, धायो भट शिरताज ॥ २५ ॥ (सोरठा) कोपि खड्ग लै धाय, क्रोधित अति राते नयन ॥ मघवा

चढ़्यो वजाय, चपला असि वर जलद तन ॥ २६ ॥ (दोहा) दो शर लै दोऊ हनी, तवहीं पारथ वाहु ॥ विन भुज सन्मुखपार्थके, चलो वली नरनाहु ॥ २७ ॥ (सोरठा) पार्थ तीसरो वान- हन्यो शीशमें क्रोध करि ॥ मूर्च्छि गिरचो बलवान, उठि अर्जुन सन्मुख चल्यो ॥ २८ ॥ (चौपाई) तव सोपंच पैड़ चलिगयो। अर्द्धचन्द्र लै अर्जुन हयो ॥ काट्यो जानु जंघ धर परचो यों भग दत्त भूप संहरचो ॥ २९ ॥ हाहाकार कटकमें भयो। शूरन मन रवि सम आथयो ॥ कौरव नृपके दुख अति भारी। सुखकी सकल वासना जारी ॥ ३० ॥ (दोहा) लीनो अर्जुन लाय उर, भूप युधिष्ठिर आप ॥ आजु करी संग्राम जय, कीनो प्रकट प्रताप ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायांभगदत्तवधवर्णनोनाम एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

---

(सुंदरीछंद) जूझिपऱ्यो भगदत्त लख्यो जब । कौरव सोदर रोवतहैं सब ॥ शोच बढ़्यो जियमें अति शोचत । नैननते अँसुआ बहु मोचत ॥ १ ॥ वन्दतहैं गुरुके नृप पायन । दीन भये बहु भाषत भायन ॥ आपनुहीं सब कारज लायक । क्यों बिगरै जहँ होउ सहायक ॥ २ आजु भयो तुम युद्ध पराजय। वे रणजीति गये सब निर्भय ॥ आपु विचार कछू अब ठानहु । होय विजय मति सो उर आनहु ॥ ३ ॥ (दोहा) राच्यो चक्रव्यूह गुरु, सुनि अवनीपति बैन ॥ दुर्गम दीरघ दुसहता, जान्यो कछू परैन ॥ ४ ॥ (द्रोणउवाच) न्योति पठावहु पाण्डुसुत, आवहिं रणको आज ॥ कै जूझैं कै जाहिं वन, सीझिजाय सब काज ॥५॥ (त्रिभंगीछन्द) सुनि

गुरुबानी सो सिख मानी उर आनी तब बुद्धि यहै।तब दूत बुलायो सो चलि आयो वेगि पठायो जाय कहै ॥ तब आयसु पायो तुरत सिधायो शीश नवायो भूप जहां। सो सबनि जुहाऱ्यो लै बैठाऱ्यो बंधव चाऱ्यो लसत तहां॥६॥( दूतउवाच। सोरठा ) दीनो यह संदेश चक्रव्यूह राच्यो तहां ॥ रण हित चलहु नरेश,कै तजि विग्रह जाहु वन ॥ ७ ॥ ( युधिष्ठिरउवाच। दोहा ) न्योति पठाये आयहैं, कहौ जाय संदेश ॥ दूत समदि कीनो तहां, भूपति उर अंदेश ॥ ८ ॥ ( चौपाई ) जेते भटहैं या दलमाहीं। चक्रव्यूह सो जानत नाहीं ॥ अर्जुन श्रीहरिसंग सिधायो। तीरथते चलि सो नहिं आयो ॥ ९ ॥ ता बिन युद्ध कौन यह करिहै। चक्रव्यूह बैठिकै लरिहै ॥ अर्जुन बिन जानो दलहीनो। ताते न्योतो रणको दीनो ॥ १० ॥ तीनों बंधुन राजा बूझै। कहौ मंत्र जो जाको सूझै ॥ जो यह युद्ध नहीं बनिआवै। राजपाट क्षितिको को पावै ॥ ११ ॥ प्रथमहि भीमहि बूझै राजा। जो रण जीतो सीझै काजा ॥ सुनिकै उत्तर भूपहिदीनो ऐसे सुन्यो न मैं रण कीनो ॥ १२ ॥ ( छप्पय ) जुरैं युद्ध गंधर्व सर्व तिनको बल गारों। किन्नर नर अरु यक्ष सबल बल, दल संहारों॥ वज्रपाणि जो वज्र लेहिं तो चित्त न आनो। युद्ध करत दिन रैनि नहीं हों कछू अघानो ॥ बहु शंक अंक नग पन्नगनि को मोसों सरवरि करै। सुन भूप मोहिं या युद्धकी, सो न कछू विधि जानि परै ॥ १३ ॥ ( दोहा ) बूझै नृप सहदेव तब, जो यह जानहु युद्ध ॥ जीतलिये ह्वैजायगो, राजपाट सब शुद्ध ॥ १४ ( सहदेवउवाच ) जीतौं दानव देव हौं, जुरै युद्ध जो आय ॥ पै विधि चक्रव्यूहकी, कछू न जानी जाय ॥ १५ ॥ ( राजोवाच ) करो नकुल संग्राम यह, राखि कटककी लाज ॥ नातरु भूमि गई सबै, रण कीनो बिन काज ॥ १६ ॥ ( नकुलउवाच। छप्पय ) आजु अमित संग्राम

देव दानवसो मंडों। जुरै युद्ध जो आय कालदंडहुको दंडों॥ सव अवनीपति जीति गर्व तिनके वर गंजों। सकल शत्रु संहारि बाहुबल सब दल भंजों॥ सुन भूप पाय तुव आयुसै, हौं इतनो संग्रम करों॥ यह सौंह मोंहि नृप पांडुकी सो उलटि पुहुमि ऊपर धरों॥ १७॥ (दोहा) देख्यों सुन्यों न कानहूं, चक्रव्यूह नरेश॥ सो न युद्ध कहुँ मैं कियो, यह जियमें अंदेश॥ १८॥ (चौपाई) राजा बहु जियमें पछिताई क्यों जीत्यो अब संग्रम जाई॥ बिना पार्थ बहु भयो अकाज। पुहुमि नशाई बूड्यो राज॥ १९॥सुर नर दल सब भीमहि डरैं। ताहूते कछु काज नसरैं॥ सहदेव अरु नकुल विचारि। तेऊ गये हिये अब हारि॥ २०॥ बैठ्यो भूपति नाये शशि। नाहिं बोलत कोऊ अवनीश॥ चारो बंधव मनमें शोचैं॥ मन पछितायँ नयन जल मोचैं॥ २१॥ सकल कटकमें बीत्यो त्रास। अतःपुर सब पर्‍यो उपास॥ यह सब साधु सुभद्रा सुन्यो। हियें शोच करि माथो धुन्यो॥ २२॥ पतिकी सूरति चितमें धरी। नैननि जल देही थरहरी॥ कृष्ण साथ चलि अर्जुन गयो। बहुर्‍यो नहीं कहातो भयो॥ २३॥ सुत अभिमन्यु गोदमें पर्‍यो। माता नैननि आंशू ढर्‍यो॥ पर्‍यो पुत्र उरपै तिहि बार। चिन्ता कीनी चौंकि कुमार॥ २४॥ (अभिमन्युरुवाच। दोहा) कौन हेतु तुम मलिन हौ, कहि धौं सो समझाइ॥ या जगमेंतो तैं सुखी, और न कोऊ आइ॥२५॥(सवैया) ज्येठ युधिष्ठिर भीम बली जहँ हैं जगवंदन कृष्णसों भाई। धीर धनुर्द्धर अर्जुनसों पति युद्ध जुरै यमहू खापि खाई॥ हैं विवि बंधु सहदेवसों देवर कीरतिहै सब भूतल छाई। मो सम पुत्रहि पायकै माय कहा कहिधौं मुखपै मलिनाई॥ २६॥ (दोहा) रुदन करनको या समय, कहिधौं कारण कौन॥ काहूके उर त्रास नाहिं, सम्प-

तिं संयुत भौन ॥ २७ ॥ (सुभद्रोवाच) तुम पितु रण हित कृ-
ष्ण सँग, गयो कसे तनु त्राण ॥ आई सुधि नीकी नहीं, कहौ रहत
क्यों प्राण ॥ २८ ॥ (चौपाई) भूप युधिष्ठिर दुःख निदान। भोज-
न कर न लंख्यो पान ॥ तीनौ अनुज रुदन बहु करैं। बैन नहीं
मुखते अनुसरैं ॥ २९ ॥ नहीं पार्थकी सुधि कछु नीकी। यहै बात
सुतहै मो जीकी ॥ चलि अभिमन्यु भूप पै गयो। जाय सभामें
ठाढ़ो भयो ॥ ३० ॥ बिलख्यो सब परिवार विलोक्यो। नैननिते
जल रुकै न रोंक्यो ॥ माता वचन सत्यकै मान्यो। जूझ्यो अ-
र्जुन निश्चय जान्यो ॥ ३१ ॥ (दोहा) उलटि चल्यो तब गेहको,
निरखि भीम तब धाय ॥ बिलख्यो देख्यो पार्थसुत, लीनो अंक
लगाय ॥ ३२ ॥ (अभिमन्युरुवाच) क्यों भूपति मन मलिन
हौ, अरु दुचिते सब मौन ॥ हर्ष न काहू उर लख्यो, कहिये का-
रण कौन ॥ ३३ ॥ (भीमसेनउवाच) छल कीनो इक द्रोणगुरु,
चक्रव्यूह बनाइ ॥ ताहित न्योत्यो युद्धको, दीनों यहां पठाइ ॥
॥ ३४ ॥ कहि पठई कुरुराज नृप, कै रण राच्यो आय॥कै तजि
कै संग्राम थल, रहौ विपिनमें जाय ॥ ३५ ॥ (गीतिकाछंद)
नहीं हम सो समर जानै श्रवणहूं न सुन्यो कहूं ॥ देवपुर पाता-
ल जीत्यो नहीं देख्यो सो तहूं ॥ और भूप न ताहि जानत पार्थ-
को धोखो रह्यो। सुनतही अभिमन्यु उठिकै पवनसुत सों यों
कह्यो ॥ ३६॥ यह काज हौं सब सारिहौं कह चित्तमें संशय कि-
यो। जाय भूपति निकट तबहीं युद्ध हित बीरा लियो ॥ आजु
कौरव कुल सँहारौं द्रोण कर्णहि संहरौं। हतौं वर दुश्शासनै यह
समरकी जय हौं करौं ॥ ३७ ॥ (सवैया) काहेको शोच करोजू
इतौ यह काज कितौ अबही सब सारौं। आजु हतौं क्षणमें रणमें
सब कौरवको कुल कोपि सँहारौ ॥ देखतही दल द्रोणको दारि

सुखङ्ग दवागिनिसों पर जारों । बाजि विरद्द गरद्द करौं सब मीड़ि महारथवंतनि मारों ॥ ३८ ॥ (दोहा) अद्भुत गति भूपति गनी, लखि शिशु साहस धीर ॥ शूराणे मणिके हरि कलित, शील सिंधु सो वीर ॥ ३९ ॥ ( राजोवाच ) नहिं गुरु ढिग विद्या पढ़ी, समर न देख्यो नैन ॥ करि साहस बीरा लयो, जानी कछू परैन ॥ ॥ ४० ॥ मोहिं अचंभो पुत्र सुनि, को तू दानव देव ॥ गन्धर्व किन्नर यक्ष तू, कहि सब अपनो भेव ॥ ४१ ॥ ( अभिमन्युरुवाच ) ( छप्पय ) सेवक सोई धन्य स्वामि कारजमें शूरो । धन्य धन्य सोइ पुत्र मात पितु आयसु पूरो ॥ धन्य धन्य वह दास भंग नहिं शासन करई । धन्य धन्य सोइ शूर समर पग उलटि न धरई ॥ धनि बोलि सत्य कहि छत्र कहि सुयश सकल जग लीजिये । बहु राज काज मन लाज धरि जन्म सफल अब कीजिये ॥ ४२ ॥ ( दोहा ) नहीं भूप संशय करो, शोच नशावहु चित्त ॥
करौं विजय भट सब हनो, आजु रावरे हित्त ॥ ४३ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां चक्रव्यूहरचनो नामद्विंत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

---

( युधिष्ठिरउवाच ) ( दोहा ) पढ्यो न गुरु ढिग तैं कहूँ, लख्यो न नैनन युद्ध ॥ क्यों कांध्यो तैं मार सुत, सो मोसों कहि शुद्ध ॥ १ ॥ ( अभिमन्युरुवाच ) सुनि नृप पूरब जन्मकी, कथा कहौं समझाय ॥ मथुरापुर उत्तम अवनि, शोभा कही न जाय ॥ २ ॥ ( सुन्दरीछन्द ) भार भयो उपजे बहु दानव । चैन नहीं बहुधा सुनि मानव ॥ होम घने तप यज्ञ नशावत । होन नहीं व्रत संयम पावत ॥ ३ ॥ भारत विप्रनि देखि तमो थल । दीरघ दीरघ दान-

वके दल ॥ है बहुतै वसुधा जिय व्याकुल । जात भई तव ब्रह्म पुरी थल ॥ ४ ॥ ता मुख वात सुनो जगवंदन । भूमि भये तवही नंद नंदन ॥ भार उतारि दले दल दानव । ठावहिं ठांव थपे मुनि मानव ॥ ५ ॥ ( सवैया ) भूतल भार उतारनको जगमें अवतार मुरारि धरयो । मारि वकी बगको मुख फारि अघासुरको बल प्राण हरयो ॥ तोरिलये रद धाय भुशुंड ते कोपि करी जब आनि अरयो । कंसको हंस विध्वंस तहां सब दानव वंश निवंश करयो ॥ ६ ॥ ( चौपाई ) तव श्रीकृष्ण पैज उर धरी । सकल भूमि विनु दानव करी ॥ छोटे वडे असुर जे भये । ते वर विक्रमके सब हये ॥ ७ ॥ मारे सव वहु त्रास दिखाई । मो माता तब बची पराई ॥ गर्भवती पितुगृह सो गई । ऐसी गति विधिना निर्मई॥८॥ताके गर्भ जन्ममैं लयो।कछू ज्ञान तव मोउर भयो॥खेलन जाउँ शिशुनके संग। नाना विधि सव राचत रंग॥९॥यक शिशु यो कहि गारी दई । सुनत मोहिं वहु लज्जा भई । तव उन कहिन ज्ञाति ना गोत । तोहिं हनौं तेरो को होत ॥ १० ॥ चलि तव मातापै हौं आयो । तवहीं सव वृत्तांत वतायो ॥ को कुल कौन पिता कहु माता । कहां कुटुंव वंधु निज भ्राता ॥ ११ ॥ ( मातउवाच ) पुत्र पिताकी जो गति सुनिहौ । वहु पछितैहौ माथो धुनिहौ ॥ कुटुंव तुम्हारो श्रीहरि हन्यो । बालक वृद्ध तरुण नहिं गन्यो ॥ १२॥ ( दोहा ) कोऊ उवरयो असुर नहिं, पुरुष न कोऊ वाम ॥ कीनी अपुवश पुहुमि सव, निर्भय मथुरा धाम ॥ १३ ॥ लाज भई यह बात सुनि,क्रोध भयो वहु चित्त ॥ सुनि पितुकी वैसी दशा, कियो यतन ता हित्त ॥ १४ ॥ धूम घूंटिहै औंध मुख, नींद भूंख सव साधि ॥ तन मन सव एकांत करि, शिवसों लगी समाधि ॥१५॥ ( दंडकछंद ) नीचो राखि मूरध चरण किये ऊरधमें धूम घूंटि

घूंटि तप कीनो त्रास ना कछ्वै । सूखिगई त्वचा सब आमिष विलाय गयो शोणको सलिल चल्यो केतिक बखानिच्वै ॥ एक चित्त साधिकै समाधि महाकष्ट साधि कीनो न विराम कबहूं न घटिकाहू द्वै । छत्रकहि शंभुनाथ भूतनाथ भवनाथ शंकर प्रसन्न भये मोपर दयालुह्वै ॥ १६ ॥ ( दोहा ) हौं प्रसन्न तोसों भयो, मांगु मांगु उत्ताल ॥ जो इच्छा तुम मन रहै, सो पुरवों इहिकाल॥ ॥ १७ ॥ ( चौपाई ) तब मैं तिनसों विनई सेव । नमो देव देवनके देव ॥ वृत्ति भूमि मों मथुरा गाउँ । तीनिहुँ भुवन प्रकटता नाउँ ॥ १८॥वासुदेव भूतल अवतरयो । दानव को कुल तिनसंहरयो॥ लघु बालक कहुं रहन न पायो । सो हरि तहँ अवनीश कहायो ॥ १९ ॥ भागी गर्भवती मो माता । नैहर गई जहां निज भ्राता॥ ताके गर्भ भयो ताठाउँ । धरो मातु अहिदानव नाउँ ॥ २० ॥ अब स्वामी सो करो उपाउ । अपने कुलको पाऊँ दाउ ॥ लगै न आयुध होय न घाउ । दे कछु ऐसो करो सहाउ ॥ २१ ॥ ( दोहा ) जाके बल हरिको हतौं, कुलको बदलो लेहुँ ॥ लहौं विरत बर आपनी, जननीको सुख देहुं ॥ २२ ॥ दीनों एक मँजूष तब, है शिव परमदयाल ॥ तुव रक्षा ह्वैहै समर, सब भाष्यो तिहि काल ॥ २३ ॥ ( शिवउवाच ) ( छंदमधुमार ) जब रण जैहै । जय यश पैहै ॥ अरि कुल गंजै । परदल भंजै ॥ २४ ॥ जब रण जानै । अरि न परानै ॥ बहु बल कीनो । करि बल लीनो ॥ २५॥ ( दोहा ) रहिये बैठ मंजूषमें, तोहिं न लखिहै कोइ ॥ तुम तनुकी रक्षा महा, याहीते सबहोइ ॥ २६ ॥ आयो गेह मँजूष लै, बीते केतिक काल ॥ मथुरापुरको उठि चल्यो, जीतन श्रीगोपाल ॥ २७ ॥ जब कछु चलि मारग गयो, लये मँजूषा शीश ॥ विप्ररूप मोको मिले, तीनि भुवनके ईश ॥ २८ ॥ ( गीतिकाछंद ) जरायुत सब देह निर्बल

लकुट करमें लेखिये । चल्यो आवत कष्टसों विच वाट केशव देखिये ॥ दया उपजी मोहिं देखत कही यह गति हेरिकै । कहो विप्र चले कहां वाणी सुनाई टेरिकै ॥ २९ ॥ रदन दाबी अंगुली द्विज कही मोढिग आयकै । सुनत आवै कृष्ण यों कहि क्यों बचै भगिजायकै ॥ शब्द ऊंचो क्यों करै स्वर दीन क्यों नाहिं बोलई । ता विप्रकी मुख सुनत वाणी मोहिं चित चिंता भई ॥ ३० ॥ (दोहा) मैं विनयो ता विप्रसों, कृष्णहि कहा डराउ ॥ क्यों बोलै स्वर दीन तू, सो कहि मोसों भाउ ॥ ३१ ॥ विरति भूमि मथुरापुरी, तहँ असुरनको वास ॥ कृष्ण मानिकै वैर चित, कीनो सब को नास ॥३२॥ हौं प्रोहित तिनको सदा,तिन बिनु ह्वैगयो हीन,॥ नहीं बच्यो यजमान जग,अब सबसों आधीन॥३३॥(चौपाई) कृष्ण सँहारे असुर अनेक। भागि बची तरुणी तहँ एक॥ गर्भवती पितुके गृह गई । ऐसी गति विधना निर्मई ॥३४ ॥ ताके पुत्र भयो मैं सुन्यों चालि तहँ जाउँ चित्तमें गुन्यों ॥ वह सुत ह्वैहै बहु बलवान । अवशि राखिहै मेरो मान ॥ ३५ ॥ हति कृष्णहि मथुरापुर लैहैं। धाम ग्राम हमको लै देहैं ॥ यह सुनिकै मेरो मन मान्यो । वह मैं निज प्रोहित करि जान्यो ॥ ३६ ॥ तब मैं सो द्विज निकट बुलायो । सब विधि अपनो भेद बतायो ॥तू प्रोहित हौं तुव यजमान । रहु मों पास राखिहौं मान ॥ ३७ ॥ (दोहा) फूल्यो द्विज ये वचन सुनि, हर्षवन्त अकुलाइ ॥ मोसों हित भाषे वचन कहि धौं तू कित जाइ ॥ ३८ ॥(चौपाई) तब मैं अपनों भेद बतायों । कृष्णहि हौं जीतन चलिआयों ॥ तब फिरि विप्रकहै अकुलाय । तोपै क्यों रिपु जीत्यो जाय॥ ३९ ॥ (दोहा) बली नहीं है कृष्णसों, तीनि लोकमें कोय ॥ तासों तोसों युद्धमें, कैसे सरवर होय ॥ ४० ॥ तोहिं देखि धीरज भयो, जान्यो जीवन

आज ॥ अब मथुरा जानि जाय तू, ह्वैहै महा अकाज ॥ ४१ ॥ तब मैं कह्यों मंजूपको, भेद सबै समुझाय ॥ दीनो शंभु कृपालु ह्वै, प्राणन रक्षक आय ॥ ४२ ॥ सकल निपातों अरि चमू, कौन सकै रण जीति ॥ हारत जानि मंजूषमें, पैठिरहौं यह रीति ॥ ४३ ॥ सोरह सहस करी लगी, ते सब लेहुँ लगाइ ॥ मोहिं लखै नाहिं शंभु बिनु, दूजो कोऊ आइ ॥ ४४ ॥ (चित्रपदाछन्द) विप्र कहै तब ऐसे । तू रण जीतिहि कैसे ॥ जानतहौं छल कीनो । तोकहँ है यह दीनो ॥ ४५ ॥ सो न कछू कहि जाई। तूकाहि मोसों समुझाई ॥ मैं सब बात बताई । बात सबै द्विज पाई ॥ ४६ ॥ (दोहा) सीख लराईसबलई, छलिकरि द्विज वपु मंडि ॥ बैठ्यो मोहिं मँजूपहीं, सकल कपटको छांडि ॥ ४७ ॥ (चौपाई) विकट करी उन सब लगाई । जेमैं हुती वाहि समुझाई ॥ तामें मोहिं मूँदि सो गयो । बुद्धि नशाई परवश भयो ॥ ४८ ॥ थाक्यो बल सब पौरुष भाग्यो । कीनो सो कछु काज न लाग्यो ॥ शिव शिव कहत तजे मैं प्रान । फिरि तब प्रकट भये भगवान ॥ ४९ ॥ (दोहा) एक कुपीमें मूँदियो, श्री-हरि मेरे प्रान ॥ होनी होई ह्वैरहै, जो राचे भगवान ॥ ५० ॥ चोक-सकै तब सो कुपी, दई सुभद्रा हाथ ॥ बिनु बूझे खोलो न तुम, यों विनयो यदुनाथ ॥ ५१ ॥ (चौपाई) पतिके गह सुभद्रा आई । तब सो कुपी हाथही लाई ॥ न्हाई ऋतुवंती ह्वै नारि । ... सुगंध सुलखी उघारि ॥ ५२ ॥ सूंघत ताको बहु सुख पायो । ... उदर पैठिहौं आयो ॥ दिन दिन बाढ़त विकट शरीर । ... सुभद्राहि धराति न धीर ॥ ५३ ॥ देखौं ताकी ह्वैबी ... गई जीवनकी आस ॥ सहस्रबाहु अरि दानव भयो । ... मात पै गयो ॥ ५४ ॥ (दोहा) दिन दिन देही ... रह्यो शरीर ॥ देखन आये हरिव्यथा, भगिनीके ...

( श्रीकृष्णउवाच ) कहा तोहिं मन कामना, कहा वसै तुव चित्त ॥ सो मोसों समझाय कहि, आनौं तेरे हित्त ॥ ५६॥ ( सुभद्राउवाच ) पैरों रुधिर प्रवाहमें, यह भैया चित मोहिं ॥ नित्य नित्य इहि विधि करौं, अथवा मारौं तोहिं ॥ ५७ ॥ ( त्रोटकछन्द ) भ्रम श्रीहरि चित्त भयो तवहीं। भगिनी मुख बैन सुन्यो सबहीं ॥ बहु संभ्रम चित्तहि छाय रह्यो। कछु जाय नहीं मुख बैन कह्यो ॥ ५८ ॥ जब सूर छिप्यो कछु रैनि गई । तब व्याकुलता भगिनीह भई ॥ हरिसों यह बैन बिचारि कह्यो। कहि एक कथा बसि चित्त रह्यो ॥ ५९ ॥ ( दोहा ) श्रीहरि चक्रव्यूहकी, कीनी कथा प्रकाश ॥ क्षमा भई सुनिकै कछू, मिट्यो कछू मन त्राश ॥ ६० ॥ ( चौपाई ) यहि विधि कथा तहां सुनि लई । सुनत सुनत आधी निशि गई ॥ दैत्यनहूं को निद्रा क्षई । कछू क्षमा ताके उर भई ॥ ६१ ॥ कथा रही यह मो चित आई । हूंका दै तव कथा कहाई ॥ तवहीं हरि भाषा पहिचानीं । कही न तवसों फेरि कहानी ॥ ६२ ॥ ( कुण्डलिया ) कीनो संभ्रम चित्तमें, कृष्ण कमल दल नैन । उत्तर काहू असुरको, नरकी भाषा हैन ॥ नरकी भाषा हैन उदरमें हौ तिन जान्यो। सहसबाहुको शत्रु आपनो तव पहिचान्यो ॥ पहिचान्यो तिहि बार सज्यो तुव यतन नवीनो । को कवि सकै बखानि चित्त जे तो भ्रम कीनो ॥ ६३ ॥ ( दोहा ) सहस वाहुको कृष्ण तन, पुतरा रच्यो बनाइ ॥ कर कुश लै अभिषेक करि, मंत्र जप्यो अकुलाइ ॥ ६४ ॥ तासों सकल भुजा नशीं, द्वै भुज रहीं शरीर ॥ तब हौं प्रकट्यो भूमिपर, भई सुभद्रहि धीर ॥ ६५ ॥ चक्रव्यूह कथा सुनी, सुन्यो गेहको भाउ ॥ भीम पैज करि ताहि वर, तोरि लेइ करि चाउ ॥ ६६ ॥ जिती कथा सब मैं सुनी, सो वरणी तो जाइ॥ रह्यों सुने बिनु भीमसों, तोरि देहि

चनी१४॥
। निरखि
गई ) तव
ढरयो ॥
॥ १६ ॥
नाहीं ॥ है
ो ॥ १७ ॥
भान ॥ सू-
१८ ॥ ( उत्तर
न अकुलाइ ॥
९ ॥ ( सवैया )
छ वराती । गावत
ती ॥ रातइ भूपण
सखी मिलि तेल
दोहा ) कह्यो विप्रसो
तुए है, गर्भ धरचो ति
न्यु रण, चक्रव्यूह निके-
उधि हेत ॥ २२ ॥

नुक्तावल्यांकावि
न्युपयानवर्ण
यः ॥ ३४ ॥

---

पठायो । नाम लसै विदव-
आयो । सो हटिसेन कितो
देख्यो । घोर घनो घनसों

मंगल गाये सखिन मिलि, बाजन विविध बजाइ ॥ न्योछावरि मणि मुक्त करि, नीरज चीर लुटाइ ॥ ३ ॥ वंदिन मिलि बोल्यो विरद, रथ आरूढ़ कुमार ॥ चल्यो सबल दल साजिकै, कोपि कर्‌यो किरवार ॥ ४ ॥ (सुन्दरीछन्द) कुंजर पुंजनि पुंजनि सोहत। बैरख जाल महा मन मोहत ॥ देखत यों कविता छवि साजत । ज्यों उत दामिनी बारिद राजत ॥ ५ ॥ चंचल बाजि किधौं खग खंजन । पौन कुरंगनिकी गति गंजन ॥ ज्यों शलभागण पायक राजत । शोभन दीरघ दुन्दुभि बाजत ॥ ६ ॥ (दोहा) रज उड़ि लोप्यो व्योम रवि, रह्यो घोर तमछाइ ॥ कमठ कसमस्यो शेषको, लचकि लचकि शिर जाइ ॥ ७ ॥ (दण्डकछन्द) छाती होत धरधर शेषकी धराधरते कूरम कलमलात भूरि तला तल तल ॥ टूटि टूटि द्रुम क्षिति छूटि छूटि नीर गये खूदि खुरतार सुखे सरिता सकल जल । चहूं ओर चकित चवाइ ससवाइ गये आरि अवनीश कंपि कंपि उठे हलहल ॥ सुर अवतंश पंडु वंश अंश अर्जुनके सेन चले हालिउठे भूतलके थल थल ॥ ८ ॥ (दोहा) चलत कटक पहुँच्यो तहाँ, जहँ विराटको धाम ॥ दियो शोधु इक सहचरी, जगी उत्तरा बाम॥९॥(सख्युवाच)जीतन चक्रव्यूहको, कोपि चल्यो तव कंत ॥ चल्यो वीर रस कटकमें, हर्षवंत दीसंत ॥ १० ॥ अति आतुर जे वचन सुनि, उठी उत्तरा बाम ॥ निरख्यो प्रीतम प्राणपति, सब साहसको धाम ॥ ११ ॥ (चौपाई) कीन्ही कुँवरि मोह अधिकाई । नहीं करी कछु कृष्ण भलाई ॥ अबहौं सत्य वचन इमि भाख्यो । जात कुमारको अबहूं राख्यो१२ उपज्यो मोह कृष्ण पहिचान्यो । तब विचार उरमें यह आन्यो ॥ परम निठुरता तब उपजाई ॥ मोह काटिकै रची रुखाई ॥ १३ ॥ तब अभिमन्यु लखी तिय ऐसी । चन्द्रवदन रति कमला जैसी ॥

सूक्षम सुभग सकल अँग बनी । दीनी विधि शोभा अति घनी१४॥ ( दोहा ) वरणि कहांलौं काहि कहौं, रूप बाहिकमबाल । निरखि कुँवरको मन मथ्यो, मन्मथ तेही काल ॥ १५ ॥ ( चौपाई ) तब उपाव श्रीहरिजू कस्यो । सब तन मथि मनसिज जल ढस्यो ॥ पान मांझ सो जल धरि लयो । कुँवरि उत्तराके कर दयो ॥ १६ ॥ भक्षत वगारि गयो तनु माहीं । यह संयोग कोउ जान्यो नाहीं ॥ ह्वै संतुष्ट सुवीरज लयो । चलि अभिमन्यु अगाड़ी गयो ॥ १७ ॥ निशिको कीनी जाय मिलान । भई निशा तव अथयो भान ॥ सूनी सेज उत्तरा नारि । जागी स्वप्न अरिष्ट निहारि ॥ १८ ॥ ( उत्तर उवाच । दोहा ) देख्यो स्वप्न अरिष्ट मैं, याते मन अकुलाइ ॥ जानौं कुशल न कुँवरकी, प्राण उव्योसों जाय ॥ १९ ॥ ( सवैया ) जाति विवाहनको अभिमन्यु भये सपने कपि रीछ वराती । गावत जंबुक बाघ सों गीतनि मंडप छावत गिद्ध सँवाती ॥ रातइ भूपण रातयमालसो पाग बनी गहरे रँगराती । पांच सखी मिलि तेल चढ़ावति या डरते धरकी बहुछाती ॥ २० ॥ ( दोहा ) कह्यो विप्रसो दान करि, वैठिरहो सो बाल ॥ बीरा जल संतुष्ट ह्वै, गर्भ धस्यो तिहि काल ॥ २१ ॥ चलि पहुँच्यो अभिमन्यु रण, चक्रव्यूह निकेत ॥ खबरि भई कुरुराजको, पठयो नर सुधि हेत ॥ २२ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकवि
छत्रसिंहविरचितायांअभिमन्युपयानवर्ण
नोनाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

---

( अथदोधकछंद ) वंदि तवै नरनाथ पठायो । नाम लसै विदवन्त सुहायो ॥ को सजिकै रणको चढ़िआयो । सो हठिसेन किंतो सँग लायो ॥ १ ॥ जाय वसीठ तहां इमि देख्यो । घोर घनो घनसों

दल लेख्यो॥बूझत लोगनि को सजिआयो। भीम युधिष्ठिर रोपनि छायो॥२॥कै सहदेव कि अर्जुन सोहै।शूर कहो अब को दलमें है॥ जात कहां कितते दल आयो। भेद कछू अब मैं नहिं पायो॥३॥ (सेनउवाच। दोहा) अर्जुनसुत अभिमन्यु यह, चल्यो निशान बजाय॥ जीतन चक्रव्यूहको, को अब सकै बचाय॥ ४॥ चलि बसीठ पहुँच्यो तहां, पारथ सुतके पास॥ बैठ्यो देख्यो कुँवर तहँ, साहसयुत सुविलास॥ ५॥ दै अशीश ठाढ़ो भयो, आदर कियो कुमार॥ कुशल प्रसन्नहिं बूझिकै, बैठक दई अगार॥ ६॥ (अभिमन्युरुवाच) कैसो चक्रव्यूह नृप, रच्यो कहो किहि रीति॥ सोई घटिका एकमैं, पैठि लेहुँ सब जीति॥७॥ (बसीठउवाच) कोट रचे इक ईश गुरु, संघट करो नजाय॥ पैठि कौन कहनीकरै, वंकटदुर्ग मझाय॥ ८॥ विकट दरी मारग विकट, सागर सम गंभीर॥ ताके अमित प्रवाह धसि, कौन लहिसकै तीर॥ ९ दुर्योधन बलिबंड सुत, लखनी नाम दहाइ॥ प्रथम कोट आभार शिर, लयो भुजा बर आइ॥ १०॥ कोट दूसरे विकटमें, विदुर वीरको वास॥ तीजे शल्य कह्यो बली, तीजै कोट निवास॥ ११॥ कोट चतुर्थे द्रोणसुत, रह्यो बली दलगाजि॥ कोट पांचवें शकुनि दल, राख्यो बहु दल साजि॥ १२॥ छठें सुशर्मा सातमें, साज्यो सबल सबाह। अष्टम विश्वासेन तहँ, सजे कवच संनाह॥ १३॥ नवम विषम भूरिश्रवा, दशमें कोसब भार। एकादश अरु द्वादशैं, ताहीको विस्तार॥ १४॥ कोटतेरहें द्रोणगुरु, सकल सेनकी लाज॥ चतुर्देशें गांगेय तहँ, राजत बड़ो समाज॥ १५॥ है कलिंगगढ़ पंद्रहें, जिहि बहु जीते युद्ध॥ दुश्शासन गढ़ षोड़शें, सेना सहित सक्रुद्ध॥ १६॥ (चौपाई) सप्तदशैं कृतवर्मा देख्यो। ताको महागर्वमें लेख्यो॥ अष्टादशैं लसै मदबाहु। नव दश सेना युतउत्साहु॥१७॥

( दोहा ) कोट वीसमें कर्ण नृप, ताके बल नहिं अंत ॥ एकवीस महँ जयद्रथ, साज्यो दुसह दुरंत ॥ १८ ॥ दुर्योधन सब अनुज सुत, साजि सेन चतुरंग ॥ न्यारो लसै महीप तहँ, सुभट विकट सब अंग ॥ १९ ॥ यहि विधि चक्रव्यूहकी, सुनि अभिमन्यु कुमार॥ करौ विदा चलिजाउँ हौं, दुर्योधनके द्वार ॥ २० ॥ ( अभिमन्युरुवाच ) साजे नृपति महारथी, सकल सजे तनु त्राण ॥ यह संदेशो देहु तुम, करवर गहौ कृपाण ॥ २१ ॥ पहुँच्यो दूत महीप पै, कही सकलविधि जाय॥नृपति युधिष्ठिरकी चमू,तुमपर पहुँची आय २२॥ साज्यो चक्रव्यूहपै, पारथसुत बलिबंड ॥ नाम वेष लघु जानिये, पौरुष परमप्रचंड ॥ २३ ॥ ताको साहस मैं लख्यों, कहत न बनई बात ॥ कहत लेहुँहौं जीतिकै, चक्रव्यूहको जात ॥ २४ ॥ करो उताइल कटकमैं, साजो राजा राय ॥ सावधान सब होहु भट, गरजि निशान बजाय ॥ २५ ॥ ( त्रोटकछन्द ) प्रतिहार नरेश तबै पठयो । अवनीशनि शोधु सो दैन गयो ॥ सुनि तासुख बैन सबै सजिकै । तनु त्राण कसे बहुधा गजिकै ॥ २६ ॥ चहुँओरनि घोर निशान बजे । कहुँ कुंजर बाजि समूह सजे ॥ रथवंत महारथ साजि तहाँ । लखिये नाहिं पौन प्रवेश जहां ॥ २७ ॥ अभिमन्यु जबै तहँ साजि चल्यो । बहु वीरनको हिय देखि हल्यो ॥ २८ ॥ पहिले गृहमध्य प्रवेश कऱ्यो । तब लाखनके मन शोच पऱ्यो ॥ लखि बालक सों नकरै रणको । यह शोक भयो अतिही मनको ॥ न गहै धनु बाण सो शीश धुनै । पलही पलही हियमाहिं गुनै ॥ २९ ॥ ( लखनउवाच । दोहा ) अति अपराधी मोपिता, पांडु सुतन नहिं खोरि ॥ उन नधरी जियमांझ इन, अवगुण किये करोरि ॥ ३० ॥ प्रथम वरुण मंदिर रच्यो, तामें दिये जराय ॥ भजि उबरे दावाग्नितें, श्रीहरि कियो सहाय ॥ ३१ ॥ पांसे

कपट बनाइकै, छल करि लिये हराइ ॥ राज पाट सब छीनिकै, दीनो विपिन पठाइ ॥ ३२ ॥ खैंचत लज्जा नाकरी, द्रुपद सुताको चीर ॥ हरि सहाय उघरयो नहीं, कितहूं तनक शरीर ॥ ३३ ॥ ऐसे कोरि विचारिकै, समर न आप अज्ञाइ ॥ जानद यो सुत पार्थको, नहिं राख्यो विरमाइ ॥ ३४ ॥ गयो पैठि गृह दूसरे, पार्थपुत्र वरवीर ॥ निरखत धनु गुणयुत करयो, विदुर उठे रणधीर ॥ ३५ ॥ निरखतही अभिमन्युको, विदुर डुलायो शीश ॥ रक्षा बालककी करौ, ह्वै कृपालु जगदीश॥३६॥आपुन कांधो युद्ध नहिं, धनुप दियो भुव डारि ॥ पापी बैठे गेह कत, पांडुपुत्र तुमचारि ॥३७॥ पौरुप तजि लज्जा तजी, तजी सकल कुलकानि बालक रणहिं पठाइकै, आपु रहे सुखमानि ॥ ३८ ॥ दीरघ तनु दीरघ भुजा, दीरघ पौरुप पाइ ॥ कातर ह्वै बैठे सदन, बहु बलवन्त कहाइ॥३९॥विदुर साथ बरजो सबै, कोऊ जुरै न युद्ध॥चल्यो तीसरी पौरिको, पार्थपुत्र ह्वै शुद्ध ॥ ४० ॥ पैठिगयो गढ़ तीसरे, पार्थपुत्र तब धाइ ॥ सहित शल्य भट सकल मिलि, लीनो धनुप चढ़ाइ ॥ ४१ ॥ सन्मुख समर सरोपि ह्वै, जुरे बीर विधि युद्ध ॥ तबहिं पार्थ सुत शल्य उर, हनी शक्ति ह्वै क्रुद्ध ॥ ४२ ॥ विपम चोट नहिं सहि सक्यो, भज्यो वेगि दै पीठि ॥ पारथ सुत कीनी, तबै, चौथे गृह पर दीठि ॥ ४३ ॥ (चौपाई) तहां द्रोण सुतहै बलवंड ।जाको पौरुप लसै अखंड ॥ तहँ अभिमन्यु वेगि दै गयो। तासों महायुद्ध तब भयो॥ ४४ ॥ अग्निवाण उन लीने तीनि। डारे पार्थ पुत्र ते छीनि ॥ वाण बीस सों गुरुसुत हयो । ताके परमक्रोध उर छयो ॥ ४५ ॥ तब अभिमन्यु हन्यो शत बान। उन शर कियो सहस संधान ॥ दोऊ समर करत बलिवंड । दोऊ बरपत वाण अखंड ॥ ४६ ॥ (दोहा) एकै विद्या दुहुँनकी, संभ्रम

करत समान ॥ ऐसे वेई औरको, पटतर दीजै आन ॥ ४७ ॥ क्रोध करयो तब पार्थसुत, रिसकै छांड़े बान ॥ दोणपुत्र मूर्च्छित भयो, आगे करयो पयान ॥ ४८ ॥ तबहीं पारथ सुत गयो, कोट पाँचवें कोपि ॥ शकुनि रह्यो तहँ क्रोधकरि, अंगद ज्यों पग रोपि ॥ ४९॥ ( शकुनिरुवाच ) बांधौ जीवत बालकै, आगि न पावे जान ॥ मारिलेहु तिनको अबै, जो कोउ सजै कृपान ॥ ५० ॥ छेक्यो चहुँ दिशिते कुँवर, बाण अनेक चलाइ ॥ घोरकर्म कीनो महा, रह्यो व्योम शर छाइ ॥५१॥ रण कराल अभिमन्युको, सह्यो न क्यहुँ पै जाइ॥ जितहि दवागिनिसों उठै, तृण ज्यों दल भहराइ ॥ ५२ ॥ भजे लजे नहिं शकुनि उर, सब दल गयो पराइ ॥ बहुत वीर अभिमन्युसों, उबरे हाहा खाइ ॥ ५३ ॥ छठे सातवें आठवें, नवमें कोट मँझाय ॥ दश एकादश द्वादशें, पहुँच्यो बलही जाय ॥ ५४ ॥ सबहीको शर शेलसों, हतिकै गर्व नशाइ ॥ गयो तेरहें कोट धँसि, द्रोण उठे अकुलाइ ॥ ५५ ॥ (द्रोणउवाच । चौ० ) बालक तू रणमें कित आयो । हौंन सुन्यो गृहते कित धायो ॥ तो सँग संग्रम हौं कत मंडौं । बालक जानि हिये अब छंडौं ॥ ५६ ॥ जानतहूं अब क्यों भगिजैहे । क्यों करिकै इषु तीक्षण सहि है ॥ काल बलीबर तोकहँ लायो। बालक भूलि इहां कत आयो ॥ ५७ ॥ पारथ भीम युधिष्ठिर आवे । सो कछु नेक प्रवेशहि पावै ॥ तू कत पैठिसकै गढ़माहीं । तो अवगाहनकी यह नाहीं ॥ ५८ ॥ ( दोहा ) सुनत कुँवर यहि पर जरयो, झुकि बोल्यो ये बैन ॥ धनु गहिकर गुरुविप्र तू, क्षण इक युद्ध करैन ॥ ५९ ॥ ( सवैया ) बालक मोहिं गनो जिन द्रोण सुक्यों नहिं बाण शरासन साजत । जानतहौं शशिवंशकी रीति नहीं लखिकै कोउ युद्धहि भाजत ॥ मोसँग जौलगि आपु जुरे नहिं तौलगि हौं इहि मंडल गाजत ।

तौलगि आपुन चित्त न आनत जौलगि वाण न शीश विराजत६० ॥ (दोहा) कौन हमारे वंशमें, भाग्यो देखि जुझार ॥ ताते द्रोण विचारिकै, कर टेको करवार ॥ ६१ ॥ कृपा करौ जो आप उर, प्रथमहि करो प्रहार ॥ रह्यो न धोखे चित्तमें, धरिये आप हथ्यार ॥ ६२ ॥ (गीतिकाछंद) वाण द्रोण तजै नहीं इन वचन कोटिक भाषियो । जानि बालक वेष करुणा हृदयमें बहु राखियो ॥ कोप करि अभिमन्यु छांड़े कालसे शर लेखिक । सहजही तिन छीनिडारे उरध आवत देखिकै ॥ ६३ ॥ (दोहा) खुरप वाण अभिमन्यु लै, ध्वजा पताका काटि ॥ डारे भूतल शरनसों, सब दल लीन्यों पाटि ॥ ६४ ॥ (सवैया) जे बहुकाल हने जितवार सो तेउ जुरे नाहिं युद्ध अनैसे । वाणविधे सबके तन यों जिमि रोषित व्याल विलेमहँ पैसे ॥ शूर सनद्ध भये अध अंधक मध्य गिराय दये सब ऐसे । ज्यों उनमत्त मतंग सरोवर पैठि विदारत वारिज जैसे ॥ ६५ ॥ (दोहा) हयो द्रोणहै लक्ष शर, कह्यो न संग्रम जाइ ॥ शलभा गणज्यों व्योमधर, रहे वाण तहँ छाइ ॥ ६६ ॥ (सवैया) कोटिन कोटि हुते बहु योधा सुकाहुन द्वै घटिका बिरमायो । पौनके गौनते बाढ़ि उठ्यो दल नीरद संघट सो विचरायो॥भूतल व्योम दिशा विदिशा सुत पारथके शर पंजर छायो ह्वै भयभीत सशोकित अंगन कौरव जानत अर्जुन आयो ॥६७॥ (दोहा) मंडलीक कीनो धनुष, पारथ सुत बलिबंड ॥ वेध्यो गुरु द्वै लक्षसों, जीत्यो समर अखंड ॥ ६८ ॥ समर सह्यो नहिं द्रोण गुरु, रह्यो मानि हिय हारि ॥ पैठ्यो अगिले कोटमें, पारथ सुत भट भारि ॥ ६९ ॥ और सबल थल जीतिकै, पहुँच्यो कर्ण निकेत ॥ तबहीं उठि ठाढ़ो भयो, सोई रणके हेत ॥ ७० ॥ (कर्णउवाच । दोधकछंद) जानतहौं शिशु मीच

बुलायो । ढीठ भयो चलि मोढिग आयो ॥ वृद्ध हुतौ द्विज द्रोण पुरानो । हौं तिनुका करि तोकहँ जानो ॥ ७१ ॥ जीवत क्यों न बचै भजि मोपै । होय कहां अब मो ढिग तोपै ॥ पारथको सुत यों तब भाखै । कर्ण बुलाउ जो तो कहँ राखै ॥ ७२ ॥ ( सवैया ) वीर अवीर महा भटभीर सो तीरहि तीर खरे सब हेरे । आजु तबै सब गर्व हरों अब पायोहै मैं करि आपने नेरे ॥ जीवत जाय न सन्मुख आयके तोसों मूढ़ कहों यह टेरे । भूप युधिष्ठिरकी जयको कुरुनंदन बांधहुँ देखत तेरे ॥ ७३ ॥ ( दोहा ) आप धनुर्द्धर धीर तुम, रहे कहाइ कहाइ ॥ तौ बलदाई जानिहौं, युद्ध जीति जो जाइ ॥ ७४ ॥ दुर्योधन बांधौं जियत, तेरे देखत आज ॥ नृपता महिमंडल करैं, युधिष्ठिर महराज ॥ ७५ ॥ ( सुन्दरीछन्द ) कर्ण महीपति कोप कियो जब । ऊरधमें शर छाय दये तब ॥ ते अभिमन्यु बली रण तोरत । सन्मुखते अँग नेक न मोरत ॥ ७६ ॥ आहि धनुर्द्धर धीर महावर । व्योमहि छावतु है शरही शर ॥ अद्भुत युद्ध नहीं कहि आवत । को उपमा कहि ताहि बतावत ॥ ७७ ॥ ( दोहा ) लख्यो कर्ण अभिमन्यु सों, जबहिं जयद्रथ युद्ध ॥ बल सों रोकै पांडुसुत, तिरछो पैठि सक्रुद्ध ॥ ७८ ॥ ( चौपाई ) भूप युधिष्ठिर भीम प्रचारचो । तोपहँ जाय न सो अरि मारचो ॥ पांडु महीपतिके सुत रोके । बैठिरहेसुसबा इसशोके ॥ ७९ ॥ ( दोहा ) भयो सहाई ईशवर, रोके पांडव चारि । रह्यो जयद्रथ रोपि पग्, अंगदकी उनहारि ॥ ८० ॥ ( चौ० ) चलि अभिमन्यु गहमें गयो । पारथकुँवर अकेलो भयो ॥ भयो कर्णसों युद्ध कराल । छप्यो अकाश धरा शर जाल ॥ ८१ ॥ तब अभिमन्यु बढ्यो बहु क्रुद्ध । रविनन्दन सहि सक्यो न युद्ध ॥ विचलि भग्यो नाहिं रोप्यो पाउँ । उर पारथ सुतके भौ चाउँ ॥ ८२ ॥

(सुन्दरीछन्द) बाणन साथ उड़ाय दये भट। पौन चले जिमि नीरद संघट॥ कौरव यों लखिकै उर आनत। आयगयो रण पारथ जानत॥ ८३॥ (दोहा) पाछे देख्यो पार्थसुत, साथ न पांडव चारि॥ विलखि वदन विस्मय कियो, रह्यो विचारि विचारि॥ ८४॥ (अभिमन्युरुवाच। गीतिकाछन्द) आजु जो रण भीम होतो युद्ध मेरो देखतो। ह्वै पराजय कर्ण भाग्यो सकल कौतुक लेखतो॥ लखै पौरुष कौन मेरो कियो इहि थल आयकै। जानिकै उतपात कौरव कुँवर छेक्यो जायकै॥ ८५॥ दीप ऊपर ज्यों पतंगै यों परे भट धायकै। मेघझर ज्यों वृष्टि शायक करी चहुँदिशि जायकै॥ जुरे रण भूरिश्रवा दहवैन दुश्शासन बली। जुरे कौरव युत कलिंगहि शोभिजै रण अस्थली॥ ८६॥ (दोहा) चहुँदिशिसे अभिमन्यु तव, छेकिलयो बलि-वंड॥ घेरचो सुरपति गिरिन ज्यों, करि करि कोप अखंड॥८७॥ बढ़्यो कोप अभिमन्यु उर, तव मुकुराये बाण॥ कटे पताका चौंर ध्वज, कटिगये करन कृपाण॥ ८८॥ (भुजंगप्रयातछंद) चले भागि चौहूं दिशा राव राने। निषंगी चले चर्म वर्मा पराने॥ रथी सारथी अश्व हस्ती भगेहैं। नहीं युद्धमें वीर कोऊ खरेहैं॥ ८९॥ पताका ध्वजा काटि द्वै खंड कीने। तजे अस्त्र काहू नहीं हाथ लीने॥ तहां कोपिकै कर्णको पुत्र आयो। मनो दंड-धारी महारोप छायो॥ ९०॥ तबै पार्थके पुत्रसों युद्ध ठान्यो। नहीं चित्तमें नेकहूं त्रास आन्यो॥ कटे बाणही बाणसों अंग ताके। करैं वीर दोऊ दुहू युद्ध थाके॥ ९१॥ (दोहा) रविनंदनको पुत्र तहँ, वीरनिमणि वृपकेतु॥ पार्थ पुत्रको जोरही, जान न भीतरदेतु॥९२॥ अर्द्धचन्द्र अभिमन्यु लै, हयो हियो बलवीर॥ मोहितह्वै भूतल गिरचो, अति थरहरचो शरीर॥ ९३॥ (चौपाई)

दुर्योधन सुत लक्ष्मण आयो । पारथ सुतसों रणको धायो ॥ दोऊ भिरत न माने हारि । सकै न कोऊ काहू मारि ॥ ९४ ॥ दिशि दिशिते मिलि कौरव आये । चहुँ दिशिते तिन शर मुकराये ॥ मुद्गर काहू शक्ति प्रहारी । बल करि पारथ सुत तन डारी ॥ ९५ ॥ मूर्च्छित गिरे धरणि अकुलाई । दुर्योधन सुत तब उठि धाई ॥ दोहथ गदा सुलक्षण हयो । बिना जीव पारथ सुत भयो ॥ ९६ ॥ धर्म युद्ध नाँहि हिये विचारयो । परयो कुँवर तिहि दुष्ट सँहारयो ॥ सुनत युधिष्ठिर बहु दुख पायो । अति आनंद कटकमें छायो ॥ ९७ ॥ ( दोहा ) कृष्णपक्ष एकादशी, मारग मास बखानि॥प्राण तजे तब पार्थ सुत, कटक रह्यो भयमानि ॥ ९८ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंह विरचितायांअभिमन्युविमोहनोनाम पंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

---

( दोहा ) अर्जुन आयो जीति रण, पश्चिम दिशि अवगाहि ॥ निरखि सशोक्यो कटक सब, अति भय उपजी ताहि ॥ १ ॥ ( भुजंगप्रयातछंद ) सशोके विलोके सबै राव राने । महादुःख संयुक्त ते को बखाने ॥ नगावैं गुणी ना कहूं बंदि गाजैं । बुधी सो नहीं वेदविद्या समाजैं ॥ २ ॥ मशालैं न दीसैं नहीं दीप देखैं । सबै शूर आतंकसों चित्त लेखैं ॥ तबै पार्थ जीमें महात्रास आयो । तहां बैन श्रीकृष्णजूको सुनायो ॥ ३ ॥ ( अर्जुनउवाच । दोहा ) बिलख्यो देख्यो कटक सब, अरु बिलख्यो सब साथ ॥ जानतुहों जूझो यहां, धर्मपुत्र नरनाथ ॥ ४ ॥ कै रण जूझो भीम अब, सब विधि भयो अकाज॥पुरुषारथ सब बल गयो, गयो हाथते राज॥५॥

नृपति युधिष्टिर पै गये, देख्यो सब परिवार ॥ पग वंदे कर जोरिकै, अरु बूझ्यो व्येतहार ॥ ६ ॥ (अर्जुनउवाच) देखत सबहीं कुशल सों, कुशल सकल अवनीश ॥ कौन हेत बिलखे सबै, सो मोसों कहि ईश ॥ ७ ॥ लाज महाउर नृपतिके, कह्यो कछू नहिं जाइ ॥ हरुवें नृप बोल्यो तबै, बिलखि बदन अकुलाइ ॥ ८ ॥ (राजोवाच) कहौं कहा कहत न बनै, भई अनैसी बात ॥ जूझिपरयो अभिमन्यु रण, दुखन जरत सब गात ॥ ९ ॥ कपटयुद्ध रचि द्रोणगुरु, चक्रव्यूह बनाय। ताहित हमको पार्थ सुन, न्योतो दियो पठाय ॥ १० ॥ सो रण हम जानैं नहीं, रहे चकित नरनाथ। साहसकै अभिमन्यु तब, बीरा लीनो हाथ ॥ ११ ॥ पैठ्यो बंकट कोटमें, भीम आदि दै साथ। द्रोण कर्णको देखिकै, धीरजु रह्यो न हाथ ॥ १२ ॥ नकुल सहदेव भीमको, रह्यो जयद्रथ रोंकि। भयो सहायी ईशबर, रहे बिलोकि बिलोकि ॥ १३ ॥ कुँवर कर्णसों युद्ध करि, फेरि गिरयो मुरझाय लक्ष्मन कोपि गदा लई, परे सुमार्‍यो आइ ॥ १४ ॥ हाहा करि सुनिकै गिर्‍यो, तबहीं पारथ बीर ॥ बीते एक मुहूरते, सुधिमें भये शरीर ॥ १५ ॥ (अर्जुनउवाच) सहे बाण क्यों द्रोणके, क्यों करि अँगयो युद्ध। मुख चाह्यो सुत कौनको, कर्ण भयो जब क्रुद्ध ॥ ॥ १६ ॥ रोकि रह्यो मगु जयद्रथ, भीम न पायो जान। निपट अकेलो पुत्र तब, तिहि थल छांड्यो प्रान ॥ १७ ॥ (चौपाई) भीमसेन जो पावै जान। क्यों जूझन पावै सु निदान ॥ कह्यो जयद्रथ को यह मायो। ताते मैं अब यह ब्रत लायो ॥ १८ ॥ आजु बैरु सुतको हौं सारौं। अथवत भानु जयद्रथ मारौं ॥ जो पौरुप इतनो नहिं साजों। मात पिता पांडुहि हौं लाजों ॥ १९ ॥ (सवैया) मात पिताहि लजाऊं महा अरु तीरथ धर्म सबै ब्रत हारों। दोप

विना तरुणीहि तजैं तिनकी गति पाय निरै पग धारों । विप्रनको अपमान किये पतिसों त्रिय वीच विछोहहि पारों । एतिक पातक मोहिं लगैं पुनि जो नहिं आजु जयद्रथ मारों ॥ २० ॥ हेम हरे द्विज दोष करे अति गर्व भरे गुरु मान न पावैं । मित्रको द्रोह लये पर-चित्त सो चित्त कुकर्मनिके मग लावैं ॥ झूठिये साखिजे आवत भापि निएज कहा अपस्वारथ भावैं । जो न वधौं वर आजु जयद्रथ एतिक पातक मो शिर आवैं ॥ २१ ॥ ( दोहा ) करी पैज हति पार्थ यह, वहु दुख करि रणधीर ॥ जव जान्यो विस्मय करत, चरित रच्यो यदुवीर ॥ २२ ॥ माया वपु अभिमन्यु तव, अर्जुनको दरशाइ ॥ सपनो सांचो जानि चित, संभ्रम रह्यो भुलाइ ॥ २३ ॥ शिवपुर देख्यो पुत्र तव, सपने खेलत सारि ॥ चितयो सो इतमें नहीं, रह्यो पार्थ मन मारि ॥ २४ ॥ रुदन कस्यो सुत इंद्रके, आंशू चले अपार ॥ परे पुत्रकी पीठि पर, चितै कह्यो तिहि वार ॥ २५ ॥ ( अभिमन्युरुवाच । सोरठा ) कौन कौन को भाय, तू मूरुख रोवै कहा ॥ सव जग आवत जाय, कर्मफांस वंधन वँध्यो ॥ २६ ॥ को माता को पूत, कौन कहो काको पिता । वर धूर्त जगधूत, कित याको संशय करो ॥ २७ ॥ ( दोहा ) भग्यो शोक तव पार्थको, सुनत पुत्र मुख वैन ॥ इतने निरखि चरित्रको, उघरि गये फिरि नैन ॥ २८ ॥ ( नाराचछन्द ) कह्यो चरित्र कृष्णसों जो पार्थ आपु देखियो । रह्यो भुलाय चित्तमें कछू विषाद ना कियो ॥ उच्यो समर्थ गाजिकै वढ्यो सुरोप चापसों । कस्यो निखंग कोपिकै कराल काल भालसों ॥ २९ ॥ ( त्रोटकछंद ) कुरुराज सुनी यह वात जहीं । प्रकस्यो गुरुसों सव भेद तहीं ॥ कछु आपु न आजु विचार करो । यह मो विनती चितमाहिं धरो ॥ ३० ॥ दिन एक जयद्रथ राखि अवै । मग पूजहि तो मन काज सवै ॥ व्रत आजु धनंजय

को टरिहै। न रहै जग जीवत सो मरिहै ॥ ३१ ॥ कुरुराज कहै यह मानि अवै। सुत पांडु अनाथ विचारि सवै ॥ तवहीं नृपसों गुरु द्रोण कहे। वल जाकहँ राखहु कौन लहे ॥ ३२ ॥ (दोहा) द्रोणाचारज तव रच्यो, शकट व्यूह वनाइ ॥ भेदभाव जा को कछू, कहूं न जान्यो जाइ ॥ ३३ ॥ आगे सूची अग्रसम, रच्यो विकट अति व्यूह ॥ आस पास हाथी रथी, राखे शूर समूह ॥ ३४ ॥ यमहूंको न प्रवेश जहँ, दुर्गम दुसह सँवारि। नर किन्न-र नाहिं लहि सकैं, रहैं सुरेशौ हारि ॥ ३५ ॥ भाग्यो चाहत जयद्रथ, पै नाहिं पावत जान ॥ राख्यो शकटव्यूहमें, तजौं अथावत भान ॥ ३६ ॥ (चौपाई) राख्यो व्यूह मांझ सो लाय। यम हूं पै सो लख्यो न जाय ॥ आस पास गज रथकी पांति। दुर्गम दुसह रच्यो बहुभांति ॥ ३७ ॥ रक्षक द्रोण चमूपति वीर। अ-तुल पराक्रम साहस धीर ॥ गाज्यो पार्थ धनुषलै वान। सा रथि कीनो तव भगवान ॥ ३८ ॥ (दोहा) वाजे मारू जूझकैं, अति गाति तवल निशान ॥ भेरि शंख वहु ध्वनि भई, करवर गहे कृपान ॥ ३९ ॥ प्रथम युद्ध गुरु द्रोणसों, असि वरवाजी मा-र ॥ नाहिं प्रवेश अर्जुन लहै, करत अमित संहार ॥ ४० ॥ मा रच्यो परै न पार्थपै, द्रोण विप्र वलवंड ॥ शर समूह नभ छाय त-हँ, संग्रम कियो अखंड ॥ ४१ ॥ (गीतिकाछंद) पार्थके रथके तुरंगनि छतन तिल तिलकै छये। देखके नाहिं अग्रको पगु प-रम विह्वल ह्वैगये ॥ चाहि मुख श्रीकृष्ण बोले वीर यह सुनि लीजिये। अंबु पीवैं वाजि जैसे सो कछू विधि कीजिये ॥ ४२ ॥ वाण छाय अकाश अर्जुन गेहसों तव करिलयो। मारि शर-सों गंग काढ़ी नीर अश्वनको दयो ॥ फेरि करि श्रीकृष्णजू रथपै चढ़े अकुलायकै। पांडुको सुत द्रोणसों तवहीं जुरयो

रण आयकै ॥ ४३ ॥ (दोहा) बल करिकै द्विज द्रोणके, शर हाति चित्त भ्रमाय ॥ गयो पंथ दै दाहिनों, दलमें पहुँच्यो जाय ॥४४॥ भयो समर नृप कर्णसों, तिनहूं रण अवगाइ ॥ पेलि गयो चलि अगमनो, जयको शंख बजाइ ॥ ४५ ॥ योजन तीनि गयो बली, चलही कटक मँझार ॥ तहां जुरयो रण शकुनिसों, संग्रम भयो अपार ॥ ४६ ॥ भयो कुलाहल शोरहै, सुन्यों कछू नाहिं जाय। सुन्यो शंख नाहिं पार्थको, धर्मपुत्र बिलखाय ॥ ४७ ॥ (चौपाई) पांचजन्य शब्द सुनि राई। मनही मन बिलखै अकुलाई ॥ सात्यकि यादव पठयो तहां। संग्रम करत पार्थहो जहां ॥ ४८ ॥ रथ चढ़ि धनुष बाण तिन लयो। प्रथम द्रोण गुरु आड़ो भयो ॥ कह्यो आदि यादव रण आयो। मैंही तुव गुरु पार्थ पठयो ॥ ४९ ॥ घटिका चारिक संग्रम भयो। भूतल व्योम शरनसों छयो ॥ दिशि विदिशा सूझै नाहिं नैन। सात्यकि कहै विप्रसों बैन ॥ ५० ॥ (सात्यकिउवाच। दोहा) जाहु विप्र अब भागिकै, समर करत बेकाज ॥ जो न भगाऊं तोहिं हौं, तौ गुरु पार्थहि लाज ॥ ५१ ॥ विषम बाण उर लगतही, द्रोण गिरयो अकुलाइ ॥ जहां हुतो भूरिश्रवा, ता ढिग पहुँच्यो जाइ ॥ ५२ ॥ कोप्यो लखि भूरिश्रवा, कर लीन्हे दश बान ॥ सात्यकिके तिन उर हये, सुरपति वज्र समान ॥ ५३ ॥ बहुत युद्ध तिनसों भयो, को कहिसकै सुनाइ ॥ तब सात्यकि मोहित भयो, धरणि गिरयो अकुलाइ ॥ ५४ ॥ (गीतिकाछन्द) धायकै भूरिश्रवा कारि केश यादवके गहे। क्रोधसों झकझोरिकै बहु वचन इहि विधिके कहे ॥ आजुही शठ तोहिं मारौं तोहिं कौन बचावई। आयकै अब तोहिं राखै ताहि क्यों न बुलावई॥ ॥ ५५ ॥ (दोहा) ताके वध हित खड्गलै, भुजा उठाई वीर। नि-

को टरिहै । न रहै जग जीवत सो मरिहै ॥ ३१ ॥ कुरुराज कहै यह मानि अबै । सुत पांडु अनाथ विचारि सबै ॥ तबहीं नृपसों गुरु द्रोण कहै । बल जाकहँ राखहु कौन लहै ॥ ३२ ॥ ( दोहा ) द्रोणाचारज तब रच्यो, शकट व्यूह बनाइ ॥ भेदभाव जाको कछू, कहूं न जान्यो जाइ ॥ ३३ ॥ आगे सूची अग्रसम,रच्यो विकट अति व्यूह ॥ आस पास हाथी रथी, राखे शूर समूह ॥ ३४ ॥ यमहूंको न प्रवेश जहँ, दुर्गम दुसह सँवारि । नर किन्नर नाहिं लहि सकैं, रहैं सुरेशौ हारि ॥ ३५ ॥ भाग्यो चाहत जयद्रथ, पै नाहिं पावत जान ॥ राख्यो शकटव्यूहमें, तजौं अथावत भान ॥ ३६ ॥ ( चौपाई ) राख्यो व्यूह मांझ सो लाय । यम हूं पै सो लख्यो न जाय ॥ आस पास गज रथकी पांति । दुर्गम दुसह रच्यो बहुभांति ॥ ३७ ॥ रक्षक द्रोण चमूपति बीर । अतुल पराक्रम साहस धीर ॥ गाज्यो पार्थ धनुपलै बान । सारथि कीनो तब भगवान ॥ ३८ ॥ ( दोहा ) बाजे मारू जूझकैं, अति गाजे तबल निशान ॥ भेरि शंख बहु ध्वनि भई, करवर गहे कृपान ॥ ३९ ॥ प्रथम युद्ध गुरु द्रोणसों, असि बरबाजी मार ॥ नाहिं प्रवेश अर्जुन लहै, करत अमित संहार ॥ ४० ॥ मार्यो परै न पार्थपै, द्रोण विप्र बलवंड ॥ शर समूर नभ छाय तहँ, संग्रम कियो अखंड ॥ ४१ ॥ ( गीतिकाछंद ) पार्थके रथके तुरंगनि छतन तिल तिलकै छये । देसके नाहिं अग्रको पगु परम विह्वल ह्वैगये ॥ चाहि मुख श्रीकृष्ण बोले वीर यह सुनि लीजिये । अंबु पीवै बाजि जैसे सो कछू विधि कीजिये ॥ ४२ ॥ बाण छाय अकाश अर्जुन गेहसों तब करिलयो । मारि शरसों गंग काढ़ी नीर अश्वनको दयो ॥ फेरि करि श्रीकृष्णजू रथपै चढ़े अकुलायकै । पांडुको सुत द्रोणसों तबहीं जुर्यो

रण आयकै ॥ ४३ ॥ ( दोहा ) बल करिकै द्विज द्रोणके, शर हति चित भ्रमाय ॥ गयो पंथ दै दाहिनों, दलमें पहुँच्यो जाय ॥४४॥ भयो समर नृप कर्णसों, तिनहूं रण अघवाइ ॥ पेलि गयो चलि अगमनो, जयको शंख बजाइ ॥ ४५ ॥ योजन तीनि गयो बली, चल्ही कटक मँझार ॥ तहां जुरयो रण शकुनिसों, संग्रम भयो अपार ॥ ४६ ॥ भयो कुलाहल शोरहै, सुन्यों कछू नाहिं जाय। सुन्यो शंख नाहिं पार्थको, धर्मपुत्र बिलखाय ॥ ४७ ॥ ( चौपाई ) पांचजन्य शब्द सुनि राई। मनही मन बिलखै अकुलाई ॥ सात्यकि यादव पठयो तहां। संग्रम करत पार्थहो जहां ॥ ४८ ॥ रथ चढ़ि धनुष बाण तिन लयो। प्रथम द्रोण गुरु आड़ो भयो ॥ कह्यो आदि यादव रण आयो। मैंही तुव गुरु पार्थ पठयो ॥ ४९ ॥ घटिका चारिक संग्रम भयो। भूतल व्योम शरनसों छयो ॥ दिशि विदिशा सूझै नाहिं नैन। सात्यकि कहै विप्रसों बैन ॥ ५० ॥ ( सात्यकिउवाच। दोहा ) जाहु विप्र अब भागिकै, समर करत बेकाज ॥ जो न भगाऊं तोहिं हौं, तौ गुरु पार्थहि लाज ॥ ५१ ॥ विषम बाण उर लगतही, द्रोण गिरयो अकुलाइ ॥ जहां हुतो भूरिश्रवा, ता ढिग पहुँच्यो जाइ ॥ ५२ ॥ कोप्यो लखि भूरिश्रवा, कर लीन्हे दश बान ॥ सात्यकिके तिन उर हये, सुरपति वज्र समान ॥ ५३ ॥ बहुत युद्ध तिनसों भयो, को कहिसकै सुनाइ ॥ तब सात्यकि मोहित भयो, धरणि गिरयो अकुलाइ ॥ ५४ ॥ ( गीतिकाछन्द ) धायकै भूरिश्रवा कारि केश यादवके गहे। क्रोधसों झकझोरिकै बहु वचन इहि विधिके कहे ॥ आजुही शठ तोहिं मारौं तोहिं कौन बचावई। आयकै अब तोहिं राखे ताहि क्यों न बुलावई॥ ॥ ५५ ॥ ( दोहा ) ताके वध हित खड्गलै, भुजा उठाई वीर। नि-

रखि पार्थ बहु क्रोध करि, बाण हन्यो रणधीर ॥ ५६ ॥ ( दोधकछंद ) दक्षिण बाहु सखड्ग उड़ानी। टूटिपरी सबरे दल जानी ॥ छूटिगयो तब यादव ऐसे। केहरिते मृग छूटत जैसे॥५७॥ यादव कोपि कृपाण सम्हारयो ॥ कोवरणै वलही अरि मारयो। काटि तबै शिर भूतल डारयो। ज्यों द्विज यज्ञनमें पशु मारयो ॥ ५८ ॥ ( नगस्वरूपिण छंद ) न धीर सेनमें रही। न जाय सो कछू कही ॥ सशोकवंत ह्वैगये। नरेश दुःखसों छये ॥ ५९ ॥ ( दोहा ) पहुँच्यो अर्जुन पास तब, सात्यकि यादव जाय ॥ हत्यो बली भूरिश्रवा, कुरुनंदन पछिताय ॥ ६०॥ ( सोरठा ) कह्यो युधिष्ठिरराय, भीमसेनको बोलिकै ॥ सुधि लावहु तहँ जाय, जहां पार्थ संग्रम करै ॥ ६१ ॥ ( त्रोटकछंद ) कर बाण शरासन भीम लयो। तब पारथकी सुधि लेन गयो ॥ तहँ मारगमें द्विज द्रोण लह्यो। तिन देखतही इमि बैन कह्यो ॥ ६२ ॥ फिरि जाहु घरै नहिं बाटलहो। मम बाण नहीं क्षण एक सहो ॥ सुनिकै दुहुँ वीरन युद्ध कियो। धर भूतल बाणन छाइलियो ॥ ६३ ॥ तबहीं रण भीमहिं क्रोध भयो। गुरुको रथ वीर उठाय लयो ॥ पटक्यो धरणी थलमें जबहीं। न रह्यो भगि विप्र गयो तबहीं ॥ ६४ ॥ ( दोहा ) रथके बाजी भीम तब, क्षणहींमें संहारि॥ बढ्यो क्रोध षोड़श कुँवर, तबहीं डारे मारि ॥ ६५ ॥ कोपे दूधर दुष्ट बल, सुबल सुबाहु प्रचंड ॥ सोम कलिंग अशेष रण, जिन जीते बलवंड ॥ ६६॥ भीमसेन रण कोपिकै, इक इक शर सब मारि ॥ और रथी रणधीर रण, डारे बहुत संहारि ॥ ६७ ॥ चल्यो पूर रण श्रोणको, को कवि कहै बखानि ॥ भागिचले बहु शूर गण, जुरे न क्षणभरि आनि ॥ ६८ ॥ ( दंडकछंद ) शोणित सलिलमांहि कीने केकरीसे शीश श्याम श्याम केश ते सिवार ऐसे लेखिये। व्यालहै

विशाल शुंड दंडनिके जाल जहां ग्राहके करीनके कलेवर विशेखिये ॥ कच्छप तिराति चर्म चक्रवाक चक्र रथ चामर पताका गण मीन अवरेखिये। पवनपूत क्रोध ह्वै समरसिंधु सांच्यो रच्यो फूलन मराल बगमाल द्विज देखिये ॥ ६९ ॥ (दोहा) भूतल डारि महारथी, आगे पहुँच्यो जाय ॥ निरखि शरासन बाणलै कर्ण उठ्यो अकुलाय ॥ ७० ॥ (कर्णउवाच) जीते केतक समरतैं, भीम कहां अब जाय॥जीवन दुर्लभ जानि वश, परयो हमारे आय ॥ ७१ ॥ भीम कर्ण के उरहये, सप्त बाण करि क्रुद्ध ॥ धनुष काटि रविपुत्र तब, हृदय हन्यो शर शुद्ध ॥ ७२ ॥ (चौपाई) फेरि क्रोध रविनंदन भयो। कवच भीमको तब कटिगयो ॥ धायो भीम उघारे अंग। कीनों जाय तहां रणरंग ॥ ७३ ॥ रथ आरूढ़ पवनसुत भयो। रविसुतके उर मुठिका दयो ॥ भूतल गिरि सो उठि अकुलाई। मेल्यो धनुष भीमशिर आई ॥ ७४ ॥ बार बार रिससों झकझोरयो।ऐंच्यो कइयो बार कढ़ोरयो॥भीमसेनको पौरुष गयो। कर्ण शक्ति अति व्याकुल भयो ॥ ७५ ॥ (दोहा) करि सुधि कुंती वचनकी, भीम दयो मुकुराय॥बिलखि वदन चलि पार्थ पै, तबहीं पहुँच्यो जाय ॥ ७६ ॥ देख्यो पौरुष पार्थको, तब कुरुनंदन राय ॥ सोलह सहस मतंग तहँ, दीने तुरतपठाय ॥७७॥ (भुजंगप्रयातछंद) चले मत्तमातंग ते अग्र आये। मनो भूतलीमें महामेघ छाये ॥ तहां पांडुके पुत्र चिंता भ्रमाये। सशोके हियेमे महा त्रास लाये ॥ ७८ ॥ हिये शोच शोचै गयो नेम मेरो। रह्यो आसराहै दयासिंधु तेरो ॥ सदा आपहो दीनहीके सहाई। परीभीर भारी सबै सो नशाई ॥ ७९ ॥ (दोहा) कही भीमसों पार्थ तब, अब बलवंत सम्हारि ॥ कातर लों अति शिथिल तनु, कहा रह्यो हिय हारि ॥ ८० यों सुनि गाज्यो सिंह ज्यों, आकंपे

मातंग ॥ बिचलि चले मृग यूथज्यों, सूखि गये सब अंग ॥ ८१ ॥ उव्यो भीम बलदंड तब, कह्यो न पौरुप जाय ॥ एक बार दश सहस गज, ऊरध दये चलाय ॥८२॥(सवैया) एक रथी रथमंत महा इक एक हते वरवीर निखंगी। तेउ जुरे नहिं आयुध ले, जु हते बलविक्रम शत्रुके भंगी॥ मत्त मतंग तजे नभको विरच्यो रण भीम सदा रणरंगी। पौनके चक्रमें जाय परे सब ह्वैरहे अंग त्रिशंकुके संगी ॥ ८३ ॥ (दोहा) जेतिक गज ऊरध तजे, फिरि भुव गिरे न आय ॥ सहस पंच गज दूसरे, ऊरध दये चलाय ॥ ८४ ॥ लंकपौरि पर ते गिरे, कछुक कन्दरन मांझ ॥ सहस मतंग गदा हने, जानि नीयरी सांझ ॥८५॥ दुर्योधनके अनुज तहँ, तीस हने बलवीर ॥ पैरत रथ जल जंतुसे, शोणित सलिल गँभीर ॥ ८६ ॥ हय हस्ती रथ भंजिकै, दीने दल बिचलाय ॥ निकट जयद्रथ पार्थ तब, पहुँच्यो बलही जाय॥८७॥ सूक्षम निरख्यो द्योस तब बार बार अकुलाय ॥ उतहि जयद्रथ निशि चहै, निरखि निरखि रवि जाय ॥ ८८ ॥ (दोधकछन्द) द्वै जनको मन शोचत ऐसे । है तरुणी चकई मन जैसे ॥ रैनि चहै वह द्योसहि चाहै । यों तिनके मनमें मनसा है ॥ ८९ ॥ ताकत भानु जयद्रथ देख्यो । पार्थ तबै निज कांज विशेख्यो ॥ अंजलि वाण धनंजय लीनो । ताक्षणहीं अरिके शिर दीनो ॥९०॥ (दोहा) उव्यो बाणके संग शिर, को कवि कहै बनाय॥ परयो तासु पितु अंजली, निरखि गिरयो अकुलाय ॥ ९१ ॥ (चौपाई) जबहीं शिर अंजलिमें गयो । निरखत शोकवन्त सो भयो ॥ कौरव दलमें अति भय भारी । परे औंधमुख नर अरु नारी ॥९२॥ हाहा कुरुनन्दन अनुसरे । कोऊ काहू धीर न धरे ॥ पूरि पैज पारथकी भई। हरि अर्जुन शंखध्वनि ठई ॥ ९३ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्र सिंह विरचितायां जयद्रथवधअर्जुन विजयवर्णनोंनाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

(दोहा) जूझो जानि जयद्रथै, दुर्योधन ह्वै क्रुद्ध ॥ तुरतहि रथ ऊपर चढ्यो, चल्यो युद्धको क्रुद्ध ॥१॥ (सुन्दरीछन्द) सूर्य छिप्यो तम रैनि भई तव । गाजि महारथ मंत उठे तव ॥ देखि घरूकहि क्रोध बढ्यो अति । व्योम गयो बहु शूरनको हति ॥२॥ रैनि भई न तहां कछु सूझत । आपने बाणन लै भट जूझत ॥ युद्ध भयो कवि कौन बखानहिं। द्वै दलमें कोउ हारि न मानहिं॥३॥ (दोहा) तजत घरूका ऊर्ध्वते, गिरिवर शिखर अपार ॥ शरतरु फरसा शक्तिसों, करत अमित संहार ॥ ४ ॥ (चौपाई) भयो अंधेरो नाकछु सूझत। जल थल कौरवको दल जूझत ॥ नारद मुनि मशाल दरशावैं। दल संहरत महा सुख पावैं ॥ ५ ॥ अर्द्धरै निशौं बीती मार। द्वै क्षोहणि दल कियो संहार ॥ दलको नाश जानि कुरुराय। कह्यो कर्णसों तब अकुलाय ॥ ६ ॥ (दुर्योधन-उवाच। दोहा) ह्वै अदृश्य यह व्योमते, बर्षत गिरि तरु जाल ॥ प्रलय करत सब दल हन्यो, कीनो कर्म कराल ॥ ७ ॥ आनी शक्ति जो पार्थहित, तासों याहि संहारु ॥ बूड़त रणकी धारमें, यह दल बीर उबारु ॥ ८ ॥ शक्तिप्रहार कियो करण, जानि कटकको नाश॥ गिरो ऊर्ध्वते बीर धर, भयो सकल दल त्रास ॥ ९ ॥ वज्रपात सों धर पर्‌यो, गिरिसे सुभट गिराइ ॥ हन्यो खूंदि एक क्षोहिणी, दल सब चल्यो पराइ ॥ १० ॥ जूझि घरूका धर पर्‌यो, पांडु पुत्र दुख पाइ ॥ रुदन करत तब हँसिउठे, श्रीहरि बहु सुख पाइ ॥ ॥ ११ ॥ समाधान करि यों कही, पार्थ जियोहै आज ॥ गई जु शेखी कर्णकी, अब सीझो सब काज॥ १२ ॥ भयो ब्योस तब त्रयोदशि, जब बीत्यो एक याम ॥ उठ्यो द्रोण तब गाजिकै, कियो अमितसंग्राम ॥ १३ ॥ (चौपाई) पांडव सेन चल्यो अकुलाय। काहू पास न राख्योजाय॥ नृपति विराट तीस शर

हयो। इन करि क्रोध शरासन लयो॥ १४॥ तीन वाण गुरुके उर मारे। काटि पताका औ ध्वज डारे॥ एक वाण उरमें तब हयो। लागत द्विज व्याकुल ह्वैगयो॥ १५॥ (दोहा) बहुरि सम्हारो द्रोण गुरु, शायक हन्यो ललाट॥ वास लियो हरिलोक तब, जूझ्यो भूप विराट॥ १६॥ जबहीं झुकि धरणी गिर्‌यो, करवर गहे कृपान॥ रोक्यो द्रुपद नरेश गुरु, लहै न आगे जान॥१७॥ सहदेव धायो नकुल, पार्थ युधिष्ठिर आप॥ जग मंडल नव खंडमें, जाको अमित प्रताप॥ १८॥ (त्रोटकछंद) चहुँओरनिते गुरु घेरि लयो। तब देखतही बहु रोष भयो॥ सबके उरमें बहु बाण हने। मुरझाय गिरे कवि कौन भने॥ १९॥ (अर्जुनउवाच) जगबंदन दे शिष मोहिं अबै। रणजीतहिं ज्यों बर आजु सबै॥ तुमही विपदा सब ठाम हरी। मनकी बहु पूरण आश करी॥ २०॥ (कवित्त) त्रिभुवन ईश जगदीशसों करन जोरि नाय नाय शीश पार्थ वन्दना महा करी। काटि काटि कोटि कोटि संकट अनेक भांति भांति भांति जननकी आपदा सबै हरी॥भारी भारी भीर भाव जहां जहां जानी भय तहां तहां पैज कहूं सेवककी ना टरी॥अमित अपार बल संतनके रखवार गावत निगम नव कीरति घरी घरी॥ २१॥ (श्रीकृष्णउवाच। नाराचछन्द) तजै कृपाण वाण द्रोण पुत्र जो मर्‌यो सुन्यो॥कोटि धौं कराल शोक दुःख होहि सौगुन्यो॥ संरोष भीमसेन आज हाथ जो गदा धरै। तुरंग द्रोण पुत्र नाम को मतंग संहरै॥ २२॥ (दोहा) अश्वत्थामा नाम गज, हन्यो भीम करि कोह॥ द्रोण होइ विह्वल सुनत, बढ़ै हिये बहु छोह॥२३॥ बैन युधिष्ठिर नृप कहै, तबहिं विप्रपति आइ॥ तजै सकल आयुध सुनत, अति विह्वल ह्वैजाइ॥ २४॥ द्रुपदपुत्र धृष्टद्युमन, तबहीं काटै शीश॥ यह उपाय करि जीतिहो, बोले त्रिभुवन ईश॥२५॥

द्विरद अश्वत्थामा हन्यो, भीमसेन तिहि वार ॥ हन्यो द्रोण तव पुत्र मैं, अब कत गहै हथ्यार ॥ २६ ॥ द्रोण नहीं रणको तजै, बैन सुनै न पत्याय ॥ तौ मानैं मन वचन क्रम, कहैं युधिष्ठिरराय ॥२७॥ तबै प्रचाऱ्यो धर्मसुत, कहि गुरु तजे कृपान ॥ बंधुन हित बोल्यो तबै, भूपति बुद्धिनिधान ॥ २८ ॥ ( युधिष्ठिरउवाच ) समर अश्वत्थामा हन्यो, भीमसेन सुन विप्र ॥ नर नारी कुंजर हत्यो, कही नृपति यह छिप्र ॥ २९ ॥ ( त्रोटकछन्द ) यह बैन सुन्यो गुरु द्रोण जहीं । बहु व्याकुल ह्वै गिरयो भूमि तहीं ॥ समुझावत कौरव सो न सुनै । बहु व्याकुलह्वै द्विज शीश धुनै ॥ ३० ॥ ( सोरठा ) तब गुरु तजे कृपाण, धृष्टद्युम्न अवलोकिकै ॥ शिर काट्यो तिहि बाण, धर्मपुत्रकी जय करी ॥ ३१ ॥ ( दोधकछंद ) दुर्योधनके दल दुचिताई । मोपै छत्र कही नहिं जाई ॥ बुद्धि थकी सुधिकी गति थाकी । आश थकी मनमें नृपताकी ॥ ३२ ॥ ( दोहा ) धर्मपुत्र जय रण भई, गहरे बजे निशान ॥ कऱ्यो चमूपति कर्ण तब, दुर्योधन भै मान ॥ ३३ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां द्रोणगुरुवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ इति ॥

---

## अथ कर्णपर्व कथनम् ॥

( सोरठा ) दलपति कीनो कर्ण, दुर्योधन अपने सुप्रण ॥ जन जनको दुख हर्ण, षटदरशनको कल्पतरु ॥ १ ॥ ( दोहा ) चढ्यो कर्ण रणधीर तब, करलीने धनु बान ॥ सुरनरगणके तासुकी, टतर नाहीं आन ॥ २ ॥ शल्य कियो रथसारथी, पारथ

जीतन काज ॥ कृतवर्मा लछिमन चढ़े, ले सँग शकुनि समाज ॥ ३ ॥ दुश्शासन रक्षक भयो, कर्ण संग सुख पाइ ॥ यूथ यूथ सेना चली, गरजि निशान बजाइ ॥ ४ ॥ अर्जुन अर्जुन कहत भट, आये रण गलगाजि ॥ बांधिलेउ वर आजुहीं, जान न पावें भाजि ॥ ५ ॥ सजे कवच सन्नाह तनु, बाण शरासन हाथ ॥ बीर दुशासन आदिदै, सब धाये इक साथ ॥ ६ ॥ भीम दुशासन देखि कै, परमक्रोध सों धाय ॥ धरिकै पटक्यो भूमि पर, दै ग्रीवापर पाय ॥ ७ ॥ (भीमसेनउवाच। सवैया) है कोउ द्वौ दलमें समरत्थ दुशासनको वर आनि छुड़ावै। रे कुरुनन्दन रे रविनंदन सोकरु जो तोमें बनिआवै ॥ शूर घने रण रोवत देखत जूझ करै सब यों मन भावै। कालहुते उबरै भजि जीवत जीवत सों भजि जान न पावै ॥ ८ ॥ (दोहा) द्वौ दलमें समरत्थ जो, या को लेहि छुड़ाइ ॥ पाछे कहिहौ बालकन, देखत राजा राइ॥ ९ ॥ शंखध्वनि हरि तब करी, तत्क्षणही अकुलाइ ॥ वचन भीमको पार्थ सुनि, तबहिं युधिष्ठिर राय ॥ १० ॥ कौरव दल कछु नाकरचो, लीनी भुजा उखारि ॥ केहरि ज्यों मृगको उदर, त्यों उर डारचो फारि ॥ ११ ॥ (सवैया) ज्यों रघुनाथ हन्यो रण रावण जंभकिधों सुरराज पछारचो। राघव वीर वध्यो बाणासुर तीक्षण बाण समूल प्रहारचो ॥ कै त्रिपुरारि हन्यो वर राक्षस एकहि बाण उरस्थल फारचो। ऐसहि भीम दुशासन मारि तबै मनको वह रोष निकारचो ॥ १२ ॥ कोपिकै बीर बली बलसों दुश्शासन द्वै दल बीच सँहारचो ॥ केहरि ज्यों मृग दौरि दल्यो सुरराज किधौं भुव पर्वत फारचो ॥ ज्यों हनुमंत बली बलसों महिरावणको भुज मूल उपारचो। त्यों नरसिंह सक्रोध भयो हरिणाकुशको जो उरस्थल फारचो ॥ १३ ॥ (दोहा) मन भायो करि फारि उर, रुधिर अंजली चारि ॥ अँचै भीम प्रफुलित

भयो, मनको रोष निकारि ॥ १४ ॥ और रुधिर भरि अंजली, लै-
के पहुँच्यो धाम ॥ जाय न्हवाई द्रौपदी, सब पूजे मन काम १५॥
( सोरठा ) यशहै जीवनमूरि, इहि पुर अरु वहि पुर सुखी ॥
ते सब ह्वैहैं धूरि, द्विज दोषी अरु अपयशी ॥ १६ ॥ ब्याल बैस
जिहि गेह, परदारा रत जे पुरुष ॥ निश्चय जानो एह, मृत्यु माहिं
संशयनहीं ॥ १७ ॥ छै पर तरुणी चीर, सब जगमें अपयश लियो
मरयो दुशासन वीर, देखत सकल महारथी ॥ १८ ॥ ( चौपाई )
द्रुपदसुता तब रुधिर न्हवाई । रणमंडल सो पहुँच्यो जाई ॥
नकुल शकुनिसों रणभो घनों । जुरे असुर अरु सुरपति मनों
॥ १९ ॥ बाणन मारि शकुनि बिचरायो । वेध्यो उर वरभूमि
गिरायो ॥ जूझत शकुनि कुलाहल भयो । हाहा शब्द सकल
दल छयो ॥ २० ॥ ( दोहा ) भयो द्रुपद अरु कर्णसों, अति गति
करिसंग्राम ॥ जूझे भट द्वै सेनके, वरणि सकै को नाम ॥ २१ ॥
कर्णद्रुपद नरनाथके, उर मारे दश बाण ॥ कौन कहै तिन धरणि
धुकि, ततक्षण छांड़े प्राण ॥ २२ ॥ ( दंडकछंद ) धीर तजे वीर स-
बै व्याकुल शरीर ह्वैकै संग्रम गँभीर वीर कर्णसों महारथी । शूर
कहलाने दहलाने दल दीरघजे हाथी हहलाने शंक जाय कौन
पै कथी॥यत्र तत्र शत्र दाह दुर्घट बिकट भट काटि काटि कीने काल
दंड लोकके पथी । कहूं गिरे अश्व कहूं पायक पताका
रथ कहूं गिरे रथी कहूं महि गिरे सारथी ॥ २३ ॥ ( दोहा )
कर्ण पराक्रम कै बढ्यो, नहीं सुरोक्यो जाय ॥ कटक त्रास उर-
जानिकै, रुप्यो पार्थ रण आय ॥ २४ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्र-
सिंहविरचितायां दुश्शासनशकुनिराजाद्रुपदवध
वर्णनोनाम अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

---

(त्रोटकछंद) रविनंदन पार्थ जुरे रनमें । बहु क्रोध दुहूं जनके मनमें ॥ अति संभ्रम भो कवि कौन कहै । शर जालन को तहँ पौन बहै ॥ १ ॥ धर ऊरध बाणन छाय लयो । छपि सूर्य्य तहां तम छायगयो ॥ अति अद्भुत विक्रम कौन कहे । सुर वे लखि लाखनि भूलि रहे ॥ २ ॥ (दोहा) बाण चले दुहुँ वीरके, योजन एक प्रमान ॥ वैसै येई युद्धको, पटतर नाहीं आन ॥ ३ ॥ अस्त्र शस्त्रसों परस्पर, समर रचत दोउ वीर ॥ जुरि जुरि क्योंहूं सरस महि, दोऊ रण रणधीर ॥ ४ ॥ आयो बासर तीसरो, क्योंहू रण उसरैन ॥ सुर असुरन यह कर्म कहुँ, सुन्यो न देख्यो नैन ॥५॥ कव छांड़्यो कब शर लयो, सेन परै कहुँ जानि॥मंडलीक कीनो धनुष, थके न क्योंहू पानि ॥ ६ ॥ रह्यो कर्णके तूणमें, बाण ह्वैगयो व्याल ॥ धर्‌यो धनुष बलवंडसो, छांड़ि दियो उत्ताल ॥ ७ ॥ (दोधकछंद) आवत सो अहि श्रीहरि देख्यो । पारथ काल हिये महँ लेख्यो ॥ दाबि कियो तबहीं रथ नीचो । शीश बच्यो लहि सूक्ष्म बीचो ॥ ८ ॥ बताटि किरीटहि लैगयो सोई । सेन समूह त्रसे सब कोई ॥ फेरि सो व्याल सरोषत धायो । कर्ण निकेत तबै चलि आयो ॥ ९ ॥ (सर्पउवाच । दोहा) निज अरि मारो पार्थ है, कर्ण सो बुद्धि निधान ॥ हनों शत्रु तुम मोह जो, करिकै छोड़ो बान ॥ १० ॥ (कर्णउवाच) हौं समरथ पार्थहि हतौं, चाहौं नहीं सहाय ॥ कह्यो न मान्यो सर्पको, वह करि थक्यो उपाय ॥११॥ (चौपाई) कटक मुकट पारथ रिस भर्‌यो । खुरपबाण धनु योजित कर्‌यो ॥ बल करि रविनन्दन शिर हयो । टोपा काटि पार सो भयो ॥ १२ ॥ दोऊ रोपवंत बरवीर । करत युद्ध नहिं श्रमित शरीर ॥ तजत नरण शिर छूटे केश । दोऊ वीर असुरके वेश ॥ १३ ॥ (गीतिकाछंद) शल्यसों नृप कर्ण भाष्यो

कौन रथ वरवाहई। सुनत सारथि रोष कीनो भूमि अब वैरिनि भई ॥ गिले रथके चक्र धरती थकित ह्वै चलिना सक्यो। वार बार अशेप उद्यम किये सो करिकै थक्यो ॥ १४ ॥ शाप पूरव जन्म दीनो विप्र बहु दुख पायकै। गिले रथके चक्र धरणी रह्यो संभ्रम छायकै ॥ कवच कुंडल इन्द्र लीने वाण कुंती लैगई । भई वैरिन मेदिनी चित कर्णके चिंता भई ॥ १५ ॥ (कर्णउवाच। दोहा) क्षत्री धर्म विचारि उर, क्षण इक समर निवारि ॥ सुनो पार्थ जौलौं रथै, भुवते लेहुँ निकारि॥१६ ॥ (श्रीकृष्णउवाच। सवैया) पौनको पूत वहाय दियो जल भोजन मांझ हलाहल डारचो। गौवैं हरी जब भूप किराटकि जाय तहां बहु सांकरो पारचो॥करी न कछू मर्यादकी बात जबै सुत धर्मको देश निकारचो ॥ द्रौपदीको खल चीर गह्यो तब पाप कियो तुम धर्म विचारचो ॥ १७ ॥ (दोहा) करै निहोरो क्यों जियो, ताते कीजै युद्ध ॥ ज्यों पावकमें घृत जलै, भयो कर्ण अति क्रुद्ध ॥ १८॥ कोपि शरासन कर लयो, चले कर्णके बान ॥ हनत पार्थ मोह्यो महा, भूतल परचो निदान ॥१९॥ बल करि काढ्यो कन्धदै, भुवते रथ सविलास ॥ बहुरि वृष्टि शरकी करी, छायो धर आकास ॥ २० ॥ (दोधकछंद) चेततही उठि पारथ धायो। कर्ण लख्यो नियरो जब आयो ॥ सारथि सों विनवै तब ऐसे। हांकु रथै रण जीतहुँ जैसे ॥ २१ ॥ फेरि धरा रथचक्र गिल्योहै ॥ सो वर ठेलतहू न ठिल्योहै ॥ वार हिं वार महा झकझोरचो। भूमि हली अहिको शिर ठोरचो॥ २२॥ पारथ क्रोध कियो बहुधाही। वाण हन्यो रिपुके उर माही॥जूझिपरचो रविनन्दन ऐसे।वज्र हन्यो सुरने गिरि जैसे ॥ २३ ॥ (चामरछंद) हाय हाय यत्र तत्र ह्वैरही जहां तहां। देवलोक भूमिलोक कर्णसों रथी कहां ॥ सैन ता विना भयो अशेप भांति दीनसो । अन्ध पुत्र भो महा विशेष दुःख लीनसो ॥ २४ ॥ (दोहा) भागि चले सब शूर

गण, कर्ण परयो रण देखि ॥ दुर्योधन तव आपनी, मृत्यु गिनी सुविशेखि ॥२५ ॥ अहंकार युत जब करयो, दलपति शल्य जुझार ॥ पाय रजायसु वेगिही, कोपि कस्यो किरवार ॥२६॥ लोपि गयो दिनकर जहां, कर्ण परयो रण देखि॥ रुदन करत गन्धर्व सब, सुर शोके सविशेखि ॥ २७ ॥ नैन हीन अम्बुज वदन, योवन त्रिया शृँगार ॥ त्योंहीं कौरव दीन दल, को काहि थम्भनहार ॥ २८ ॥

(सवैया) चन्द्र विना रजनी रजनीपति रैनि विना द्युति मन्द अनैसो । नीर विना सर नैन विना नर धाम धनी विन देखिय जैसो ॥ नीर विना मुक्ताहल सो अरु दीप बिना रजनी तम जैसो । त्योंहीं शृँगार विना युवती नृप कर्ण विना दल लागत तैसो ॥२९॥ ॥ (दोहा) परयो देखि नृप कर्णको, विप्र रूप धरि आय ॥ दुर्बल अति ह्वैके कह्यो, नृपति कर्णसों जाय ॥ ३० ॥ (चौपाई) दारिद्रहि बहु भांति सतायो । याचन तोहिं यहां हौं आयो ॥ कर्णसुन्यो जगमें बड़ भागी । ताको चित्त भयो अनुरागी ॥ ३१ ॥ (कर्णउवाच) पाहन लैकर विप्र सयाने । मो रद भंजन शंक न आने ॥ वेगि करहु यह बार न लावहु । लै सोइ कंचनधाम सिधावहु ॥ ३२ ॥ (श्रीकृष्णउवाच । दोहा) साधु साधु तू कर्ण नृप, पटतर दीजे काहि॥ तोसों तुही न दूसरो, जगमें कोउ नआहि ॥ ३३ ॥ (कर्णउवाच) विप्रन हित कंचन दियो, सुनियो विप्र समान ॥ निज त्रिय रति योवेन गयो, स्वामि काजगे प्रान ॥ ३४ ॥ आदि अन्त जाको नहीं, सब जग व्यापक आय ॥ भई सकल मन कामना, तिनको दरश- न पाय ॥ ३५ ॥ (श्लोक) कृपायुक्तस्तदाकृष्णो यत्रकर्णोरणेहतः । जीवकर्णसहस्रेण योदत्तेकृष्णवोपुनः ॥ ३६ ॥ वृद्ध ब्राह्मणरूपेण कृष्णस्तुस्वयमागतः ॥ विप्रोहंकर्णराजेंद्र दारिद्रंबहुव्यापते॥३७॥ पाषाणंगृहणेविप्र दंतभंजयते मम । सवाभार सुवर्णश्च यथात्वंरण- उच्यते ॥ ३८ ॥ (श्रीकृष्णउवाच) साधुसाधुमहाबाहो सर्वशास्त्र-

विशारद । दातारसमकर्णस्य पृथिव्यांनप्रजायते ॥ ३९ ॥ ( कर्ण-उवाच ) विप्रार्थेनधनंक्षीणं स्वदारा गतयौवनं । स्वामिकार्यगताप्राणा अंतकालेजनार्दनम् ॥४०॥ ( दोहा ) कर्ण परयो दिन तीसरे, जब वीते द्वै याम॥समरभूमि उद्यत भयो, शल्य कियो संग्राम ॥४१॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकाविछत्रसिंह
विरचितायां कर्णवीरसंमोहनोनाम
ऊनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

इति कर्णपर्वसमाप्तम् ।

---

## अथ शल्यपर्व कथनम् ।

(दोहा) शल्य शूर रथ आरुह्यो, कर लीने धनुवान ॥ जीत्यो चाहत पांडुको, साजत समर विधान ॥ १ ॥ द्रोण कर्ण भीषम हते, रणजित वार अनन्त ॥ जीत्यो चाहत शल्य रण, आशा वहु बलवन्त ॥ २ ॥ ( दोधकछन्द ) अर्जुनको रथ बाणन छायो । सेन घनो वलकै विचलायो ॥ धूरि उड़ी उठि अम्बर लोप्यो । शल्य तहां जमिकै पग रोप्यो ॥ ३ ॥ द्वै दलमें नाहिं सूझत कोऊ । सन्मुख युद्ध जुरे भट दोऊ ॥ शूर घनो करि पौरुप जूझत । काहूकी कोउ बात न बूझत ॥ ४ ॥ ( दोहा ) जरासन्धको पुत्र तव, दुरासन्ध तेहि नाम ॥ सहित आपने सैनसों, जुझिपरचो संग्राम ॥ ५ ॥ दुरासन्ध जूझो लख्यो, नकुल पजरचो वीर ॥ हन्यो सुशर्मा क्रोध करि, जूझि परचो रणधीर६॥ (चौपाई) नृपति युधिष्ठिर कोप्यो आप । जाको जगमें वड़ो प्रताप॥ असुर हिडम्ब आपकर हयो । बिना जीव परिभूतल गयो ॥ ७ ॥ एक घरी दिन लगि रण करचो । भूप युधिष्ठिर सों संहरचो ॥ दौरचो पवनपूत बलिखण्ड । कीनो तिन संग्राम अखण्ड ॥ ८ ॥

(छप्पय) शूर हने रणधीर हने रथवन्त वीर वर । कहूं हने गजराज गिरे काटि कुम्भ चरण धर ॥ गिरे सारथी अश्व गिरे कहुँ छत्र चमरधर । कहूं गिरे ध्वजदण्ड कहूं थरहर पायक नर ॥ बीस कुवँर कौरव तहाँ भीमसेन वर संहरे । काटिदियो वन कदलि ज्यों थल थल भट दीसत परे ॥ ९ ॥ (दोहा) सब कौरव निन्यानवे, हने भीम बलवण्ड ॥ दुर्योधन एकै बच्यो, भो संग्राम अखण्ड ॥ १० ॥ सहदेव अरु शल्यसों, संग्रम भयो अपार ॥ को वरणै विधि परस्पर, करत अमित संहार ॥ ११ ॥ (चौपाई) सहदेव कर असि वर लयो । शल्य सारथी तब तिन हयो ॥ तोन्यो रथ अरु हने तुरंग । कीनो घाव शल्यके अंग ॥ १२ ॥ मान्यो शीश टूटि धर पन्यो । दुर्योधन थर थर थरहन्यो ॥ भजे शेष भट आयुध डारि । किते चले भट हियरा हारि ॥ १३ ॥ (दोहा) कुरुनन्दन तेहि थल रह्यो, निपट अकेलो आप ॥ हती चमू चतुरंग सब, जाको अमित प्रताप ॥ १४ ॥ (छप्पय) छप्पन योजन छत्र छाहँ जाकी धर मंडहि । दुर्गम दुसह दुरन्त अदंडनि बल करि दंडहि ॥ बंधु कुटुम्ब अशेष सकल किंकर चहुँ ओरहि । सब जग अमित प्रताप ताप क्षत्रिन क्षिति छोरहि ॥ बहु छत्र चवँर गज वाजि रथ दल वर दीरघ पेखिये । सोइ भूमि भूप कुरुराज रण निपट अकेलो देखिये ॥ १५ ॥ (सोरठा) होनी होय सो होय, नहीं मिटावै ईश सो ॥ ताते जग सब कोय, संशय चित्त न आनिये ॥ १६ ॥ जो राचो करतार, सोई सोई ह्वैरहै ॥ यहै बात सब सार, मूरुख जो संशय करै ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां सुशर्माशल्यवधोनाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

इति श्रीशल्यपर्वसमाप्तम् ।

# अथ गदापर्व्व कथनम् ।



(चौपाई) राजा निपट अकेलो भयो । मंत्र जपन जल भीतर गयो ॥ जपन चारि घटिका जो पावै । तौ अपनी सब सेन जियावै॥ ॥ १ ॥ यह सुधि पाये पांडव धाये । जलमें भूप हुतो जहँ आये ॥ कह्यौ कहां दुरि कुरुपति गयो । सो नहिं हमें सामुहे भयो ॥ २ ॥ (भीमसेनउवाच । दोधकछन्द) तौलगि केतिक भूपति आये । नाम कछू नहिं जात गनाये ॥ ता थल जूझिपरे सब तेई । क्षत्री जे बलवंतहु तेई ॥ ३ ॥ तौ उर है इतनो डर पैठ्यो । तू दुरिकै जल भीतर बैठ्यो ॥ क्षत्रिय धर्म विचारि हियेमें । शोच कछू नहिं आप कियेमें ॥ ४ ॥ जो भजि वीर पतालहि जाई । तौ न बचै अब मोपहँ भाई ॥ भूमि पताल सँहारौं तोहीं । शपथ महीपति पांडुकि मोहीं ॥ ५ ॥ (दोहा) हने वीर निन्यानवे, तू कत उबरे भागि ॥ जो लगि तोहिं हनों नहीं, नवै न तामस आगि ॥६॥ (चौपाई) पांडुसुतनमें तोहिं जो भावै । सोई तोसों रणको आवै ॥जोई आयुध तू कर धरिहै । ताहीसों सो तोसो लरिहै॥७॥अब जो क्षत्रियधर्म नगहिहै । सब जगमें उपहासहिसहिहै ॥सुनत बैन भूपतिपर जऱ्यो । ज्यों घृत मांझ हुताशन पऱ्यो ॥८॥ रोषवंत केहरि सों कढ्यो । रोष देखि भीमहिं उर बढ्यो । वज्रपात सम मुष्टिक माऱ्यो ॥ कौतुक देखत बंधव चाऱ्यो ॥ ९ ॥ (नगस्वरूपिणीछंद) सरोषह्वै दुहूं जुरें । नभांति भांति ते मुरें॥अशेष युद्ध साजहीं।न रोष छांड़ि पाजहीं ॥१०॥ (दोहा) गिऱ्यो बार दश भीम धुकि, मोहि मोहि बलवंड ॥ सप्तबार भूपति गिऱ्यो, करि संग्राम अखंड ॥११॥ कोऊ वीर करै नहीं, भूपर गिरे प्रहार ॥ भिरत अमित गति को कहै, ता रणको विस्तार ॥ १२ ॥ (दुर्योधनउवाच । सुन्दरीछंद) ढीठ भयो तू कत रण ठानत । मोहिं न तू अपने उर आनत ॥ बालक मारि किती बल बोलत।

क यह विक्रम फूल्यो डोलत॥ १३॥ जीवत क्यों उबरै अब मोपै। युद्ध करो बनिआवै तोपै ॥ बंधव तेरेइ तोहिं सराहत। भांतिन भांतिन तौ सुख चाहत ॥ १४ ॥ डारि गदा भगिजाय न क्यों अब। जीवत छांड़ौं नतोहिं इहां जब॥ द्वैमें हारि न कोऊ मानत। भांति अनेकन युद्धहि ठानत ॥ १५ ॥ (दोहा) हिय हारयो तब पवनसुत, बिलखे बन्धव चारि ॥ फेरि सम्हारयो देह तिन, जब झुकि कह्यो मुरारि ॥ १६ ॥ (भीमसेनउवाच) सकलदेव नरदेवके, जो पीछे दुरिजाय॥ तऊ नछांड़ों तोहिं हौं, कोटिक करौ उपाय॥ १७॥ सैन दई श्रीकृष्ण तब, भीमहिं चितवत जानि ॥ तब रिसायकै उठि चल्यो, ठोंकि जंघसों पानि॥ १८॥(चामरछंद) सन जानि भीमसेन जंघमें गदा हनी।मोहि मोहि भूमिमें गिरयो सुभूमिको धनी॥ वेगिदै महीप धर्मपुत्र पास आइयो। देखि देखि सो थली अशेष दुःख पाइयो ॥ १९ ॥ (राजोवाच। छप्पय) जा भुज भीषम कर्ण द्रोण भगदत्त सुशर्मा । दुःशासन दै आदि बंधु सब अद्भुत कर्मा॥ देश देशके भूप द्योस निशि शंका मानत। दुर्योधन पग परसि आपनो जीवन जानत॥ निशि द्योस छत्र छाया चलैं तेज अमित गति पेखिये। रण भूमि भूपति गिरयो सो कोऊ साथ न देखिये ॥ २० ॥ (दोहा) श्वेत छत्र कविछत्र कहि तन्यो युधिष्ठिर शीश ॥ बहुत बिसूरे कृष्णको, सुख चाह्यो अवनीश॥ २१॥ (राजोवाच। चौपाई) हुतो सकल दल सो कित गयो। भूपति विनवै बहुदुख छयो॥ रथी अतिरथी शूर अपार। कित गयो साहन सब परिवार॥ २२॥ जिन तृण करि मेरो दल लेख्यो। क्षितिपर कोऊ शत्रु न देख्यो॥ जाके डर थर थर थरहरयो। सोई भूप अकेलो परयो॥ २३॥ जाको क्षिति सब जोरैं हाथ। सो भुज परयो न कोऊ साथ॥यहि विधि धर्मपुत्र दुख छाये। भीम आदि सब बंधव आये ॥ २४॥ (भीमसेनउवाच। दोहा)

कत दुख कीजे भूप अब, क्षत्री धर्म विचारि ॥ पाय पाय तुव आयसु, डारचो कटक सँहारि ॥ २५ ॥ हम चूके सेवक नहीं, आयसु मान्यो शीश ॥ गुण अवगुण जो बनि गयो, तव आज्ञा अवनीश ॥ २६ ॥ चित्त करचो फिर चलनको, भूप युधिष्ठिर राय ॥ पहुँचे तहँ बलभद्र तब, भूपतिके ढिग जाय ॥ २७ ॥ (गीतिका छंद) देखि दुर्योधन परचो भुव जंघ घाउ विलोकिकै । जानि युद्ध अधर्मको बहु चित्त माँझ सशोकिकै ॥ है गदाके युद्ध को यह धर्म चित्त विचारितौ । अर्द्ध तन कटिकै परचो सो स्वप्नहू नहिं मारितौ ॥ २८ ॥ व्योम भूमि पताल भीमहिं हौं नहीं अब छंडिहौं । आजुही बल आपने हठि सर्व गर्वनिखंडिहौं ॥ बाड़वानलसों उठ्यो करि क्रोध बहु दुख पायकै । अति रोषवंत विलोकि श्रीहरि यों कह्यो ढिग आयकै ॥ २९ ॥ (श्रीकृष्णउवाच) द्रौपदी जब सभा आनी कर्म कर्कश नृप कियो । जंघ तोन्यो मारिकै यह नेम भीम तहां लियो ॥ ता हेतु दुश्शासन संहाऱ्यो आपनो प्रण पारियो । हति शत्रु बलही जीवके इन सर्व शोक निवारियो ॥ ॥ ३० ॥ (दोहा) समझाये बहु भांति करि, सुनि बलभद्र सो बात ॥ कुरुनन्दन अपराधको, सुधि करि करि पछितात ॥३१॥ करी विदा बलभद्रकी, उरको क्रोध निवारि ॥ बंधव पांचौ संगलै, निजथलचले मुरारि॥३२॥एक क्षोहिणी दल बच्यो, धर्मसुवनके साथ रथ चढ़ि चारों बंधु युत, तबै चले नरनाथ ॥ ३३ ॥ रैनि भये धृष्टद्युमन, निशि सूत्यो सुखबीर ॥ द्रुपदसुताके पांच सुत, सूते श्रमित शरीर ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायांगदायुद्धदुर्योधनवधवर्णनो नामएकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

( दोहा ) सूत्यो जान्यो कटक दल, नन्दिघोष रथ पाय ॥ दूर गये लै कृष्ण तव, पांडु पुत्र सुख पाय ॥ १ ॥ उतरे रथते अनुज युत, तवहीं भुव भरतार ॥ घसत कृष्ण रथते तवै, उठी अगिनि की धार ॥ २ ॥ नंदिघोष जारि भस्म भो, कह्यो न कौतुक जाय ॥ यह लखिकै पांचौ अनुज, संभ्रम रहे भुलाय ॥ ३ ॥ ( श्रीकृष्ण-उवाच ) भीषम गुरु अरु कर्णके, शरन दयो रथ जारि ॥ याको अव परभाव सुनि, प्रगट्यो भेद मुरारि ॥ ४ ॥ ( चौ० ) जौ लगि हौं रथ ऊपर रह्यो । तव लगि सो वाणन नहिं दह्यो ॥ जब हौं धसि भुव ऊपर आयो । नंदिघोष तिन शरन जरायो ॥५॥ हरि चरित्र तिन ऐसो देख्यो । वरण्यो जाय न अद्भुत लेख्यो ॥ दुर्योधन जहँ रणमें परयो । द्रोणपुत्र तिहि थल पगु धरयो ॥ ६ ॥ ( अश्वत्थामाउवाच । दोधकछंद ) आयसु दे कुरुनंदन मोको । दुष्ट हनौं वहु दे सुख तोको ॥ पैज करी यहि भांति भनैसो । पार्थ युधिष्ठिर कौन गनैसो ॥७॥ सेन रही सोइ आज सँहारों । वंधव पांच तुरंतहि मारों । जीवत मोहिं परे सुख सोवैं । आजु सवै यमको मुख जोवैं ॥ ८ ॥ ( चामरछंद ) पंच वंधु मारि आजु पंच शीश लायहौं । तवै महीप तोहिं सुःख आयकै देखायहौं ॥ वेगिकै कृपालुह्वै नरेश भागि जो सकै । गाजिकै चल्यो वली सरोष चित्त माँझकै ॥ ९ ॥ ( कुंडलिया ) वैर पिताको आजुही, लेहौं दल संहारि । और हनौं वर पांडुसुत, धृष्टद्युम्नको मारि ॥ धृष्टद्युम्नको मारि सकल मनभायो करिहौं ॥ वृद्ध तरुण शिशु वाल चित्तमें एक न धरिहौं ॥ धरिहौं शंक न अंक हतौं उर संशय जाको ॥ सोई करिहौं काज मिलाऊं वैर पिताको ॥१०॥ ( दोहा ) चलि सो पहुँच्यो दल निकट, द्रोण पुत्र युत क्रुद्ध ॥ पुरुष एक ठाढ़ो भयो, तासों कीनो युद्ध ॥ ११ ॥ द्रोणपुत्र कीन्हों तहां, दो घटिका संग्राम ॥ वहु संतुष्ट कियो सुनर, तव कीन्होविश्राम ॥ १२ ॥ (चौपाई) तव तिहि पुरुष दया वहु करी । माँगु माँगु यहि विधि अनुसरी ॥ जोई वर तेरे म-

न भावै। माँगतही सो मोपै पावै ॥ १३ ॥ ( अश्वत्थामाउवाच )
वीर अवीर सबै अरि मारौं। पांडुसुतन युत भट संहारौं ॥ य-
है दया करिकै वर दीजै। परम अनुग्रह मोपै कीजै ॥ १४ ॥ एव-
मस्तु करि दीनो जान। गयो कटकमें गहे कृपान ॥ सोते कुँवर
शिखंडी देख्यो। भारत भयते निर्भय लेख्यो ॥ १५ ॥
( दोहा ) प्रथम प्रहाऱ्यो सो कुँवर, धृष्टद्युम्नको जाय ॥ वाम चर-
ण छाती हन्यो, सोवत वीर जगाय ॥ १६ ॥ उठन न पायो वीर
सो, माऱ्यो दुःख दिखाय ॥ द्रुपदसुताके पंच सुत, तेऊ मारे जाय॥
॥ १७ ॥ अर्द्ध रैनिलौं सब कटक, ठाम ठाम संहारि ॥ एक क्षो-
हिणी दल हन्यो, चल्यो सकल भुव डारि ॥ १८ ॥ पंचालीके सुत-
नके, शीश काटि लै हाथ ॥ तब पहुँच्यो तिहि ठाम जहँ, दुर्योधन
नरनाथ ॥ १९ ॥ ( अश्वत्थामाउवाच ) धर्मपुत्रको आदिदै, शिर
लै आयों काटि ॥ दुर्योधन उर सुख भयो, ताके करते डाटि ॥२०॥
( त्रोटकछन्द ) सुख दुःख समान भयो जबहीं। नरनायक प्राण तजे
तबहीं ॥ चलि भूप युधिष्ठिर गेह गयो। लखिकै दलते भयभीत
भयो ॥२१॥ ( राजोवाच ) सुत द्रोण कहा यह कर्म कियो।
शिशु मारि कहा अपराध लियो ॥ बहु दुःख धनंजय चित्त धऱ्यो।
अपने उरमें बहु क्रोध कऱ्यो ॥ २२ ॥ भगिकै अब सो अरि जाय
कहां। अबहीं हतिहौं पुनि वेगि तहां ॥ रुकिकै तबहीं रथ और
सज्यो। तिहि रोप नहीं पल एक तज्यो ॥ २३ ॥ सुनिकै गुरुपुत्र
भज्यो तबहीं। बहु पारथ रोष कऱ्यो जबहीं ॥ तिन जाय लयो
नहिं भाजि सक्यो। अति व्याकुलह्वै थहरायथक्यो ॥ २४ ॥
( दोहा ) अर्जुन योजन एकपै, गुरुसुत लीनो जाय ॥ जान्यो नहीं
उबार तिन, फिऱ्यो शूर समुहाय ॥ २५ ॥ उपज्यो अद्भुत युद्ध
तहँ, को कवि सकै बखानि ॥ शरही शर नभ छायगो, थके शूर
नहिं पानि ॥२६॥ काटत दोऊ परस्पर, बाण समूह अनेक ॥ एक
व्योममें एकधर, करन कटत है एक ॥ २७ ॥ ( चौपाई ) हारि न

मानत दोऊ वीर। दोऊ समर बली रणधीर॥ एकहि गुरुपै विद्या पाय। व्योम थली बाणन करिछाय ॥ २८॥ दोऊ रणको तव अलि बढ़े। एक संग दोउ विद्या पढ़े॥ब्रह्म अस्त्र कर पारथ लीन्हो। वही द्रोण सुत योजित कीन्हो॥ २९॥ उपजी आगिनि दुहुँनते भारी। त्रिभुवन कंपे नर अरु नारी॥ हाहा शब्द सकलपुर ठयो। महाताप सुर असुरन भयो ॥ ३० ॥ (सोरठ) आकंप्यो सुरराज, देखत बहु आतंक उर ॥ प्रलय होतहै आज, इहि विधि जग जन उच्चरत ॥ ३१॥ (दोहा) ब्रह्मबाण क्यों पार्थको, रणमें निष्फल जाय॥ शीश फोरिकै मणि लई, तब दीनो मुकराय ॥ ३२ ॥ गर्भ उत्तराको हन्यो, गुरुसुत कै संधान ॥ भयो मृतक सुत तिहि समै, सब कुल दुःख निदान॥ ३३॥ कृष्ण अनुग्रह सुत जियो, भयो परीक्षित नाम॥ चले पार्थ गृहको तबै रहित भयो संग्राम॥ ३४॥ (चौपाई) चले हस्तिनापुर सब आये। नृप धृतराष्ट्र तबै समुझाये॥ भांति भांति विनयो कर जोरि। मिटै न होनी किये करोरि॥ ३५॥ भये शुद्ध पानी तिन दियो। काज कर्म कृति सब विधि कियो॥ रुदन करैं कौरव की नारी। दुख दावागिनितें पर जारी॥ ३६॥ तव भीषम सब त्रिय समुझाई। होय रचै जो त्रिभुवनराई॥ पांडु पुत्र सब पास बुलाये। दिन प्रति राजनीति समुझाये ॥ ३७॥ (भीष्म-उवाच। सवैया) क्रोध वृथा न करो कबहूं न मतो कछु मूढ़नसों करियेजू। मित्रनको अपमान रचो न दया उर शत्रुनकी धरियेजू॥ छत्र सदा परस्वारथ कीजिय लोक अलोकनते डरियेजू। होउ हठी न छली नरनाथ न वित्त कहूं द्विजको हरियेजू॥ ३८॥ (छप्पय) दया राखिये अंक भूलि व्रत ही मन करिये। चुगुल चोरकी सौंह चित्तमें एक न धरिये॥ सदा रक्षिये ताहि शरण शरणागत आवै। भूलिहु चित्त प्रवीण नहीं कातरता लावै॥ त्रिया काज द्विज गायके निज काज-

न सब परिहरत । कविछत्र चलत यहि रीति जो सो नृपता महिमंडल करत ॥ ३९ ॥ (दोहा) बिरद बड़ाई पायके, गर्व्व नकीजे चित्त ॥ ना बिसरहु हरिको हिये, बिसरायो जनि मित्त ॥ ४० ॥ राजनीति जब सब कही, भांति भांति समुझाय ॥ छत्र कृपा करि भक्त वश, श्रीहरि पहुँचे आय ॥ ४१ ॥ (भीष्मउवाच) सकल भई मन कामना, कलिमल गये नशाइ ॥ अंत अवस्थामें सुखद, श्री हरि दरशन पाइ ॥ ४२ ॥ (सवैया) लाज सदा बिरदावलिकी कवि छत्र सदा जनको सुखकारी । धावनि चक्र गहे करकी वह बानि कहूं बिसरै न बिसारी । केहरि ज्यों उतरचो गिरिते अवलोकतही जिमि कुंजर भारी । वेदकी कानि न साधत ज्यों व्रत राखि कृपानिधि पैज हमारी ॥ ४३ ॥ (दोहा) करी वन्दना कृष्णकी, भीषम बुद्धिनिधान ॥ प्राण तजे भीषम तबै, उत्तर आये भान ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां भीष्मपरमधामगमनो राजायुधिष्ठिरविजयदुर्योधनवधवर्णनो नामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

---

(दोहा) तबै राज अभिषेक करि, भूप युधिष्ठिर आप ॥ बैठ्यो प्रफुलित पाट पर, बाढ्यो अमित प्रताप ॥ १ ॥ करत निकंटक राज घर, नाशे शत्रु समूल ॥ छत्र कहै सज्जननके, बाढी तन मन फूल ॥ २ ॥ (दंडकछंद) कर्महैं कुकर्म जेते मिटेहैं अधर्म सब भूतल सकल धर्म सरसाइयतुहै । ठौर ठौर दान सनमान घने विप्रनके आनँदनिधान भौन भौन गाइयतुहै ॥ यत्र तत्र छत्र कवि कोउ नाहीं शत्रु रह्यो अस्त्र छांड़ि छांड़ि सो नढूंढ़े पाइयतुहै । भूपति युधिष्ठिरके राज्यमें सुचैन जग मेटिकै असत्य सत्य धरा छाइयतुहै ॥ ३ ॥ (दोहा) चारिवर्णते स्वभ्रहूं, परत्रिय रत नाहिं कोय ॥ परद्रोही नर कृतघ्नी, अयश न काहू होय ॥ ४ ॥ (भुजंग-

प्रयातछंद ) दरिद्रै दरिद्री अधमैं अधर्मी। महाशोक शोकै कुकर्मैं कुकर्मी॥ लसै इन्द्रकीसी पुरी राजधानी। सबै सद्म नीके महासुःख दानी॥ ५॥ सुहाये अटा देखिये धाम धामा। पुरस्त्री बिराजैं मनो काम कामा॥ कहांलौं कहौं ता पुरीकी निकाई। चहूं ओर दीखै महा शोभ छाई॥ ६॥ सबै बाग फूले फले चित्त मोहैं। मनों ते लता कलपकी छत्र सोहैं॥ तहां धामहैं नारि संयुक्त ऐसे। मनो देव देवेशके सद्म जैसे॥ ७॥ चहूं कालके वृक्ष फूले फलेहैं। तहां कोकिला आदि पक्षी भलेहैं॥ कहां लौं बखानो महाशोभ नीकी। तहां शोक शंका नशै सर्व जीकी॥८॥ ( दोहा ) धर्म सुवन भूपति बने, आगे बंधव चारि। सेवत मन वच कर्मसों, सकत न आयसु टारि॥ ९॥ ( गीतिकाछंद ) गोत चाउ विचारिकै ऋषि राज तहँ बोले घनैं। व्यासऋषि दुर्वास युत ऋषिराज योतिष को गनै॥ यज्ञ तहँ हयमेध कीनो सर्व विधिन बनायकै। पार्थले चतुरंग सेना भूमि जीती जायकै॥ १०॥ ( दोहा ) आयो दशौं दिशि जीतिकै, आन्यो बाजी धाम॥ पूरण कीनो यज्ञ तहँ, सब पूजे मन काम॥११॥ ( चौपाई ) यज्ञ सिरायो सुरसरि तीर। धर्मधुरंधर गुण गंभीर॥ समदे ऋषि जे आये भूप। भूपति पहिरे वसन अनूप॥ १२॥ जिती हुती कौरवकी नारी। ग्रसीं सकल दुःखनिसों भारी॥ ते सब व्यास महा ऋषिराई। लीनी अपने पास बुलाई॥ १३॥ ( दोहा ) मायावी तिनके पुरुष, दीने ऋषि दरशाय॥ पति लहि सब आनन्दयुत, पगन परीं सब जाय॥ १४॥ धसीं सुरसरिके सलिल, भईं सुअंतध्यान॥ ह्वैहै सोई जो कछू, रचिराखी भगवान॥ १५॥ रहे तहां धृतराष्ट्र अरु, गंधारी सँग नारि॥ बहुत बिसूरैं रैनि दिन, सुतको शोच विचारि॥ १६॥ एक छत्र महि भोगई, भूप युधिष्ठिर आप॥ रामचन्द्र ज्यों अवधमें, दिन दिन बढ़्यो प्रताप॥ १७॥ निशि दिन सेवा मातकी, करैं न शासन भंग॥ आज्ञाकारी सर्वथा, चारो बन्धव संग॥ १८॥ वृद्धि भई शशिवं-

शकी, अरु शाहन भंडार ॥ बाढ़यो छत्र विशेषिकै, यदुकल वहु परिवार ॥ १९ ॥ (चौपाई) करि भारत उबरे दश जने। अव कवि तिनके नामनि भने ॥ पांचौ पांडुपुत्र बलवान। छठे शोभिजै श्रीभगवान ॥ २० ॥ कर्णपुत्र शोभित वृषकेत। मेघवर्ण वहु विधि सुख देत ॥ कृतवर्मा यादव बलिवंड। द्रोणपुत्र संग्राम अखंड ॥ २१ ॥ (दोहा) उबरे भारतमें इते, और रह्यो नहिं कोय ॥ जोई चतुरानन रची, सोई सोई होय ॥ २२ ॥ (सोरठा) कर्णपुत्र वृषकेतु, सुत सरिवर भूपति गनो ॥ करि कुन्ती वहु हेतु, जानति ताकहँ प्राण सम ॥ २३ ॥ (छप्पय) नित्य नित्य ऋषिराज भूरि भोजन तहँ पावहिं। पटदरशन रनिवास सकल मंगल उपजावहिं॥ सप्तद्वीप नवखण्ड सकल बंदी गुण गावहिं। हरषि हरषि मणि मुक्त द्विरद बाजी गण पावहिं ॥ कवि छत्र सकल भूपति जपति, दीन न नर कोउ देखिये। भुव भूप युधिष्ठिर राज्यमें, सो थल थल आनँद लेखिये ॥ २४ ॥ (दोहा) द्वादश वर्षं वन रहे, त्रयोदशे अज्ञात ॥ मारि कीचकन यश लियो, हर्षवन्त है गात ॥ २५ ॥ सब कौरव परिवारयुत, मारे जग यश जीति ॥ रहे हस्तिनापुर नृपति, चारों अनुज समीति ॥ २६ ॥ (छप्पय) कृलद्रोण गांगेय सकल कौरव तरु साजै। वारि जयद्रथ भयउ लहरि रविनंदन राजै ॥ कच्छ मच्छ जलजंतु शल्य तहँ भयउ सुशर्मा। भूरिश्रवा भगदत्त भयो तहँ ग्राह सुवर्मा ॥ करि नाव धनंजयधरिको, त्रिभुवनपति केवट भयउ। यश तिलक युधिष्ठिर शीश करि सो रण सरिता तरिगयउ ॥ २७ ॥ (दोहा) जीत्यो भारत कृष्ण मत, तिनहिं सहाइ पाय ॥ एक छत्र महि भोगई, छत्र युधिष्ठिरराय ॥ २८ ॥ भारत सुनि भाषा कियो, छत्र सुबुद्धिहि पाय ॥ कहत सुनत पातक नशत, अघ दीरघ दुख जाय ॥ २९ ॥ चारि वरणमें जो सुनै, तरुणी पुरुष जो कोय ॥ प्रगटै हरिकी भक्ति उर, मोचन अघको होय ॥ ३० ॥ (सवैया) जो फल तीरथ

वर्त किये अरु जो फल षोड़श दान दियेते । ज्ञान कथानि सुने फल जो कवि छत्र बढ़ै बहु बुद्धि हियेते ॥ जो फल संयम नेम रचे अरु जो फलहै शत यज्ञ कियेते । जो फल रुद्र प्रसन्न भये फल सोइ युधिष्ठिर नाम लियेते ॥ ३१ ॥ सेवत साधक सिद्धिनको अरु ईश प्रसन्न भये वर पाये । तीरथराज प्रयाग गये अरु सागर संगम गंग अन्हाये ॥ योग किये व्रत नेम लिये अरु ऊखल सप्तपुरी निशि धाये । यज्ञ जपे भगवन्त भजे जप जाप सजे जु युधिष्ठिर गाये ॥ ३२ ॥ (दोहा) अष्टादशौ पुराणमें, सुनै जगतमें कोइ ॥ सुनत विजय मुक्तावली, तैसोई फल होइ ॥ ३३ ॥ वर्ण्यो ग्रन्थ सु छत्रकवि, अपनी मति अनुसार ॥ क्षमियो चूक बुधीश सब, कविता समुझनहार ॥३४॥ (छप्पय) मधुकैटभ कुल हन्यो हन्यो हिरण्याक्ष अघासुर।हिरणाकुश जिहि हन्यो हन्यो धेनुक केशीसुर ॥ बंधु सहित दशकंध हन्यो वत्सासुर जिहिवर । नरकासुर तिहि हन्यो हन्यो शिशुपाल अधमधर ॥ सुत धर्म्म कर्म्म रक्षन करन, महिमा नहिं जानीपरै । त्रैलोक्यनाथ कविछत्र कहि पढ़त सुनत रक्षा करै ॥ ३५ ॥ (सवैया) व्याल धरे शशि भाल धरे गजखाल धरे तन भस्म चढाये । ज्वाल धरे शिरमाल कपाल धरे विष कंठ महा सुख पाये ॥ गंग धरे अर्द्धंग शिवाढिग भंग धरे गण भूतन छाये । ऐसे सदाशिव होहिं प्रसन्न सो छत्र विजयमुक्तावलि गाये ॥ ३६ ॥ (दोहा)-फौज सुदरबारी लसै, भूपति सिंह कल्यान ॥ पूरण कीनी छत्रकवि, ग्रंथ सुतिहि स्थान ॥ ३७ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह-
विरचितायांराजायुधिष्ठिरराजवर्णनोनाम
त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

---

(छप्पय) तिलक भाल वनमाल अधिक राजत रसाल छवि । मोर मुकुटकी लटक चटक वर्णत अटकत कवि॥पीताम्बर फहराय मधुर मुसक्यानि कपोलन। रच्यो रुचिर मुख पान तान गावत मृदु बो-

लन ॥ रति कोटि काम अभिराम अति दुःख निकंदन गिरिधरन। आनंद कंद ब्रजचंद प्रभु सुजय जय जय अशरन शरन ॥ १ ॥ मोरमुकुट नगजड़ित हेम कुंडल श्रुति झलकैं। मृगमद तिलक ललाट कमल लोचन दल पलकैं ॥ घूंघरवारी अलक कौस्तुभ कंठ विराजे। पीत वसन वनमाल मधुर मुरली ध्वनि वाजे ॥ करत कोटि आभा वर्ण, सुचन्द्र सूर्य देखत लज्जत । ब्रह्मदेव ये भक्त जन, सु श्यामरूप प्रीतम सजत ॥ २ चतुरानन सम बुद्धि विदित जो होयँ कोटि धर। एक एक धर प्रतिन शीश जो होयँ कोटि वर ॥ शीश शीश प्रति वदन कोटि करतार वनावैं। एक एक मुखमाहिं रसन फिर कोटि लगावैं ॥ रसन रसन प्रति शारदा, कोटि वैठि वाणी वकहिं । महि जन अनाथके नाथकी, महिमा तवहुं न कहि सकहिं ॥ ३ ॥ भूमि परत अवतरत करत वालक विनोद रस । पुनि योवन मदमत्त तत्त्व इन्द्री अनंग वस ॥ विषय हेतु जड़ फिरत वहुरि पहुँच्यो वृद्धप्पन। गयो जन्म गुण गनत अंत कछु भयो न अप्पन ॥ थिर रहत न कोउ नरपति नवल, रहत एक चहुँ युग्ग यस। सोइ अजर अमर नरहर निरखि, जुपियत भक्ति भगवंतरस ॥ ४ ॥ विमल चित्त करि मित्र शत्रु छल बल वश किज्जिय। प्रभु सेवा वश करिय लोभवंताहि धन दिज्जिय ॥ युवती प्रभु वशकरिय साधु आदरवश आनिय । महाराज गुण कथन बन्धु समरस सम मानिय ॥ गुरु नमित शीश रससों रसिक, विद्या बल बुध मन हरिय । मूरख विनोद सुकथा वचन, शुभ स्वभाय जग वश करिय ॥ ५ ॥ सो याचक लघु पद लहै कामातुर जो कलंक पद । लोभी दुयश लहै अशन लालची लहै गद ॥ मूरख अवगुण लहै लहै पढ़ि पढ़ि गुण पंडित। शूर सुरन यश लहै रहै रणमें महि मंडित ॥ निर्वाण सुपद योगी लहै जो न गहै ममता सुमति । सुख भगत जगत जन लहै करै सुनो विधि भक्ति अति ॥ ६ ॥ धिक् मंगन विन गुन

हि गुन सु धिक् सुनत न रीझै ।। रीझक धिक् विन मौज मौज धिक् देत जो खीझै ॥ देवो धिक् विन सांचि सांच धिक् धर्मन भावै। धर्म सु धिक् विन दत्त दया धिक् अरि कहँ आवै ॥ अरि धिक् चित्त न शालई चित धिक् जहँ न उवार मति । मति धिक् केशव ज्ञान विन ज्ञान सु धिक् विन हरि भगति ॥ ७ ॥

(कवित्त) नेहराज रूपराज रसिक रसराज नैन मुख राज गहिकै उठायो गिरिराजहै । छोटेसे करन वर अंगुरीपै धर्‍यो गिरि पूंभी कैसो छत्र हरि लिये गजराजहै। हाथन ललाई तामें पहुँचिन छविछाई ऊंचो कियो हांथ सव छविको समाजहै । नैननकी सैननसों कहै अलवेली अलि चोर चोर खायो दधि काम आयो आजहै ॥ १ ॥ नेकुतो निहारो प्रिय प्राणनको प्यारो अति पङ्कजसे हाथ लिये धार्‍यो गिरि भारो है। प्रेमसों लपेटी कहै नेहभरी वात अलि लेहुरी लकुटि नेक देहुरी सहारोहै ॥ कहैं अलि मिलि सव काम आयो आजु वलि खायो रुचि माखन जो चोरकै हमारोहै। नेहभरी वात सुनि हिय हुलसात मन्द मन्द मुसक्यात मुख रूपको उधारोहै॥२॥सवहीके ग्वाल बाल सवहीके गोधनहैं सवही पै आनिपरी प्राणनकी भीरहै । सवहीपै मेघ वरसतहैं गोलाधार सवहीकी छाती छेद करत समीरहै ॥ किधों मेरोई अनोखो ढोटा भागि आनो एरी वीर वोझले पहारतर कोमल शरीरहै । नेकु याके हाथते गिरीश लेहु क्यों न तुम सवहीं अहीरपै न काहू हिये पीरहै ॥३॥

इति विजयमुक्तावली समाप्ता ॥

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-(बम्बई.)